Postal Regn. No. C.G./RYP DN/65/2022-24
रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका
प्रकाशन तिथि, 1 अक्टूबर 2023

आर.एन.आई.पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

किलोल

वर्ष 7 अंक 10, अक्टूबर 2023

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
खुदरा 80/-
वार्षिक 720/-
आजीवन 10000/-

संपादक

डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक

डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, डॉ. पी सी लाल यादव, बलदाऊ राम साहू, धारा यादव, गंगाधर साहू, नेम सिंह कौशिक

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

कुन्दन लाल साहू

अपनी बात

प्यारे बच्चों एवं शिक्षक साथियों,

अक्टूबर का महीना हमें हमारे देश के महान विभूतियों को स्मरण करता है.इस माह हम महात्मा गांधी जी, लालबहादुर शास्त्री जी,डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी, सरदार वल्लभ भाई पटेल जी का जन्म दिवस मानते हैं वही अक्टूबर माह में ही विश्व अहिंसा,राष्ट्रीय एकता,राष्ट्रीय अखंडता, राष्ट्रीय डाक जैसे महत्वपूर्ण दिवस पड़ता है जो हमें एक अच्छे व्यक्ति,समाज व राष्ट्र के नव निर्माण के लिए प्रेरित करता है.

बच्चों इस माह अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस भी है हमें अपने आस पास के बड़े बुजुर्गों का सम्मान करना चाहिए वे अनुभव के सागर होते हैं उनसे सीखने व समझने का अवसर मिलता है उनके साथ बैठ कर हमें समय व्यतीत करना चाहिए. मुझे पूरा विश्वास है आप सभी ऐसा करते होंगे.

और हां ! मैं तो बात ही बात में भूल ही गई थी, आप अपना प्रेम किलोल के साथ बनाये रखें किलोल में अपनी रचना भेजना व पढ़ना न भूलें.

आपकी अपनी
डॉ. रचना अजमेरा

संस्थापक

डॉ. आलोक शुक्ला

मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा
- विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में.
सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित
तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित,
संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

अनुक्रमणिका

दोस्त 9

नभ में 10

चूहे राम 11

लुभाते पेड़ 12

कूके कोयल 13

चंदा के घर जाएंगे 14

स्क्रीन टाइम v/s स्लीप टाइम 15

सौंदर्य और प्रेम का उत्सव है हरियाली तीज 18

पंचतंत्र की कहानी 20

माटी 22

मंगलमय के हर पल के सभी साक्षी रहे 24

दोस्त 26

दिशाएँ 27

आजादी का अमृत काल विज़न 2047 शुरू 29

अधूरी कहानी पूरी करो 31

चूहों की समझदारी 31

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 32

आस्था तंबोली, जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी 33

कुमारी दिव्यानी साहू, आठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 33

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 34

बाज की उड़ान 34

उन शिक्षकों का दिवस 35

माँ बूढ़ी हो रही है 37

प्यारी बहना 39

फिर से गाऊँ गाना 41

खेल- खेल में खेलें हम 42

चित्र देख कर कहानी लिखो 43

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 43

हाथी और ऊॅंट की दोस्ती 43

आस्था तंबोली, जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी 44

कुमारी प्रिया राजपूत, कक्षा -आठवीं, शाला-शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 45

कहानी तीन दोस्तों की 45

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 46

कठोर परिश्रम सफ़लता की कुंजी है 47

हिंदुस्तान में नवाचार स्टार्टअप में सफ़लता है 50

प्रकृति "माँ" 52

भाई भाई 54

स्वच्छता 55

क्रोध अहंकार दिखावा छोड़ 57

चंदा मामा अब कुछ कहना 59

चंदा मामा 61

चाँद 63

चंद्रयान 3 सफल लैंडिंग 65

चन्द्रयान -3 66

चंद्रयान -3 68

वाणी एक अनमोल रत्न है 70

तीन दोस्त 73

छत्तीसगढ़ी जनऊला 74

क्रांति गीत 76

भारत बुलंदियां छूकर नए आयाम बनता है 78

रक्षाबंधन 79

दीपक 81

मेरी बहना 83

मनाने के साथ समझने होंगे रक्षा बंधन के मायने 84

भाई-बहन का पावन पर्व राखी 86

विक्रम लैण्डर 88
नशा नाश का मूल है 90
विज़यी विश्व तिरंगा प्यारा - अब चांद है हमारा 92
फलों की संख्या बताओ 94
मेरे वो शिक्षक 95
रक्षा का पवित्र बंधन 97
The Cat 99
शिक्षक 100
कुम्हड़ा 101
इसरो की टीम महान 102
सरस्वती शिशु मंदिर 103
मैं संघर्ष करूँगा 104
गुरु की अद्भुत महिमा 106
बस्ता लेकर आओ 108
शिक्षक कभी रिटायर नहीं होता 109
बेटी 112
समुद्र 117
मेरे सपने मेरे अपने 119
संघर्ष के ऊपर मेरा विचार 121
मेरा विद्यालय 122
शिक्षक दिवस 5 सितंबर को यह संकल्प लेना है 123
शिक्षक: एक भविष्य निर्माता 125
सेठ का पेट 126
जैसा बोओगे वैसा काटोगे 127
मेरे विद्यालय 129
पानी का मूल्य हर मानव को समझाना है 131
सबका जीवन है अनमोल 133
एकता में बल 135
चीकू राम और मीकूराम 136

मेहनत का फल 138
जिंदगी में उतार-चढ़ाव एक खेल है 139
अंतरिक्ष - यात्रा 141
बूझो तो जानें 143
नटखट कन्हैया 145
मेरा देश 147
पहेलियाँ 149
पेड़ 151
चंदा मामा 152
जय हरछठ मैया की 153
चन्द्रयान -3 154
विज़न 2047 नए भारत को साकार रूप देना हैं 156
साझा क़दम बढ़ाना है 158
सूरज आया 159
सपने सारे 160
तितली अलबेली 161
सीखो पढ़ना लिखना 162
पेड़ की महिमा 163
झन काटव रुख-राई ल 165
हम जनता सबके मालिक हैं 166
छत्तीसगढ़ के प्रमुख फसल धान 168
प्रभु श्रीकृष्ण 169
जाग,हुआ है नया सबेरा 171
परिश्रम का फल 172
घर भी है एक भगवान 173
भोजन 174
भारतीय संस्कारों को जीवन में अपनाते रहें 176
मेरी हस्तलेखा 178
हाथी 180

मछली 181
आओ मिट्टी और पर्यावरण की रक्षा करें 182
शत शत बार नमन 184
पत्तियाँ 186
बादल फटते क्यूँ हैं 187
तोता 189
पेड़ भी है दानी 190
बाल पहेलियाँ 191
छतीसगढ़ के पोरा पुरखा के परब 193
प्यारे बप्पा 195
पर्यावरण की सुरक्षा 197
अण्डावन का दशहरा 200
मातृभाषा 202
हलषष्ठी 204
डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन 205
काँस फूल 207
भारत देश महान, मेरी आन बान शान 209
अपना पराया 211
मेरी हिंदी मेरा अभिमान है 213
गणपति स्वामी 214
सच्ची जीत 215
आओ हिन्दी अपनाए 217
हिंदी से है हिंदुस्तान 218
गणेशोत्सव पर्व 220
आगे पोरा के तिहार 222
हे विघ्न विनाशक 223
हिंदी का श्रृंगार 224
शहीदों की कुर्बानी 226
बाल पहेलियाँ 228

गणित पर पाँच दोहे 230
तीजा पोरा के तिहार 231
प्यारे गणपति 232
चंद्रयान -3 233
कबूतरों द्वारा शिक्षा 235

दोस्त

रचनाकार- कुमारी सुषमा बग्गा, रायपुर

एक दोस्त ऐसा हो
हाँ एक दोस्त ऐसा भी हो
जो दुनिया की भीड़ में मुझे तन्हा ना छोड़े
जो अंधेरे में मेरी रोशनी बने,
हाँ एक दोस्त ऐसा भी हो
जो छोटी से छोटी बात मुझे बताया करें,
जो हर पल मेरे साथ हो
एक प्यार भरा रिश्ता निभाया करें,
हाँ एक दोस्त ऐसा भी हो
जो बड़े से बड़े दुख का असर तोड़ती हो,
जो जिंदगी की कठिन राह पर मेरे साथ हो
जो साथ चले तो लगे कि मेरी परछाई हो
हाँ एक दोस्त ऐसा भी हो
जो मुझे खोने से डरे
एक दोस्त ऐसा भी हो
हाँ एक दोस्त ऐसा भी हो
मेरे जैसा भी हो

*****

नभ में

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

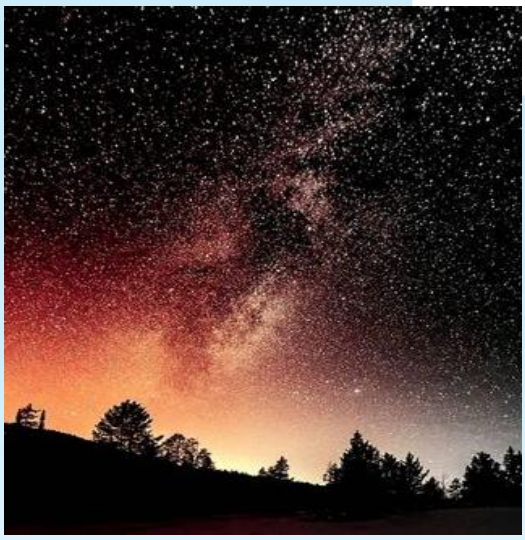

नभ में हंसी नज़ारे देखे,
हमने जगमग तारे देखे.

हरे गुलाबी नीले पीले,
पतंग जीतते हारे देखे.

कभी उड़ाते हैं जब बच्चे,
उड़ते कुछ गुब्बारे देखे.

श्वेत मेघ की टोली घूमे,
कभी बदरवा कारे देखे.

चंदा,सूरज,मेघ,पखेरू,
हमने नभ में सारे देखे.

*****

चूहे राम

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

बड़े मतलबी चूहे राम,
लेटे रहते सुबहोशाम.

अपना काम खुद ना करते,
चुहिया से करवाते काम.

चुहिया रानी थी दमदार,
मोटा चूहा आलस राम.

एक दिवस आई बिलाई,
दोनों भागे दिल को थाम.

मोटा चूहा भाग न सका,
पहुँच गया वो रब के धाम.

*****

लुभाते पेड़

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

हरीतिमा बिखराते पेड़,
सबको बहुत लुभाते पेड़.

पक्षी करें रैन बसेरा,
उनका नीड़ बनाते पेड़.

तूफानों से कभी न डरें,
उनको सदा हराते पेड़.

गरमी में छाँह दें शीतल,
सबको सुख पहुंचाते पेड़.

जीते हैं दूजों के लिए,
सबका काम बनाते पेड़.

*****

कूके कोयल

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

उपवन के ये फूल सुहाने,
देते खुशियों के नजराने.

चंपा बेला और चमेली,
आते अपनी महक लुटाने.

ये गुलाब का फूल निराला,
इसको चाहें सभी दिवाने.

तितली रानी फूल फूल से,
आई लेने रंग सुहाने.

नीम डाल पे कूके कोयल,
सब सुनते हैं उसके गाने.

*****

चंदा के घर जाएंगे

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

नभ में उड़ कर जाएंगे,
घर इक नया बनाएँगे.

इसमें होंगे खिड़की दस,
दरवाजे होंगे नौ बस.

देंगे पानी बादल जी,
खाएंगे पूरी भाजी.

चंदा के घर जाएंगे,
दूध मलाई खाएंगे.

पापा हमें बुलाएंगे,
तब हम वापस आएंगे.

*****

स्क्रीन टाइम v/s स्लीप टाइम

रचनाकार- स्नेहा सिंह, नोएडा

आप दिन में कितने घंटे स्क्रीन के सामने होती हैं? अपने रेग्युलर काम से थोड़ी देर के लिए जैसे ही खाली होती हैं तुरंत हाथ में मोबाइल ले लेती हैं? स्क्रीन टाइम में केवल मोबाइल की ही गिनती नहीं होती है, आप ऑफिस में कितने घंटे कंप्यूटर या लैपटॉप पर काम करती हैं? घर आ कर कितनी देर टीवी देखती हैं? आज ओटीटी प्लेटफार्म पर वेबसीरीज देखने की लोगों को आदत लग गई है। पूरा का पूरा सीजन एक बैठक में खत्म कर देने वालों की भी कमी नहीं है। क्या आप भी ऐसा करती हैं? वीकएंड में तो पूरी की पूरी रात वेबसिरीज देखी जाती हैं। ओवरआल, पूरे दिन में हमारी आँखें किसी न किसी स्क्रीन के सामने रहती हैं। अभी अभी एक सर्वे आया है, जिसमें पाया गया है कि मनुष्य का स्क्रीन टाइम लगातार बढ़ता जा रहा है, जिसकी वजह से स्लीप टाइम घट रहा है। एक समय था, जब बारह बजे सोना बहुत देर माना जाता था। बारह बजे तक जागते रहने पर माँ-बाप या बुजुर्ग कहते थे कि क्या आधी रात तक जागती रहती हो? अब बारह बजे तक जागना जैसे कॉमन हो गया है। अब तो ऐसा लगता है कि जैसे सोने का समय ही रात 12 बजे हो गया है। ऐसा कहने वाले तमाम लोग मिल जाएँगे कि किसी से कहो कि नौ-दस बजे सो जाती हूँ तो उसे हैरानी होती है। लोगों की लाइफस्टाइल ही ऐसी हो गई है कि उन्हें जल्दी नींद ही नहीं आती। बॉडी क्लॉक ही ऐसा सेट हो गया है कि बारह बजने के बाद ही नींद आती है।

क्या कहते हैं डॉक्टर और साइकोलॉजिस्ट

मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए डॉक्टर और साइकोलॉजिस्ट लोगों को स्क्रीन टाइम घटाने की सलाह देते हैं। उनका कहना है कि स्क्रीन टाइम पर नजर रखें। अधिक समय स्क्रीन को देंगे तो समय तो खराब होगा ही, साथ ही साथ हेल्थ इश्यू भी खड़ा होगा। सेंटर फार द स्टडी आफ डेवलपिंग सोसायटी द्वारा अभी देश के 18 राज्यों में 15 से 34 साल के उम्र के 9316 युवाओं और युवतियों पर एक सर्वे किया गया था। इस सर्वे में 45 प्रतिशत युवकों और युवतियों ने कहा था कि उनका स्क्रीन टाइम बढ़ा है।

सोशल मीडिया पर रहते हैं ऐक्टिव

व्हाट्सएप, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, फेसबुक और ट्विटर पर लोग सब से अधिक ऐक्टिव रहते हैं। इसी के साथ इन युवकों-युवतियों ने यह भी कहा था कि उनकी चिंता और भय में वृद्धि हुई है। दूसरे एक सर्वे में कहा गया है कि स्क्रीन टाइम बढ़ने की वजह से नींद कम हुई है। हमेशा कुछ न कुछ देखते रहने की वजह से आँखों को लगातार मेहनत करनी पड़ती है। रात में बिस्तर पर लेटने पर भी तुरंत नींद नहीं आती। सोने से पहले अंतिम समय में भी लोग मोबाइल देख लेते हैं। रात में आँख खुलती है तो भी लोग मोबाइल चेक कर लेते हैं। सुबह उठने के साथ ही लोग पहला काम मोबाइल देखने का करते हैं। मजे की बात तो यह है की ज्यादातर लोगों को मोबाइल के पीछे समय बरबाद करने का अफसोस भी होता है।

माँ-बाप से सीखते हैं बच्चे

बच्चे भी अब हाथ में मोबाइल लिए बैठे रहते हैं। बच्चों का स्क्रीन टाइम कभी चेक किया है? जो पैरेंट्स अपनी संतानों को जितनी देर उनकी इच्छा हो, उतनी देर मोबाइल उपयोग के लिए देते हैं, माँ-बाप को देख कर ही वे यह सब सीखते हैं। माँ-बाप ही जब मोबाइल के एडिक्ट होंगे तो बच्चों से अच्छी आशा कैसे रखी जा सकती है। बच्चों की आँखों की समस्याएँ लगातार बढ़ रही हैं। इसके पीछे भी बढ़ता स्क्रीन टाइम ही जिम्मेदार है।

नींद पूरी नहीं होगी तो पूरा दिन खराब होना ही है।

लाइफस्टाइल मैनेजमेंट के विचार

लाइफस्टाइल मैनेजमेंट एक्सपर्ट दिन को तीन हिस्सों में बाँटने की बात कहते हैं। आठ घंटे काम और आठ घंटे अन्य दिनचर्या और आठ घंटे की नींद। काम करते समय मोबाइल को दूर रखना चाहिए। रिलैक्स होने के लिए ही आठ घंटे हैं। इसके भी तीन हिस्से करने चाहिए। तीन घंटे दैनिक क्रियाओं के लिए, तीन घंटे स्वजनो से संवाद के लिए और तीन घंटे अपनी पसंद की प्रवृत्ति के लिए। इन तीनों घंटों को मोबाइल ही न खा जाए, इस बात का ध्यान रखना चाहिए।

बात करते समय ध्यान कहाँ रहता है

आप किसी से बात करती हैं तो उससे आँख से आँख मिला कर बात करती हैं? ज्यादातर लोगों का ध्यान दूसरों से बात करते समय मोबाइल में ही होता है। ऐसा करना सामने वाले व्यक्ति का अपमान है। आप खुद ही सोचिए कि आप किसी से बात कर रही हैं और वह आप की ओर न देखे तो आप को कैसा लगेगा?

डिजिटल डिसिप्लीन

अब का समय डिजिटल डिसिप्लीन फाॅलो करने का है। लोग ट्रेन, बस या प्लेन में फुल वाॅल्यूम कर के कुछ देखते या वीडियो काल पर बात करते रहते हैं। ऐसा करने वाला यह भी नहीं सोचता कि उसकी इस हरकत से कोई डिस्टर्ब या इरिटेट तो नहीं हो रहा। आप एंज्वाय कीजिए कोई दिक्कत नहीं है, पर दूसरों को खलल नहीं पहुँचना चाहिए।

शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखें

हर किसी को अपना बाॅडी क्लाॅक इस तरह सेट करना चाहिए कि अपना शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बना रहे। शरीर का तो ऐसा है कि इसकी जैसी आदत डालेंगी, यह उसी आदत में ढल जाएगा। नींद के बारे में तो यह भी कहा जाता है कि नींद को बढ़ाएँगी तो बढ़ेगी, घटाएँगी तो घटेगी। तमाम लोग कहते हैं कि मैं छह घंटे ही सोती हूँ। बहुत से महान लोगों के बारे में हमने सुना है कि वह मात्र इतने घंटे ही सोते थे। अच्छी बात है, पर वह

जागते हुए क्या करते थे, यह जानना महत्वपूर्ण है। उनका शरीर उन्हें अधिक काम करने और कम सोने की परमिशन देता रहा होगा। वे लोग जागते समय क्रिएटिव काम करते रहे होंगे। वे मोबाइल लेकर नहीं बैठे रहते रहे होंगे या टीवी में नहीं खोए रहते रहे होंगे।

मेडिकल साइंस क्या कहता है

मेडिकल साइंस कहता है कि आठ घंटे की नींद जरूरी है। संयोग से कभी नींद ज्यादा या कम हो जाए तो दिक्कत की कोई बात नहीं है। पर बाकी के संयोगों में शरीर को पूरा आराम तो मिलना ही चाहिए। जिस तरह कम सोना शरीर के लिए परेशानी खड़ी करता है, उसी तरह ज्यादा सोना भी शरीर को नुकसान पहुँचाता है। तमाम महिलाएँ दस-बारह घंटे सोती हैं। इस तरह अधिक सोने की भी आदत पड़ जाती है। नींद का ऐसा नहीं है कि आज दो घंटे कम सो लिया तो कल दो घंटे ज्यादा सो लिया तो बराबर हो जाएगा। हाँ, कभी हम ऐसा करती हैं कि नींद न पूरी हुई हो या थकान लगी हो तो अगले दिन थोड़ा ज्यादा आराम कर लिया। इसमें भी कभी-कभी चल जाता है।

उठने पर फ्रेश फील हो

सच और अच्छी बात तो यह है कि बिस्तर पर पड़ते ही थोड़ी देर में नींद आ जानी चाहिए। रात को अच्छी और गहरी नींद आए और सवेरे नेचुरल कोर्स में नींद खुल जाए। उठने पर एकदम फ्रेश फील होना चाहिए। नींद अच्छी न आने पर सवेरे उठने पर थकान महसूस होती है। अच्छी नींद के लिए जितना हो सके, स्क्रीन से दूर रहें। दिन में कुछ समय खुले में रहें।

खुद को वॉच करें

खुद पर भी वॉच रखना पड़ता है। ध्यान नहीं रखेंगी तो खुद ही खुद के हाथ से निकल जाएँगी। कार होती है तो हम दिन भर घूमती ही नहीं रहती हैं। इसी तरह मोबाइल है तो दिन भर कुछ न कुछ देखते रहना जरूरी नहीं है। आँखों को आराम मिलना बंद हो जाएगा तो दृष्टि बदल जाएगी।

*****

सौंदर्य और प्रेम का उत्सव है हरियाली तीज

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा

श्रावण का महीना महिलाओं के लिए विशेष उल्लास का महीना होता है. इस महीने में आने वाले अधिकांश लोक पर्व महिलाओं द्वारा ही मनाए जाते हैं. श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को श्रावणी तीज कहते हैं. जनमानस में यह हरियाली तीज के नाम से जानी जाती है. श्रावण के महीने में चारों ओर हरियाली की चादर बिखर जाती है. जिसे देख कर सबका मन झूम उठता है. सावन का महीना एक अलग ही मस्ती और उमंग लेकर आता है. श्रावण के सुहावने मौसम के मध्य में आता है तीज का त्यौहार.

हरियाली तीज का उत्सव श्रावण मास में शुक्ल पक्ष तृतीया को मनाया जाता है. मुख्यत: यह स्त्रियों का त्योहार है. इस समय जब प्रकृति चारों तरफ हरियाली की चादर सी बिछा देती है तो प्रकृति की इस छटा को देखकर मन पुलकित होकर नाच उठता है. जगह-जगह झूले पड़ते हैं. स्त्रियों के समूह गीत गा-गाकर झूला झूलते हैं. स्त्रियाँ अपने हाथों पर त्योहार विशेष को ध्यान में रखते हुए भिन्न-भिन्न प्रकार की मेहंदी लगाती हैं. मेहंदी रचे हाथों से जब वह झूले की रस्सी पकड़ कर झूला झूलती हैं तो यह दृश्य बड़ा ही मनोहारी लगता है, मानो सुहागिन आकाश को छूने चली हैं. इस दिन सुहागिन स्त्रियांग सुहागी पकडक़र सास के पाँव छूकर उन्हें देती हैं. यदि सास न हो तो स्वयं से बड़ों को अर्थात जेठानी या किसी वृद्धा को देती हैं. इस दिन कहीं-कहीं स्त्रियाँ पैरों में आलता भी लगाती हैं जो सुहाग का चिह्न माना जाता है. हरियाली तीज के दिन अनेक स्थानों पर मेले लगते हैं और माता पार्वती की सवारी बड़े धूमधाम से निकाली जाती है. वास्तव में देखा जाए तो हरियाली तीज कोई धार्मिक त्योहार नहीं वरन महिलाओं के लिए एकत्र होने का एक उत्सव है. नवविवाहित लड़कियों के लिए विवाह के पश्चात पड़ने वाले पहले सावन के त्योहार का विशेष महत्त्व होता है.

धार्मिक मान्यता के अनुसार माता पार्वती ने भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए इस व्रत का पालन किया था. परिणामस्वरूप भगवान शिव ने उनके तप से प्रसन्न होकर उन्हें पत्नी रूप में स्वीकार किया था. माना जाता है कि श्रावण शुक्ल तृतीया के दिन माता पार्वती ने सौ वर्षों के तप उपरान्त भगवान शिव को पति रूप में पाया था. इसी मान्यता के अनुसार स्त्रियाँ माता पार्वती का पूजन करती हैं. तीज पर मेहंदी लगाने, चूडियाँ पहनने, झूला

झूलने तथा लोक गीत गाने का विशेष महत्व है. तीज के त्यौहार वाले दिन खुले स्थानों पर बड़े-बड़े वृक्षों की शाखाओं पर, घर की छत पर या बरामदे में झूले लगाए जाते हैं जिन पर स्त्रियाँ झूला झूलती हैं. हरियाली तीज के दिन अनेक स्थानों पर मेलों का भी आयोजन होता है. हाथों में रची मेंहंदी की तरह ही प्रकृति पर भी हरियाली की चादर सी बिछ जाती है. इस नयनाभिराम सौंदर्य को देखकर मन में स्वतः ही मधुर झनकार सी बजने लगती है और हृदय पुलकित होकर नाच उठता है. इस समय वर्षा ऋतु की बौछारें प्रकृति को पूर्ण रूप से भिगो देती हैं. सावन की तीज में महिलाएँ व्रत रखती हैं. इस व्रत को अविवाहित कन्याएँ योग्य वर पाने के लिए करती हैं तथा विवाहित महिलाएँ अपने सुखी दांपत्य की चाहत के लिए करती हैं.

तीज का आगमन भीषण ग्रीष्म ऋतु के बाद पुनर्जीवन व पुनर्शक्ति के रूप में होता है. यदि इस दिन वर्षा हो तो यह और भी स्मरणीय हो उठती है. लोग तीज जुलूस में ठंडी बौछार की कामना करते हैं. ग्रीष्म ऋतु के समाप्त होने पर काले कजरारे मेघों को आकाश में घुमड़ता देखकर पावस के प्रारम्भ में पपीहे की पुकार और वर्षा की फुहार से आभ्यंतर आनन्दित हो उठता है. ऐसे में भारतीय लोक जीवन कजली या हरियाली तीज का पर्वोत्सव मनाता है. आसमान में घुमड़ती काली घटाओं के कारण ही इस त्योहार या पर्व को कजली या कज्जली तीज तथा पूरी प्रकृति में हरियाली के कारण तीज के नाम से जाना जाता है. इस त्योहार पर लड़कियों को ससुराल से पीहर बुला लिया जाता है. विवाह के पश्चात पहला सावन आने पर लडक़ी को ससुराल में नहीं छोड़ा जाता है. नवविवाहिता लडक़ी की ससुराल से इस त्योहार पर सिंजारा भेजा जाता है. हरियाली तीज से एक दिन पहले सिंजारा मनाया जाता है. इस दिन नवविवाहिता लडक़ी की ससुराल से वस्त्र, आभूषण, श्रृंगार का सामान, मेहंदी और मिठाई भेजी जाती है. इस दिन मेहंदी लगाने का विशेष महत्त्व है.

स्त्रियाँ आकर्षक परिधानों से सुसज्जित हो भगवती पार्वती की उपासना करती हैं. राजस्थान में जिन कन्याओं की सगाई हो गई होती है, उन्हें अपने भविष्य के सास-ससुर से एक दिन पहले ही भेंट मिलती है. इस भेंट को स्थानीय भाषा में शिंझार (श्रृंगार) कहते हैं. शिंझार में अनेक वस्तुएँ होती हैं, जैसे मेहंदी, लाख की चूड़ियाँ, लहरिया नामक विशेष वेश-भूषा, जिसे बाँधकर रँगा जाता है तथा एक मिष्ठान जिसे घेवर कहते हैं. इसमें अनेक भेंट वस्तुएँ होती हैं, जिसमें वस्त्र व मिष्ठान होते हैं. इसे माँ अपनी विवाहिता पुत्री को भेजती है. पूजा के बाद 'बया' को सास के सुपुर्द कर दिया जाता है. पूर्वी उत्तर प्रदेश में भी यदि कन्या ससुराल में है तो मायके से तथा यदि मायके में है तो ससुराल से मिष्ठान, कपड़े आदि भेजने की परम्परा है. इसे स्थानीय भाषा में तीज की भेंट कहा जाता है. राजस्थान हो या पूर्वी उत्तर प्रदेश, प्राय: नवविवाहिता युवतियों को सावन में ससुराल से मायके बुला लेने की परम्परा है. सभी विवाहिताएँ इस दिन विशेष रूप से श्रृंगार करती हैं. सायंकाल बन ठनकर सरोवर के किनारे उत्सव मनाती हैं और उद्यानों में झूला झूलते हुए कजली के गीत गाती हैं.

इस अवसर पर नवयुवतियाँ हाथों में मेहंदी रचाती हैं. तीज के गीत हाथों में मेहंदी लगाते हुए गाये जाते हैं. समूचा वातावरण श्रृंगार से अभिभूत हो उठता है. इस त्योहार की सबसे बड़ी विशेषता है, महिलाओं का हाथों पर विभिन्न प्रकार से बेलबूटे बनाकर मेहंदी रचाना. पैरों में आलता लगाना, महिलाओं के सुहाग की निशानी है. हाथों व पाँवों में भी विवाहिताएँ मेहंदी रचाती हैं जिसे 'मेहंदी मांडना' कहते हैं. इस दिन बालाएँ दूर देश गए अपने पति के तीज पर आने की कामना करती हैं जो कि उनके लोकगीतों में भी मुखरित होता है. तीज के दिन का विशेष कार्य होता है, खुले स्थान पर बड़े-बड़े वृक्षों की शाखाओं पर झूला बाँधना. झूला स्त्रियों के लिए बहुत ही मनभावन अनुभव है. मल्हार गाते हुए मेहंदी रचे हुए हाथों से रस्सी पकड़े झूलना एक अनूठा अनुभव ही तो है. सावन में तीज पर झूले न लगें, तो सावन क्या? तीज के कुछ दिन पूर्व से ही पेड़ों की डालियों पर, घर की छत की कड़ों या बरामदे में कड़ों में झूले पड़ जाते हैं और नारियाँ, सखी-सहेलियों के संग सज-संवरकर लोकगीत, कजरी आदि गाते हुए झूला झूलती हैं. पूरा वातावरण ही उनके गीतों के मधुर लयबद्ध सुरों से रसमय, गीतमय और संगीतमय हो उठता है.

*****

पंचतंत्र की कहानी

संगीतमय गधा

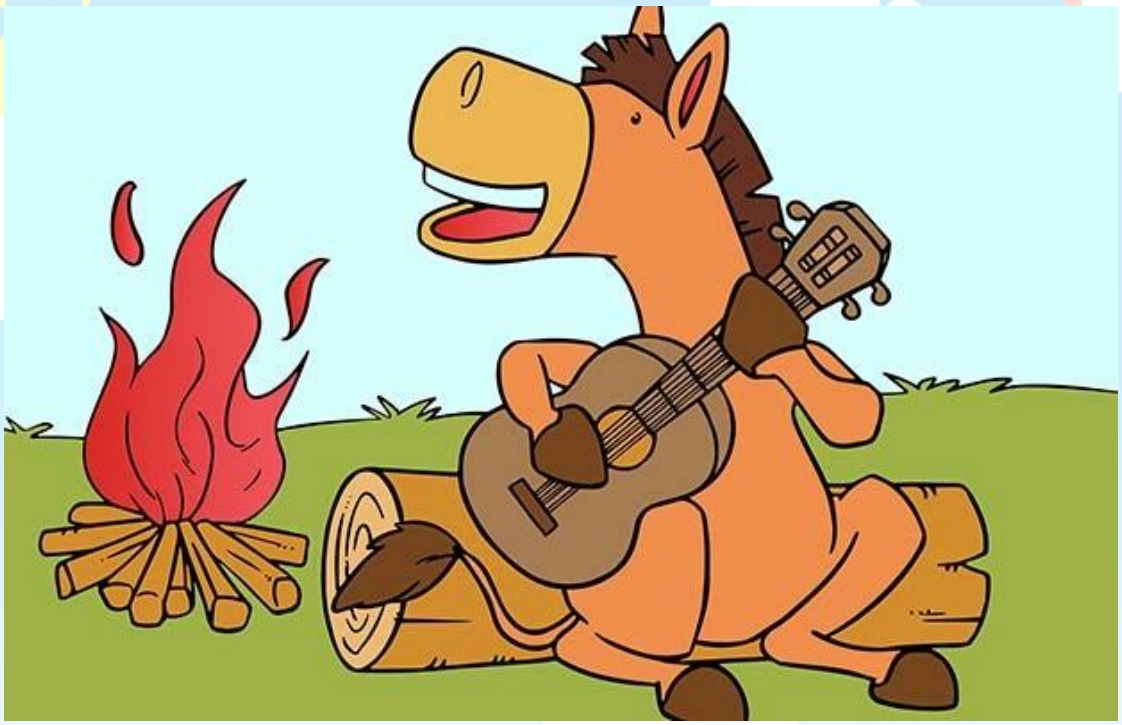

बहुत समय पहले की बात है, किसी गांव में एक धोबी रहा करता था. उसके पास एक गधा था, जिसका नाम मोती था. चूंकि, धोबी स्वाभाव से बहुत ही कंजूस था, इसलिए वह अपने गधे को जान बूझकर चारा पानी नहीं देता था और उसे चरने के लिए बाहर भेज दिया करता था. इस कारण गधा बहुत ही कमजोर हो गया था. जब एक दिन धोबी ने उसे घास चरने के लिए छोड़ा, तो वह चरते-चरते कहीं दूर जंगल में निकल गया. जंगल में उसकी मुलाकात एक गीदड़ से हुई.

गीदड़ ने पूछा, "गधे भाई तुम इतने कमजोर क्यों हो?" तो गधे ने जवाब दिया, "मुझसे दिनभर काम करवाया जाता है और मुझे कुछ खाने के लिए भी नहीं दिया जाता है. यही वजह है कि मुझे इधर-उधर भटक-भटक कर अपना पेट भरना पड़ता है. इस कारण मैं बहुत कमजोर हो गया हूं." गधे की यह बात सुनकर गीदड़ कहता है, "मैं तुम्हें एक उपाय बताता हूं, जिससे तुम बहुत ही स्वस्थ और शक्तिशाली हो जाओगे."

गीदड़ कहता है, "यहां पास में ही एक बहुत बड़ा बाग है. उस बाग में हरी-भरी सब्जियां और फल लगे हुए हैं. मैंने उस बाग में जाने का एक खुफिया रास्ता बना रखा है, जिससे मैं रोज रात को जाकर बाग में हरी-भरी सब्जियां और फल खाता हूं. यही वजह है कि मैं एकदम तंदुरुस्त हूं." गीदड़ की बात सुनते ही गधा उसके साथ हो लेता है. फिर गीदड़ और गधा दोनों ही साथ मिलकर बाग की ओर चल देते हैं.

बाग में पहुंच कर गधे की आंखे चमक उठती हैं. इतने सारे फल और सब्जियां देखकर गधा अपने आप को रोक नहीं पाता है और बिना देर किए वह अपनी भूख मिटाने के लिए रसीले फल और सब्जियों का आनंद लेने लगता है. गीदड़ और गधा जी भर के खाने के बाद उसी बाग में सो जाते हैं.

अगले दिन सूरज निकलने से पहले गीदड़ उठ जाता है और फौरन बाग से निकलने को कहता है. गधा बिना सवाल किए गीदड़ की बात मान लेता है और दोनों वहां से रवाना हो जाते हैं.

फिर वो दोनों रोज मिलते और इसी तरह बाग में जाकर हरी-भरी सब्जियां और फल खाते. धीरे-धीरे समय बीतता गया और गधा तंदुरस्त हो गया. रोज भर पेट खाना खाकर अब गधे के बाल चमकने लगे थे और उसकी चाल में भी सुधार हो गया था. एक दिन गधा खूब खाकर मस्त हो गया और जमीन पर लोटने लगा. तभी गीदड़ ने पूछा, "गधे भाई तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न?" तो गधा कहता है, "आज मैं बहुत खुश हूं और मेरा गाना गाने का मन कर रहा है."

गधे की यह बात सुनकर गीदड़ घबराया और बोला, "न गधे भाई, यह काम भूलकर भी मत करना. भूलो मत हम चोरी कर रहे हैं. कहीं बाग के मालिक ने तुम्हारा बेसुरा गाना सुन लिया और यहां आ गया, तो बड़ी मुसीबत हो जाएगी. भाई इस गाने-वाने के चक्कर में मत पड़ो."

गीदड़ की यह बात सुनकर गधा बोला, "तुम क्या जानो गाने के बारे में. हम गधे तो खानदानी गायक हैं. हमारा ढेंचू राग तो लोग बड़े शौक से सुनते हैं. आज मेरा गाने का बहुत मन है, इसलिए मैं तो गाऊंगा."

गीदड़ समझ जाता है कि गधे को गाने से रोक पाना अब बहुत मुश्किल है. गीदड़ को अपनी गलती का आभास हो जाता है. गीदड़ बोला, "गधे भाई तुम सही कह रहे हो, गाने-वाने के बारे में हम क्या जाने. अब तुम बता रहे हो, तो मुमकिन है कि तुम्हारी सुरीली आवाज सुनकर बाग का मालिक फूल माला लेकर तुम्हें पहनाने जरूर आएगा." गीदड़ की बात सुनकर गधा खुशी से गद-गद हो जाता है. गधा कहता है, "ठीक है, फिर मैं अपना गाना शुरू करता हूं."

तभी गीदड़ कहता है, "मैं तुम्हें फूल माला पहना सकूं, इसलिए तुम अपना गाना मेरे जाने के 15 मिनट बाद शुरू करना. इससे मैं तुम्हारा गाना खत्म होने से पहले यहां वापस आ जाऊंगा."

गीदड़ की यह बात सुनकर गधा और भी ज्यादा फूला नहीं समाता है और कहता है, "जाओ भाई गीदड़ मेरे सम्मान के लिए फूल माला लेकर आओ. मैं तुम्हारे जाने के 15 मिनट बाद ही गाना शुरू करूंगा." गधे के इतना कहते ही गीदड़ वहां से नौ दो ग्यारह हो जाता है.

गीदड़ के जाने के बाद गधा अपना गाना शुरू करता है. गधे की आवाज सुनते ही बाग का मालिक लाठी लेकर वहां पहुंच जाता है. वहां गधे को देख बाग का मालिक कहता है कि अब समझ आया कि तू ही है, जो मेरे बाग को रोज चर के चला जाता है. आज मैं तुझे नहीं छोड़ूंगा. इतना कहते ही बाग मालिक लाठी से गधे की खूब जमकर पिटाई करता है. बाग मालिक की पिटाई से गधा अधमरा हो जाता है और बेहोश होकर जमीन पर गिर जाता है.

कहानी से सीख : संगीतमय गधा कहानी से सीख मिलती है कि अगर कोई हमारी भलाई के लिए कुछ बात समझाता है, तो उसे मान लेना चाहिए. कभी-कभी हालात ऐसे हो जाते हैं कि दूसरों की बात न मानने से हम मुसीबत में पड़ सकते हैं.

*****

माटी

रचनाकार- राधेश्याम सिंह बैस, बेमेतरा

मोर भुइया के़ माटी, हाबस अब्बड़ अनमोल.
जनम -मरण तोरे कोरा म, करम-धरम कहानी के़ बोल.
खेले कुदेन तोर अंगना म,पले बढ़े होगेन जवान.
इही माटी के़ भरोसा म, हाबे जिंदगानी के़ पहचान.
माटी ले फले फूले, माटी के़ हमर बोली.
बेरा बखत म बइठे फुरसत, संग संगवारी करथे ठिठोली.
जउन रद्दा म चलथन, रद्दा हाबे माटी के़.
करथन मेहनत बहाथन पसीना, तब होथे पेट भर रोटी के़.
मोर माटी हीरा सोना,येखर बात निराला.
जी जुड़ाथे येखर छइहा म, सुग्घर सुख देने वाला.
किसान मजदूर के़ मेहनत ले, उपजत है अन्न जल.
इही भरोसा म दुनियाँ हे, जी ले तय हाँ आज अउ कल.
माटी के़ बरतन हाबे, भोजन घोलो इही बरतन म भाय.
गांव शहर कोनो जगह होय, मजा बिन माटी के़ नइ आय.
माटी म रुख राई, खेलय माटी म बाबा अउ नाती.

इही ले हमर ताकत आथे, सौंधी सौंधी महके माटी.
हमर माटी क़े बात जबर, काबर येमे जम्मो सुहागे.
मेहनत हे बिहनिया ले संझा, माटी महतारी क़े गोठ मिठागे.
येखर खुशबु महर -महर, मिल जाथे नवा जान.
देथे सन्देश दुनियाँ भर ल,हम सबो इह माटी क़े पहचान.
माटी क़े बने है घरौंदा, हमर जिनगी क़े दिया बाती.
बोली इहा क़े गुरतुर, अब्बड़ सुहाथे हमर जनम माटी.
मोर छत्तीसगढ़ क़े माटी, मय पाय लागो दिन रात.
तोर अचरा ले बाढ़े हाबो, जियत मरत ले नइ भुलान बात.

*****

मंगलमय के हर पल के सभी साक्षी रहे

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

सभी जीवन में सुखी रहें,
दुनियां में कोई दुखी ना रहे,
सभी जीवन भर रोग मुक्त रहे,
मंगलमय के हर पल के सभी साक्षी रहें .

सभी जीवों का कल्याण का कार्य करते रहें,
किसी के दुखों का भागी न बने,
सभी की भलाई निस्वार्थ करते रहें,
भारतीय संस्कारों को जीवन में अपनाते रहें.

यह भाव हर मानवीय जीव में रहे,
दुनिया में सभी सुखी रहें,
जीवन भर सभी का मन शांत रहे,
दूसरों की परेशानी में मदद करें.

कभी किसी को दुख का भागी ना बनना पड़े,
यह कामना हर मानवीय जीवन में रहे,

जीवन में किसी जीव को परेशान
ना करने का मंत्र ज्ञान मस्तिष्क में रहे.

सभी श्लोकों को पढ़कर जीवन में आनंद करें,
महापुरुषों के ग्रंथों को पढ़कर सही रास्ते पर चलकर सभी में यह सोच भरें,
किसी की बुराई और परेशान ना करें.

*****

दोस्त

रचनाकार- साक्षी यादव, कक्षा-8वीं, स्वामी आत्मनाद शेख गफ्फार अंगरेजी मध्यम शाला तारबाहर बिलासपुर

दोस्त आसमान में तारे की तरह होते हैं, हमेशा वहाँ उज्ज्वल और ऊँचा चमकते रहते हैं. उतार-चढ़ाव में वे हमेशा आपके साथ रहते हैं .प्यार और समर्थन से वे आपके मार्गदर्शक हैं. वे आपके दिलों में हँसी और खुशी लाते हैं. उनकी मौजूदगी से जिंदगी खूबसूरत बन जाती है. हर मुश्किल से मुश्किल परिस्थिति में कभी डगमगाओ मत. वे आपकी दोस्ती का दिल में ख्याल रखते हैं. हम मिलकर छोटी-बड़ी दोनों तरह की यादें बनाते हैं. एक ऐसी दीवार बनाना जो कभी नहीं गिरेगी. रोमांचों और कहानियों के माध्यम से हम अपने संबंधों को साझा करते हैं, जो तुलना से परे है. तो यहाँ है सच्चा दोस्त, हमेशा सच्चा. उतार-चढ़ाव में हम हमेशा साथ रहेंगे, एक ऐसी दोस्ती जिसे अनंत काल तक संजोकर रखेंगे.

*****

दिशाएँ

रचनाकार- शीतल बैस, बेमेतरा

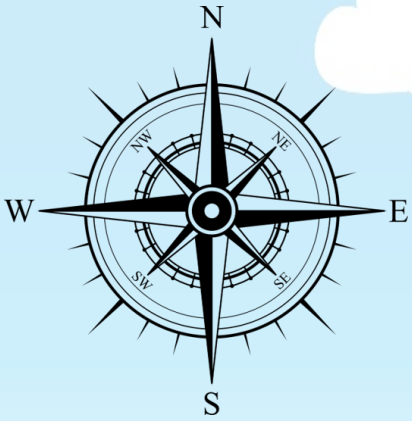

बच्चों तुम्हें बतलाती हूं,
चार दिशा सीख लाती हूं.
उगता सूरज उसका धाम,
यही दिशा पूरब तुम मान.
पूर्व में मुंह को जान,
तभी दिशा की हो पहचान.
जिधर डूबता सूरज दादा,
फिर आने का करता वादा.
यही दिशा पश्चिम बतलाता,
मीठा मीठा लगे बताशा.
पश्चिम में होता श्रीलंका,
रावण का बजता है डंका.
दाएं हाथ को हम घूमाए,
यही दिशा दक्षिण बतलाए.
दक्षिण में बहती कावेरी,
स्कूल में न हो तुम देरी.
आदिवासी है बस्तर में ,
खड़ा हिमालय उत्तर में.
खड़े खड़े तुम पासा फेकों,

बाएं हाथ में उत्तर देखो.
उत्तर, दक्षिण,पूर्ब,पश्चिम,
चार दिशायें जाने हम.
हमको कराती ज्ञान है,
होती दिशाएं चार है.

*****

आजादी का अमृत काल विज़न 2047 शुरू

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

भारत को मजबूत स्थिर शांतिपूर्ण देश
के रूप में विकसित करना है.

शिक्षा क्षेत्र में विज़न 2047 शुरू,
पूर्ण विश्वास है भारत बनेगा विश्व गुरू.

जब देश की आजादी के 100 वर्ष पूरे होंगे,
आजादी के अमृत काल तक भारतीय शिक्षा नीति सारी दुनिया को दिशा देने
वाले दिन यू होंगे.

ये ख्वाब हमारे संकल्प सामर्थ्य से पूरे होंगे .

अमृत काल में हिंदुस्तान की शिक्षा नीति की विश्व प्रशंसा करे,
यहां ज्ञान लेने आएं, ऐसा हमारा गौरव हों,
विश्व कल्याण की भूमिका निर्वहन करने में भारत समर्थ होंगे.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति को शिक्षकों,प्रशासकों द्वारा गंभीरता से अमल में लाना है,
शिक्षा क्षेत्र में भारत को
विश्वगुरू बनाना है .

भारतीय युवाओं में प्रतिभा की कोई कमी नहीं,
बस गंभीरता से उसे पहचानना है.
शिक्षण को स्वच्छंदात्मक बहुआयामी
आनंदमयी अनुभव बनाना है .

छात्रों में मूल्यों को विकसित करने शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका रेखांकित करना है .
छात्रों के आचरण को सुधारने विपरीत परिस्थितियों का सामना करने आत्मविश्वास जगाना है .

*****

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी–

चूहों की समझदारी

एक छोटे से जंगल मे हाथी रहते थे. उस जंगल मे एक झील थी. झील का पानी पीकर सभी हाथी अपनी प्यास बुझाते थे. उस समय गर्मी बहुत पड़ रही थी.

ज्यादा गर्मी के वजह से झील का सारा पानी सूख गया था. अब हाथी पानी के लिए बहुत परेशान रहने लगे.

कई दिनों तक वे बिना पानी के रहे. एक दिन उनमे से एक हाथी जोर से कहता है – अब आप सब चिंता मत कीजिये. पानी मिल गया है.

यह सुनकर सभी हाथी बहुत खुश हो जाते है ओर कहते है – तुम्हें कहाँ मिला पानी ?

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

वह हाथी कहता है-" यहाँ से थोड़ी दूरी पर एक नदी है, वहाँ पूरे नदी में पानी है.चलो मैं तुम सबको अपने साथ ले चलता हूँ.तभी पास में बैठा चूहा कहता है,यह गलती कभी नहीं करना.उस नदी के पास कोई भी जीव-जंतु,पानी पीने जाता है तो शिकारी के जाल में फंस जाता है और वह उनका शिकार बन जाता है.नदी के चारों ओर शिकारी जाल फैला कर रखा हुआ है.

उनकी बातों को सुनकर हाथी कहता है-"चूहा भाई,हमें क्या करना चाहिए.ताकि हम पेट भर पानी पीकर वहाँ से सुरक्षित लौट सके."तब चूहा कहता है-हाथी भैया,आप हमें अपने साथ ले चलो.हम बेशक छोटे हैं,पर कभी ना कभी हम भी आपके काम आ सकते हैं.चूहा की बातों को सुनकर उसमें से एक हाथी हंसते हुए कहता है-तुम इतने छोटे हो,हमारे क्या काम आओगे? साथी हाथी के बाद को काटते हुए समझदार दूसरी हाथी कहता है- ठीक है हम सब उस नदी के पास चलते हैं.

अगले दिन चुपचाप शिकारी के सो जाने के बाद धीरे-धीरे सभी हाथी और चूहे नदी के पास पहुँचने वाले ही रहते हैं.तभी सभी हाथी शिकारी के फैलाए हुए जाल में फंस जाते हैं.चूहे तो छोटे होने कारण वे सभी जाल से निकल जाते हैं.लेकिन सभी हाथी जाल में बुरी तरह से फंस जाते हैं.जैसे ही हाथी जाल से बाहर निकलने के लिए छटपटाता है.वह और जाल में फंसते जाता है.चूहे की ओर देखकर सभी हाथी प्रार्थना करते हैं कि चूहे भाई,कोई भी तरह से हमें शिकारी के आने के पहले जाल से बाहर निकालें.

चूहे,हाथी को धीरज रहने की बात कहते हैं.फिर सभी चूहे मिलकर अपने दांतों से रस्सी और जाल को काटकर हाथी को बाहर निकलते हैं.हाथी चूहे को धन्यवाद देते हैं. तत्पश्चात सभी हाथी नदी में पहुँचकर पेट भर पानी पीते हैं.जिन हाथी ने उन चूहों का मजाक उड़ाया था.वह कहता है-चूहा भाई,मुझे माफ कर दीजिए!मैं उस दिन आपको छोटा समझकर मजाक बनाया था.

चूहा उसे क्षमा करते हुए कहता है की हाथी भाई, इस धरती पर सभी प्राणियों का अलग-अलग गुण होता है.एक दूसरे को अपने से छोटा नहीं समझना चाहिए.कब,कौन, किसका काम आ जाए.इसे कोई नहीं जानता.इस तरह जंगल में सभी हाथी और चूहे मित्र बनकर,सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करते हैं.

बच्चों इस कहानी से हमने समझा कि-छोटे लोगों का कभी भी मजाक नहीं बनना चाहिए. मुश्किल समय में कोई भी काम आ सकता है.जो काम चूहे ने किया.वह काम हाथी कभी नहीं कर सकते.

आस्था तंबोली, जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी

पानी मिल गया है यह सुनकर सभी हाथी बहुत खुश हो जाते हैं .और कहते हैं तुम्हें कहां मिला पानी हाथी कहता है मेरे पीछे आओ एक जगह है जहां बहुत पानी है वह जंगल के रास्ते सभी को पानी के पास ले जाने लगा. तभी अचानक एक शिकारी जंगल में दिखा सभी हाथी घबरा गए और इधर-उधर भागने लगे. शिकारी ने एक हाथी को पकड़ लिया और एक पेड़ से बांध दिया बाकी हाथी शिकारी से बचकर भाग गए .जिस हाथी को शिकारी ने बांधा था वह बहुत परेशान हो गया उसे प्यास भी लगी थी वह हाथी पानी के लिए इधर-उधर देख रहा था.तभी उसे वहां कुछ चूहे दिखे हाथी ने चूहों से मदद मांगी हाथी ने अपनी सारी बातें चूहों को बताई चूहों को हाथी पर दया आ गई .जैसे ही शिकारी वहां से गया वैसे ही सभी चूहे रस्सी को उतरने लगे धीरे-धीरे करके सभी रस्सी को कुतर डाला और हाथी को शिकारी से बचा लिया.हाथी और चूहा दोनों दोस्त बन गए. हाथी अपने दोस्तों के पास चला गया और मन भर के पानी पी लिया.

कुमारी दिव्यानी साहू, आठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

तब वह हाथी कहता है. चलो मैं उस जगह पर ले जाता हूँ. सभी हाथी उस हाथी के पीछे-पीछे चलते हैं.कुछ दूर जाने के पश्चात एक बरगद का विशाल वृक्ष मिलता है,उसी के किनारे एक बहुत बड़ा तालाब था.जिसमें पानी भरा हुआ था.सभी जानवर पेट भर पानी पीने की बाद बरगद के पेड़ के पास आराम करते हैं.

इसी बरगद की वृक्ष के पास चूहे का बिल था.जिसमें बहुत से चूहे रहते थे.कुछ देर आराम करने के बाद सभी हाथी वापस घर जाते हैं.जैसे ही हाथी चलना प्रारंभ करते हैं.देखते हैं कि सभी हाथी के पैर में रस्सी फंसा हुआ है.रस्सी को छुड़ाने की कोशिश करता है.लेकिन रस्सी और उसके पैर में बंधते जाता है. वास्तव में वह रस्सी नहीं शिकारी द्वारा फैलाए हुए जाल था.जिसमें सभी हाथी बुरी तरह फंस जाते हैं.सहायता के लिए सभी हाथी जोर-जोर से चिंघाड़ते (चिल्लाते) हैं.हाथियों की आवाज को सुनकर सभी चूहे बिल से निकलते हैं.उसे देखकर हाथी कहते हैं- "चूहा भाई!कृप्या हमारी सहायता करें." चूहों को हाथियों का दु:ख देखा नहीं गया.उन्होंने तुरंत शिकारी के आने के पहले,फंसे हुए रस्सी को अपने नुकुली दांत से काटते हैं और हाथी को जाल से छुड़ा देते हैं. हाथी सभी चूहों को धन्यवाद देते हैं. दोनों में अच्छी मित्रता हो जाती है. कुछ दिन के पश्चात बारिश का मौसम आ गया.फिर बहुत तेज बारिश होने लगी. सभी तालाब, नदी-नाले और झील पानी से भर गए.सभी जानवर खुशी से नाचने लगे.

साथियों इस कहानी से हमने यह सीखा की विपत्ति किसी भी व्यक्ति के ऊपर आ सकती है.अपनी तरफ से जितना हो जाए.उस विपत्तियों को दूर करने की कोशिश करनी चाहिए.यही इंसानियत है.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

बाज की उड़ान

एक बार की बात है कि एक बाज का अंडा मुर्गी के अण्डों के बीच आ गया.

कुछ दिनों बाद उन अण्डों में से चूजे निकले, बाज का बच्चा भी उनमें से एक था .

वो उन्ही के बीच बड़ा होने लगा. वो वही करता जो बाकी चूजे करते, मिट्टी में इधर-उधर खेलता, दाना चुगता और दिन भर उन्हीं की तरह चूँ-चूँ करता .

बाकी चूजों की तरह वो भी बस थोड़ा सा ही ऊपर उड़ पाता ,और पंख फड़-फड़ाते हुए नीचे आ जाता .

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

उन शिक्षकों का दिवस

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 8वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार शासकीय, अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, तारबाहर, बिलासपुर

5 सितंबर को,
उन शिक्षकों का दिवस है.
पढ़ने को मन करता नहीं,
पर वह करते हमें विवश हैं.

उनकी हर डांट के पीछे,
रहता उनका प्यार ही है.
उनकी हर फटकार के नीचे,
हमारी खुशियों की क्यारी है.

उनकी वह कठोरता,
हमें मुश्किलों से लड़ना सिखाती है.
लेकिन उनकी वह सरलता,
हमारे दिल में घर कर जाती है.

कभी वह हमें डांटते मारते तो,
कभी पीठ सहलाते हैं.
उन्हें अच्छा कहूं या बुरा कहूं,
यें मुझे समझ ना आते हैं.

परंतु इन सब के पीछे,
है मात्र एक ही वजह.
कि उनके छात्र तरक्की करें,
सफल रहे वह हर जगह.

हम तो छोटे हैं अभी,
कुछ भी नहीं जानते हैं.
डांट कर पढ़ने को विवश करते तभी,
हमारे शिक्षक हमारे शुभचिंतक है.

सत्य का साथ देना तो,
हर शिक्षक सीखाता समान.
लेकिन बात ग़लत की हो तो,
उठाना सिखाते तीर -कमान.

जिन्हें देखकर करते हैं,
धरती अंबर भी सलाम.
ऐसे महान शिक्षकों को,
मेरा दिल से प्रणाम.

*****

माँ बूढ़ी हो रही है

रचनाकार- विनोद दूबे

अबकी मिला हूँ माँ से,
मैं वर्षों के अंतराल पर,
ध्यान जाता है बूढ़ी माँ,
और उसके सफ़ेद बाल पर,

आज-कल की ढेरों बातें,
वह अक्सर भूल जाती है,
मेरे बचपन की पुरानी बातें,
वह कई दफा दुहराती है,

थोड़ा झुक कर चलती है,
थोड़ा सा लड़खड़ाती है,
रात में देर तक जागती है,
दिन में अक्सर सो जाती है,

जिस माँ को छोड़कर गया था,
लौटकर उसे क्यों नहीं पाता हूँ,
कई दफा माँ की बातों पर भी,
मैं अनमने खीझ से भर आता हूँ,

स्मृतियों के पंख लगाए तब मैं,
पुरानी माँ से मिलने जाता हूँ,

दिखती हैं माँ मुझे गोद में लिए-लिए,
सारे घर का जिम्मा एक पैर पर उठाते,
आँगन के सिलबट्टे पर मसाला पीसते,
मेरे पीछे दूध का गिलास लिए भागते,
जीवन की कोरी स्लेट पर रात को,
मुझे सही गलत के क ख ग सिखाते,

बल बुद्धि विवेक का क्षीण होना,
हम सबकी उम्र का किस्सा है,
मेरे पास आज जो भी समझ है,
वो भी तो मेरी माँ का हिस्सा है,

माँ का बूढ़ा होते जाना,
नहीं है एक दिन का सिला,
गलती मेरी थी जो मैं उससे,
वर्षों के अंतराल पर मिला,

अब रोज वीडियो कॉल पर,
मैं उसे ग़ौर से देखा करता हूँ,
उसकी सारी बातें सुनता हूँ,
चाहे गलत हों या सही,
उसे देखते अंतर्मन में एक भय कचोटता है,
कल मेरे फोन में माँ का सिर्फ नंबर रहेगा,
शायद माँ नहीं.

*****

प्यारी बहना

रचनाकार- डॉ0कमलेन्द्र कुमार, उत्तरप्रदेश

बहन की रक्षा करने का है,
दृढ़ संकल्प हमारा.
साथ पलें हैं साथ बढ़े हैं,
प्यार हमारा न्यारा.

कभी झगड़ते,कभी मचलते,
कभी करें शैतानी.
दिन दिन भर हम बात करें ना,
थी कितनी नादानी?

सही दिशा दिखलाती हरदम,
मुझको प्यार दिया है.
मैं सफल हो जाऊँ पथ पर,
ऐसा कार्य किया है.

जब से बिछुड़े हम दीदी से,
सब कुछ सूना लगता.

कैसे मैं बतलाऊँ दीदी,
दिन दूना दूना लगता.

पावन पर्व भाई बहन का,
आओ इसे मनाएं.
घर की हो तुम राज दुलारी,
आओ झूमें गाएं.

*****

फिर से गाऊँ गाना

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत, दरभंगा

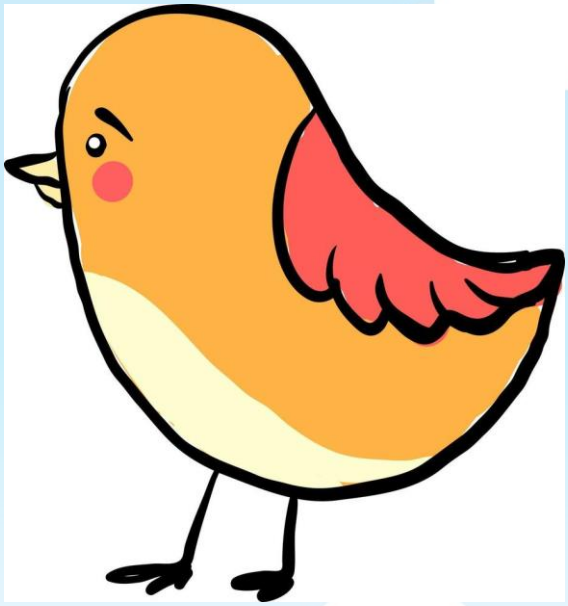

गुमसुम बैठी क्यों उदास हो,
भूल गई तुम चूं- चूं गाना.

जहर छिटें हैं खेत- खेत में,
जहरीला है इसका दाना.

कटती जाती झाड़ी- झाड़ी,
हुआ कठिन है नीड़ बनाना.

अंधाधुंध कटते हैं पेड़,
लगता सूना सब बेगाना.

पेड़ लगाओ हो हरियाली,
खुश हो फिर से गाऊँ गाना.

*****

खेल- खेल में खेलें हम

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत, दरभंगा

मौसम है बारिश वाला,
हर बच्चा है मतवाला.

निकलें हम चुपके- चुपके,
धूम मचा लेंगे मिलके.

दिखे सड़क पर है पानी,
कर लें थोड़ी मनमानी.

कागज की नाव बनाकर,
पानी में उसे चलाकर.

नन्ही टोली लेकर हम,
खेल- खेल में खेलें हम.

*****

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी–

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

हाथी और ऊॅंट की दोस्ती

बच्चों चित्र के माध्यम से हम हाथी और ऊॅंट की कहानी शेयर कर रहे है.सदा आपस में लड़ने वाले हाथी और ऊॅंट के मध्य श्रेष्ठता प्रमाणित करने के लिए प्रतियोगिता होती है.कौन जीतता है? क्या उनकी हाथी और ऊॅंट की दोस्ती हो पाती है? जानने के लिए पढ़िए पूरी कहानी :

बहुत समय पहले की बात है.एक जंगल में एक हाथी और एक ऊॅंट रहते थे.विशाल शरीर वाला हाथी बलशाली था.वह अपने बल से बड़े-बड़े पेड़ों को उखाड़ फेंकता था.अपने विशाल पैरों के नीचे छोटे पौधे और झाड़ियों को रौंद डालता था.वहीं ऊॅंट तेज और फुर्तीला था.पलक झपकते ही बड़े-बड़े पौधों को झुका देता और रेतीला जमीनों में तेज रफ्तार से चलता था.

हाथी और ऊॅंट दोनों को अपने-अपने गुणों पर अभिमान था और दोनों स्वयं को दूसरे से श्रेष्ठ समझते थे.इस बात पर प्रायः उनमें बहस होती,जो कई बार झगड़े का रूप ले लेती थी.लेकिन उसका कोई परिणाम नहीं निकलता था.

जंगल में रहने वाला एक बंदरअक्सर हाथी और ऊॅंट की लड़ाई देखा करता था.वह उनकी बहसबाजी और लड़ाई से तंग आ चुका था.एक दिन वह उन दोनों से बोला-"तुम दोनों की बहस मैं कई दिनों से देख रहा हूँ.आज फैसला हो ही जाये. क्यों न तुम दोनों में एक प्रतियोगिता करवाई जाये, जो जीतेगा, वही श्रेष्ठ होगा. क्या कहते हो?"

हाथी और ऊॅंट बंदर की बातों को मान गये.एक स्वर में उन्होंने पूछा-"मगर प्रतियोगिता क्या होगी?"

बंदर बोला-"इस जंगल के थोड़ी दूर में एक पहाड़ है. वहाँ एक पुराना वृक्ष है, जिस पर एक अनोखा फल लगा हुआ है.वह अनोखा फल खाने से कोई भी जीव बुढ़ापा नहीं होता.तुम दोनों में से जो भी उस अनोखा फल को ले आयेगा,वह विजेता होने के साथ ही दूसरे से श्रेष्ठ होगा."

हाथी और ऊॅंट के बीच बंदर ने झंडा दिखाकर प्रतियोगिता प्रारंभ किया.ऊॅंट फुर्ती से एक पेड़ से दूसरे पेड़ को झुकाते हुए,तो कुछ पेड़ को तोड़ते हुए, उछल-उछलकर आगे बढ़ने लगा.वहीं हाथी अपनी सूंड से रास्ते में आने वाले पेड़ों को उखाड़ता और रौंदता हुए आगे बढ़ने लगा.

कुछ ही देर में उन दोनों ने जंगल पार कर लिया.अब उनके सामने पहाड़ थी.पहाड़ चढ़ने के बाद ही वह पुराना वृक्ष है.जिसमें अनोखा फल प्राप्त करना है. हाथी और ऊॅंट ने पहाड़ पर चढ़ने का भरपूर कोशिश किया.लेकिन पहाड़ अधिक ऊॅंचा एवं दोनों का शरीर भारी होने के कारण पहाड़ पर नहीं चढ़ पाया और वह अनोखा फल प्राप्त नहीं कर सका. हार थककर दोनों वापस पुनः उसी स्थान पर आ गए.

वापस आकर शर्मिंदा होते हुए हाथी और ऊॅंट,बंदर से कहने लगे-"बंदर भाई, हम दोनों को अपने लंबे,मोटे,ताजे शरीर एवं अपनी बुद्धि पर बहुत घमंड था.हम अपने किए गए कार्यों पर बहुत ही शर्मिंदा है.हमें समझ आ गया है कि हम दोनों के गुण अपनी-अपनी जगह श्रेष्ठ हैं.हमने फैसला किया है कि अब से हम कभी नहीं लड़ेंगे और मित्र बनकर रहेंगे."

बंदर का प्रयोजन सिद्ध हो चुका था.वह यही सीख दोनों को देना चाहता था.वह बोला- "हर प्राणी एक दूसरे से भिन्न होता है.उनमें अपने गुण होते हैं और अपनी कमजोरियाँ भी होती है. कोई एक-दूसरे से श्रेष्ठ नहीं है,बस भिन्न है और अपने स्तर पर श्रेष्ठ है.हमें एक दूसरे से लड़ना नहीं हैं, बल्कि सबका सम्मान कर मिल जुलकर रहना है."

उस दिन से हाथी और बंदर मित्र बन गये.

बच्चों इस कहानी से हमने सीखा कि एक दूसरे के गुणों का सम्मान कर मिलजुल कर रहना चाहिए ताकि जिंदगी सुखद हो.

आस्था तंबोली, जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी

एक समय की बात है जब तेज गर्मी पड़ रही थी. ऐसे में कुछ जानवर पानी की तलाश में इधर-उधर घूम रहे थे. उन्हें कहीं पानी नहीं मिल रहा था अचानक एक बंदर उछल कूद करता हुआ आया और उन जानवरों को पानी का रास्ता दिखाया. कि अपनी किसी और मिल सकता है

सभी जानवर उस बंदर की बात मानकर आगे बढ़ने लगे. तभी बंदर ने कहा जहां आपको पानी मिले पानी पीने के बाद यह झंडा वहां लगा देना ताकि फिर कभी किसी को जरूरत पड़ेगा तो मैं उनकी मदद कर पाऊं ठीक है कह कर वे सभी जानवर पानी की ओर बढ़ने लगे आगे एक नदी मिली जहां बहुत ही पानी था सभी जानवरों ने वहां पानी पिया. पानी पीने के बाद वापस होते समय उन्होंने झंडा उस नदी के किनारे लगा दिया. ताकि सभी जीव जंतु को पानी का पता लग सके और सभी को इस भीषण गर्मी में पानी मिल सके.

कुमारी प्रिया राजपूत, कक्षा -आठवीं, शाला-शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

कहानी तीन दोस्तों की

एक जंगल में हाथी,बंदर और ऊॅंट तीनों दोस्त रहते थे.उन तीनों में गहरी मित्रता थी.जहाँ भी जाते,तीनों एक साथ रहते,साथ मिलकर भोजन करतेऔर जंगल में मौज मस्ती करते रहते थे.

एक दिन बंदर ने देखा कि जंगल में कुछ जानवर दौड़ लगा रहे हैं.तभी बंदर को मस्ती सूझी.उन्होंने जल्दी से हाथी और ऊॅंट को बुलाकर कहा-"चलो मैं आज तुम दोनों का दौड़ का खेल कराऊॅंगा.दौड़ में कौन बाजी मारता है देखते हैं.जो दौड़ में पहला आएगा,वह इस जंगल का राजा होगा.दोनों उनकी बातों को मान गए.

अगले दिन हाथी और ऊॅंट को एक साथ खड़े कर बंदर,झंडा दिखाकर दोनों का दौड़ प्रारंभ किया.दोनों हिस्ट-पुस्ट थे.दौड़ में प्रथम आने के लिए सामने में जो भी चीज आता था.उसे रौंदते हुए आगे बढ़ते गए. तभी अचानक ऊॅंट के पैर फिसल गया.फिसलने के कारण उनके पैर में मोच आ गई और वह चलने में असमर्थ हो गया.हाथी भी अपने साथी ऊॅंट को चलने में असमर्थ देखकर,जीत का प्रवाह ना करते हुए दौड़ के खेल को समाप्त किया.हाथीअपने साथी ऊॅंट को कहा-दोस्त, इस खेल में तुम आगे थे.आपकी पैर में मोच आने के कारण,आप पीछे हो गए.इसलिए मैं जंगल का राजा आपको बनाता हूँ.तभी ऊॅंट कहते हैं-नहीं भाई,खेल तो खेल ही होता है.प्रथम तो आप ही आए हो.इस कारण जंगल का राजा आप ही बनोगे.उन दोनों की बातों को बंदर सुनकर कहता है- आप दोनों की दोस्ती अटूट है.एक दूसरे के प्रति त्याग और समर्पण की भावना देखा गया. इस कारण आप दोनों जंगल के राजा हुए. हाथी और ऊॅंट,बंदर की फैसले का स्वागत किया.तीनों साथी-खुशी से जंगल में अपना जीवन बिताने लगे.

साथियों,हमें भी हाथी और ऊॅंट की तरह खेल में जीत के परवाह न करते हुए खेल की भावना से खेल खेलना चाहिए और अपने साथियों के प्रति त्याग एवं समर्पण का भाव होना चाहिए.यही मित्र धर्म है.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

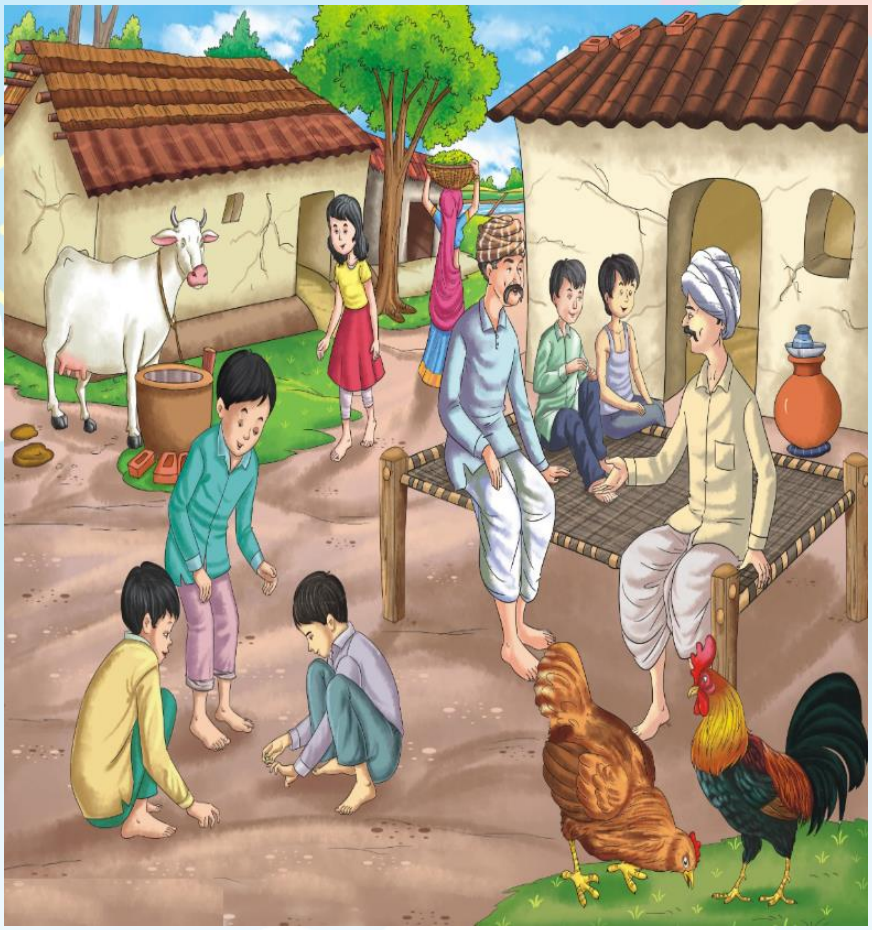

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल kilolmagazine@gmail.com पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

कठोर परिश्रम सफ़लता की कुंजी है

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

भारत में आदि काल से ही बड़े बुजुर्गों, ज्ञानियों, विद्वानों के वार्तालाप में अनेक कहावतें कही सुनी जाती रही हैं. इन कहावतों में से हैं कि जिंदगी कबड्डी के खेल के समान है, सफलता की लाइन पार करते ही लोग टाँग खींचने लगते हैं, सुख दुख जीवन के दो पहिए हैं जिनसे जिंदगी की गाड़ी चलती है, दुःख बिना हृदय निर्मल नहीं परिश्रम बिना विकास नहीं, संवाद ही समस्या का समाधान है, इत्यादि. इन पंक्तियों को हमने कई बार सुना होगा. परंतु हम इन्हें मात्र पंक्तियों या जुमले तक ही सीमित रखते हैं. इन्हें अपने जीवन में ढालने की या उनके उपयोग की कोशिश बहुत कम लोग कर पाते हैं. वर्तमान पीढ़ी की सोच बिना परिश्रम किए सफलता की ओर बढ़ने की है. हम अपने आसपास में, समाज, शहर, राष्ट्र में ऐसी सोच देखते हैं कि हर व्यक्ति सुख और बैठे-बिठाए सबकुछ पाने की चाह में मस्त रहता है. जबकि दुःखों से मुकाबला करने और परिश्रम के प्रति सकारात्मक सोच को अधिक महत्व देना आज की परिस्थितियों और माहौल के हिसाब से अधिक उचित है.

अगर हम वर्तमान आधुनिक परिस्थितियों के अनुसार परिश्रम की बात करें तो अब गए वह दिन जब परिश्रम केवल शारीरिक परिश्रम होता था अब, जमाना बदल गया है. शारीरिक व मानसीक रूप से किया गया काम परिश्रम कहलाता है. अपना काम हम अपनी इच्छा के अनुसार चुनते है और अपने उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं. पहले श्रम का मतलब सिर्फ शारीरिक श्रम होता था, जो मजदूर वर्ग करता था. लेकिन अब ऐसा नहीं है. डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, राजनीतिज्ञ,अभिनेता अभिनेत्री, टीचर, सरकारी व निजी दफ्तरों में काम करने वाला हर व्यक्ति श्रम करता है. कामयाब व्यक्ति के जीवन से हम परिश्रम के बारे में अधिक जान

सकते है, उनके जीवन से हमें इसकी सही परिभाषा समझ आती है, जो व्यक्ति श्रम को अपने जीवन में अपनाता है, और सफलता का स्वाद चखता है. यही आदर्श हम अपने जीवन में उतार कर सफल हो सकते है. परिश्रम के बिना कोई भी कर्म सफल नही हो सकता. किसी भी कार्य को सफल बनाने के लिए परिश्रम तो करना ही पड़ता है. परिणाम से पता चलता है कि परिश्रम कितना किया गया है. उसके अनुसार ही कर्म सामने आता है. वरना शेखचिल्ली की तरह सिर्फ ख्याली पुलाव ही पकाए जा सकते हैं. परिश्रम मनुष्य की जिंदगी का अहम हिस्सा है, जिस पर ही मनुष्य की जिंदगी का पहिया आगे बढ़ता है, अगर मनुष्य मेहनत करना छोड़ देता है तो उसका विकास रुक जाता है, अर्थात उसकी जिंदगी नर्क के समान हो जाती है. परिश्रम से ही मनुष्य अपनी जिंदगी के लिए ज़रूरी सभी कामों को कर पाता है.परिश्रम से बदलो अपना भाग्य, भाग्य के भरोसे कभी मत रहो,जो लोग परिश्रम नहीं करते और सफलता नहीं प्राप्त होने पर अपने भाग्य को कोसते रहते हैं, ऐसे लोग हमेशा ही दुःखी रहते हैं और अपने जीवन में तमाम कठिनाइयों का सामना करते हैं. क्योंकि भाग्य की वजह से मनुष्य को सफलता तो मिल सकती है, लेकिन यह स्थाई नहीं होती, जबकि परिश्रम कर हासिल की गई सफलता स्थाई होती है और मेहनत के बाद सफलता हासिल करने की ख़ुशी और इसका महत्व भी अलग होता है. परिश्रम के बिना भाग्य सिद्ध नहीं होता है, इसको संस्कृत के कई श्लोकों द्वारा बखूबी से समझाया गया है.

हमारे आध्यात्मिक व पौराणिक साहित्य में भी आया है कि दुःख ही सुखों की प्रथम सीढ़ी है व दुःखों से मुकाबला करने पर ही सुखों की प्राप्ति होती है इसीलिए सुखों की चाहत रखने वालों को हमेशा कठोर सफलता और सुख पाने के लिए जांबाज़ी से दुःखों का मुकाबला कर सुखों को का रास्ता तलाशने की आवश्यकता है. सकारात्मकता से आगे बढ़ना होगा. उपरोक्त पूरे विवरण से हमें ये सीख मिलती हैं कि हम सभी को अपने जिंदगी में परिश्रम और सुख दुःख कर्म के महत्व को समझना चाहिए, क्योंकि कर्म करके ही हम अपने जीवन में सुखी रह सकते हैं और अपने सपनों को हकीकत में बदल सकते हैं. ईमानदार, परिश्रमी व्यक्ति न सिर्फ अपने कर्म से अपना भाग्य बदल लेता है और सफलता हासिल करता है बल्कि वह अपने परिवार, देश के विकास की उन्नति में भी सहायता करता है.अर्थात, दुःख और परिश्रम मनुष्य की जिंदगी का अहम हिस्सा है, जिस पर ही मनुष्य की जिंदगी का पहिया आगे बढ़ता है, अगर मनुष्य मेहनत करना छोड़ देता है और सुखों को भोगने में ही मस्त रहता है तो उसका विकास रुक जाता है, अर्थात उसकी जिंदगी नर्क के सामान हो जाती है. परिश्रम और दुःखों के आधार पर सीखने से ही मनुष्य अपने जिंदगी के लिए जरूरी सभी कामों को कर पाता है. शास्त्रों में भी आया है कि

अलसस्य कुतो विद्या,अविद्यस्य कुतो धनम्.

अधनस्य कुतो मित्रं,अमित्रस्य कुतः सुखम् अर्थात आलस्य की वजह से ही यह दुनिया गरीब,निर्धन और अज्ञानी पुरुषों से भरी हुई है.

दुःख और परिश्रम का मानव जीवन में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है. दुःख बिना हृदय निर्मल नहीं और परिश्रम बिना विकास नहीं हो सकता. कठोर परिश्रम ही सफलता की कुंजी है. जांबाज़ी से दुखों का मुकाबला कर सफलता की सीढ़ी पर पहुँचने का जज्बा हर इंसान के लिए जरूरी है. वर्तमान जीवन में तो हम सभी को इस ओर विशेष ध्यान देने और इस संबंध में जन जागरण अभियान और जनजागृति लाने की बहुत जरूरत है.

*****

हिंदुस्तान में नवाचार स्टार्टअप में सफ़लता है

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

हिंदुस्तान नवाचारों का उपयोग करके
ऐसी तकसनीकी विकसित करता है
जनता के लिए सस्ती सुगम सहजता लाए
ऐसा नवाचार विज्ञान नए भारत में लाता है

उन्नत भारत अभियान में नवाचार भाता है
उन्नत ग्राम उन्नत शहर में विज्ञान लाकर
नमामि गंगे का अभियान चलाना है
नवाचार सभी के जीवनमें सहजता लाता है

रचनात्मक नवाचार से जुड़ा विज्ञान
आम आदमी के लिए जीवन में सहजता लाता है
डिजिटल भारत मेक इन इंडिया
जैसी थीम जनहित में लाता है

भारत वैज्ञानिक दृष्टिकोण के फलक को
विकसित करने नए आयाम बनाता है
सतत विकास और नए तकनीकी नवाचारों
के माध्यम के साथ उन्नति दिखाता है

*****

प्रकृति “माँ”

रचनाकार- ASTHA PANDEY ‘ VI’, SAGES TARBAHAR BILASPUR

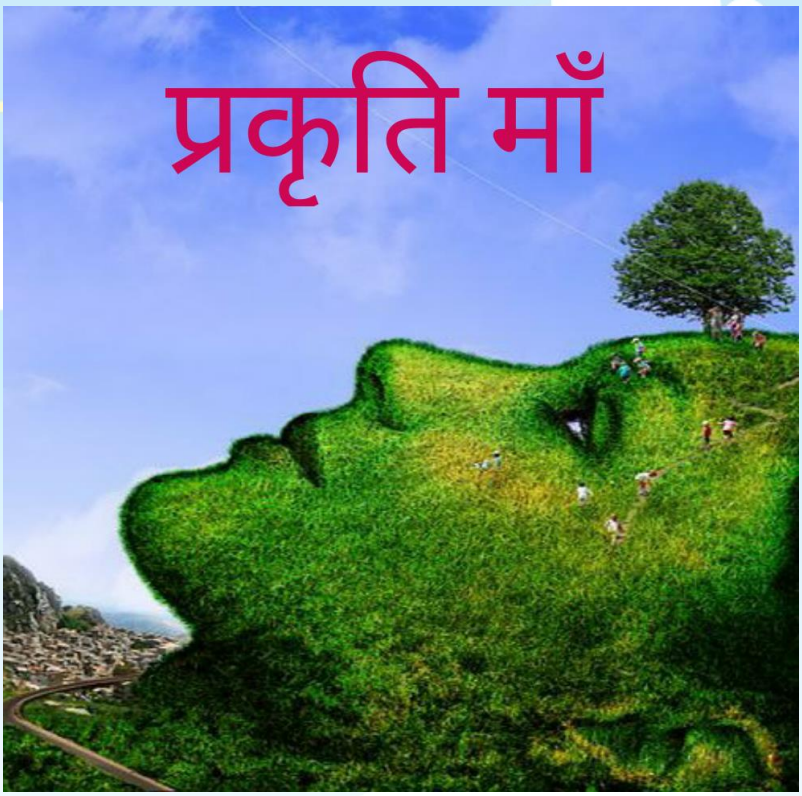

हे माँ प्रकृति, हमें माफ करना
तुझे ही हमारा, है इंसाफ करना
सब कुछ तो मां हमको तूने दिया
बदले में तूमने ना कुछ भी लिया
धरती भी ये तेरी, अंबर भी तेरा
तेरी हवा है, ये सागर भी तेरा

तेरा हर पत्ता है तेरी हर डाली
तेरा ही तो सब है, तेरी हरियाली
हम तो गए हैं, अब खुद में ही खो
चिंता माँ तेरी,किसी को ना हो
तरक्की के नाम, हमने ये क्या किया
प्रदूषण ही तेरी झोली में भर दिया

ना फिक्र, किसी को पड़ी कल की
इस हवा की ना वन की ना ही जल की
सागर को हमने है मैला किया
चारो ओर, हमने धुआं भर दिया
अब तो हैं, बस तुझसे इतना ही कहना
नादानी हमारी, तू और अब ना सहना

हमने फैलाई है ये गंदगी
इसे तो हमे ही है, अब साफ करना

हे माँ प्रकृति हमें माफ करना
तुझे ही हमारा है इंसाफ करना

*****

भाई भाई

रचनाकार- ASTHA PANDEY, CLASS - 6, SCHOOL NAME - SWAMI ATMANAND SHEIKH GAFFAR GOVERNMENT ENGLISH MEDIUM SCHOOL TARBAHAR

हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई
ये सभी है भाई भाई
व्यर्थ ही क्यों ये लड़ते झगड़ते
व्यर्थ ही क्यों ये ईर्ष्या करतें
एक खून है एक ही जान
भारत देश का ये सम्मान
व्यर्थ ही ना तुम लड़ा करो
आपस में ना तुम लड़ा करो
मिलजुल कर तुम एक बनों
भारत की तुम शक्ति बनों.

*****

स्वच्छता

रचनाकार- कु. सुषमा बग्गा, रायपुर

दो एकम दो
हाथ रगड़ कर धो
दो दूनी चार
सफाई से कर प्यार

दो तिया छः
साफ कपड़ों में रह,
दो चौक आठ
सफाई का पढ़ पाठ.

दो पंजे दस
नाख़ून साफ रख
दो छक्के बारह
स्वच्छ घर हमारा

दो सत्ते चौदह
घर में लगाओ पौधा
दो अठे सोलह
साफ रखों चोला

दो नमें अट्ठारह,
स्वच्छता का नारा
दो दहाई बीस
याद कर गीत.

*****

क्रोध अहंकार दिखावा छोड़

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

क्रोध अहंकार दिखावा छोड़
सहज़ता जोड़ो क्रोध के उफ़ान में
अपराध हिंसा हो जाती है
घर बार जिंदगी तबाह हो जाती है

अपने आपको सहज़ता से जोड़ो
सहज़ता में संस्कार उगते हैं
सौद्राहता प्रेम वात्सल्य पनपता है
मां लक्ष्मी सरस्वती का आशीर्वाद बरसता है

जिंदगी की दुर्गति की शुरुवात
अहंकार रूपी विकार से होती है
अहंकार दिख़ाने को छोड़ो, परिणाम
मानसिक असंतुलन की शुरुआत होती है

जिंदगी को वात्सल्य रूपी सुयोग्य मंत्रों से जोड़ो
क्रोध रूपी विकार को छोड़ो
अपने, आपको विनम्रता से जोड़ो
इस मंत्र से भारत के हर व्यक्ति को जोड़ो

*****

चंदा मामा अब कुछ कहना

रचनाकार- अनिता मंदिलवार सपना

हर रात वही सपना देखे
यादें लेकर सो जायेगी.

सफेद और उज्जवल चाँदनी
लगते मोती आसमान की
नन्हा बालक देखता उसे
दिखे ज्यों ज्योति पुंज ज्ञान की

तारों संग वो यहाँ मिलकर
गीत कोई जरूर गायेगी
हर रात वही सपना देखे
यादें लेकर सो जायेगी.

भरे चंदा शीतल चाँदनी
रात का वह घनघोर साया
नीलगगन में असंख्य तारे
प्यारी छवि है न्यारी छाया

सोया है संग मुन्ना राजा
नहीं बदली कोई छायेगी
हर रात वही सपना देखे
यादें लेकर सो जायेगी.

खुश रहो का संकेत देते
सदैव ही तुम हँसते रहना
रोज रोज अब पुकारूँ तुम्हें
चंदा मामाअब कुछ कहना

चंदा के झूले पर चढ़कर
वही निंदिया फिर आयेगी
हर रात वही सपना देखे
यादें लेकर सो जायेगी.

*****

चंदा मामा

रचनाकार- अनिता मंदिलवार सपना

हे चंदा मामा ! फिर आयेंगे

सफेद उज्जवल चाँदनी
लगे आसमान की मोती
नन्हा बालक देखता तुझे
उसे पता है कल फिर आयेंगे

प्यारे प्यारे चंदा मामा
तेरी परछाई दिखे पानी में
दुआ मेरी है चमकता रहे तू
काली बदली भी घिर आयेंगे

रात का घनघोर साया
आकाश में चाँद जगमगाया
प्यारी छवि तेरी न्यारी छाया
गोल चकोर चंदा फिर आयेंगे

चाँद की शीतल चाँदनी
नीलगगन में चमके तारे
रोज रोज मैं तुम्हें पुकारूँ
यादें लेकर सो जायेंगे

सदा ही तुम हँसते रहते
खुश रहने का संकेत देते
हर रात मैं सपना देखूँ
तारे संग जगमगायेंगे

*****

चाँद

रचनाकार- अनिता मंदिलवार सपना

साँझ की बेला
पक्षियों का झुंड
पेड़ो के झुरमुट से
झाँकता कौन

छुप छुप खेले
बादलों की ओट से
कभी इधर कभी उधर
चाँद देखो

कैसे चमकता
जैसे कोई
मुखड़ा निखरता
इतने सलोने

तुम हो चंदा
मनमोहक कोई परिन्दा
नयना हटे न
तेरे मुखड़े से

तभी तो किया तुझे
कैमरे में कैद
तुम हो स्वच्छंद
चंदा मेरे

मुझको है पता
बादलों के पार
तेरी छवि है प्यारी
तुम अप्रतिम हो

छुप छुप खेले
चाँदनी संग
आँख मिचौली
ऐसे ही रहना
सबके दुलारे
चंदा प्यारे चंदा प्यारे.

*****

चंद्रयान 3 सफल लैंडिंग

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

विकसित भारत के शंखनाद का क्षण हमने देखे
नए भारत के जयघोष का पल हमने देखे
इतिहास बनते देख जीवन धन्य होते देखे
मुश्किलों के महासागर को पार करते देखे

जीत के चंद्रपथ पर चलने को देखें
अनेक मानवीय धड़कनों के सामर्थ्य को देखें
नई ऊर्जा नए इतिहास को देखें
नई चेतना नए भाग्य को देखें

अमृतकाल की प्रथम प्रभा को देखें
भारत के उदयमान भाग्य को देखें
सफ़लता की अमृतवर्षा को देखें
धरती पर संकल्प कर चांद पर साकार होते देखे

*****

चन्द्रयान -3

रचनाकार- श्रीमती सालिनी कश्यप, बलौदाबाजार

बचपन में सुना था चन्दा है मामा,
आज इसे सही मान रहा जमाना.
जब धरती माँ ने चन्दा मामा को राखी पहनाया,
ऐसे लग रहा मामा ने खुद इस रिश्ते को निभाया.
अब तीज का त्यौहार है आ रहा,
जिसमें उपहार स्वरूप विक्रम तसवीरें है ला रहा.
हो गया दुनिया में भारत का नाम,
इसके लिये सभी वैज्ञानिकों को सलाम.
इसरो की मेहनत है रंग लाई,
आज पूरे देशवासियों की आंखें है भर आई.
खुशी इतनी है जिसका नही कोई ठिकाना,
भारत की ताकत को पूरी दुनिया ने है माना.
सभी देशों ने झंडा में चाँद बनाया,
भारत ने तो चाँद पे ही झंडा लहराया.

आज पूरे भारत के लिए है गर्व का दिन,
इतिहास ऐसे ही बनता है एक दिन.
आज भारत ने भी दुनिया में इतिहास बनाया,
जब चन्द्रयान-3 ने भारत का झंडा चाँद पर लहराया.

*****

चंद्रयान -3

रचनाकार- राधेश्याम सिंह बैस, बेमेतरा

दाई क़े मान बढ़ाये बर, इसरो क़े चमत्कार आइस हे .
कतका दिन क़े मेहनत ले, सम्मान अपन ल पाइस हे.
दूरिहा ले चंदा ममा क़े दरसन, बचपन ले जवानी बीतगे.
करत रहेंन ओखर कल्पना,जम्मो क़े संका है घलोक मीटगे.
सुग्घर हे नाव चंद्रयान,अंगद सरिक विक्रम क़े गोड़ जमगे.
देखत रहिस जग टक-टकी लगाये, येखर ले हम जम्मो क़े मन खिलगे.
रिसाय लइका ल मनाये बर, चंदा ल खिलौना बनाय.
जा पहुचें ममा क़े घर म, सन्देश ल सुन क़े दुनियाँ है सकपकाय.
अवइया दू चार दिन म, पुन्नी राँखी क़े त्यौहार.
अभरिस भाचा धर क़े राँखी, मिलगे चंदा ममा ल बहिनी क़े प्यार.
तनगे भारत माता क़े सीना, लेके तिरंगा उहा पंहुचाइस.

समय बखत म जा धमकीस, पूरा देश है अपन सपना ल पाइस.
किसम -किसम क़े जानबोन, ममा घर क़े जम्मो संसार ल.
सोचत रहेन बिकट दिन ले, हमु जातेंन चंदा क़े पार ल.
देखे सपना होइस पूरा, हमर वैज्ञानिक क़े योगदान क़े
नइ हाबे भारत ह पाछू,चलबों मुड़ी उठा अउ सीना तान क़े.

*****

वाणी एक अनमोल रत्न है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

अंतरराष्ट्रीय स्तरपर कुछ दशकों से हम प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से देखते और सुनते आ रहे हैं कि फलां देश के बीच वन टू वन, ग्रुप वॉइस डायलॉग हुए जिसके दूरगामी सकारात्मक परिणाम निकलते हैं जिसका लाभ मानवीय जीवन में दशकों तक उठाया जाता है परंतु कुछ दिन पूर्व एक प्रवक्ता द्वारा एक डिबेट कार्यक्रम में दिए गए बयान टिप्पणी को लेकर दंगे, दंगों का माहौल और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नाराजगी व्यक्त की गई है और आज भी तीखे डिबेट जारी हैं जिससे माहौल को गर्म महसूस किया जा रहा है, प्रवक्ता को सस्पेंड किया गया है हालांकि उनका भी कुछ तर्क है परंतु हम उस विषय में न जाकर आज इस आर्टिकल के माध्यम से वाद विवाद से बचने मौन अस्त्र के प्रयोग पर चर्चा करेंगे.

साथियों कई बार राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तरपर ऐसी अनेक स्थितियां आती है जब किसी पक्ष का एक बयान, बोली, शाब्दिक वार्तालाप, निजी विचार, डिबेट में विचार, सुझाव दूसरे पक्ष को शाब्दिक बाण के रूप में लग जाता है और वही विवाद की जड़ हो जाता है जिसके परिणाम स्वरूप हानियों का अंत नहीं दिखता है इसलिए किसी ने सच ही कहा है कि वाणी एक अनमोल रत्न है, हर बात को बोलने से पहले उसकी सटीकता को रेखांकित करना वर्तमान समय की मांग है क्योंकि शाब्दिक बाणों से जो दिलों पर घाव होते हैं वह तीक्ष्ण हथियार से कई गुना अधिक घातक होते हैं इसीलिए वाणी का उपयोग सदैव सटीकता से और कम करना चाहिए. मौन यह मानवीय जीवन में वाद विवाद से बचने का कारगर और सटीक अस्त्र भी है जिसका उपयोग दुनिया के सबसे बड़े पदों पर बैठे महानुभाव से लेकर अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति को करना आवश्यक है.

साथियों बात अगर हम मौन के लाभों, फायदों की करें तो (1) वाद विवाद से बचने का कारगर उपाय है (2) व्यक्तित्व में निखार लाता है (3) दिमाग तेज काम करता है.(4) अनर्गल बातों में मन नहीं भटकता (5) तनाव दूर होता है (6) सोचने समझने की शक्ति का विकास होता है (7) ऊर्जा का विकास होता है (8) मुख से गलत अनर्गल वाणी नहीं निकलती (9) समाज में प्रतिष्ठा में निखार होता है (10) क्रोध पर नियंत्रण करने का सटीक उपाय है.

साथियों बात अगर हम धार्मिक साहित्य ग्रंथों में मौन और मौनव्रत के महत्व की करें तो, गीता में मानस तप के प्रकरण में एक सूत्र वाक्य आया है, वह है मौनमात्म विनिग्रहः, भाव संशुद्धिरित्येतत्तपो मानसः उच्यते. अर्थात मन को शुद्ध करने के लिए मानसिक तप की आवश्यकता होती है. मानसिक तप का प्रधान अंग मौनव्रत है. नारद ने प. उप. में इसी ब्रह्मनिष्ठा के प्रकरण में कहा है न कुर्यात् वदेत्किंचित् अर्थात् ब्रह्म-विकासी को मौन व्रत करना आवश्यक है. उपनिषदों में 'अवाकी' शब्द मौनव्रत को प्रकाश देता है. धर्मशास्त्र में कर्मांग में भी मौनव्रत बताया है. उच्चारे जप काले च षट्सुमौनं समाचरेत. जपकाल, भोजनकाल, स्नान, शौचकर्म में मौन रहना चाहिए. आचार प्रकरण में आता है 'यावदुष्णं भवेदन्नं या वदश्नन्ति वाग्यतः पितरस्नाव दस्मिनियावन्नोक्ताः हविर्गुणाः. भोजन करते समय जब तक मौनपूर्वक भोजन करो तब वह भोजन देवता पितरों को पहुंचता है. इसी पर सनक जुजात गीता में कहा है 'वाचोवेगं मनसः क्रोध वेग एतान् वेगान् योसहमे.' इसका अर्थ है कि वाणी के, मन के, इंद्रियों के वेग को जो रोकता है वह ऋषि और ब्राह्मण है. चरक ऋषि ने विमानस्थान में आरोग्य की शिक्षा में कहा है 'काले हितमितवादी'. जब कहने का अवसर हो तब संक्षिप्त शब्द और हितप्रद बात बोले.

साथियों बात अगर हम मौन को गहराई से समझने की करें तो, मौन का अर्थ है अपनी शक्ति का व्यय न करना. मनुष्य जैसे अन्य इन्द्रियों से अपनी शक्ति खर्च करता है, वैसे बोलने से भी अपनी बहुत शक्ति व्यय करता है. आजकल देखोगे तो छोटे बालक तथा बालिकाएँ भी कितना वाद विवाद करते हैं. उन्हें इसकी पहचान ही नहीं है कि हमें जो कुछ बोलना है, उससे अधिक तो नहीं बोलते और जो कुछ बोलते हैं वह ऐसा तो नहीं है जो दूसरे को अच्छा न लगे या दूसरे के मन में दुःख उत्पन्न करे. कहते हैं कि तलवार का घाव तो भर जाता है किंतु जीभ से कड़वे शब्द कहने पर जो घाव होता है, वह मिटने वाला नहीं है. इसलिए सदैव सोच-समझकर बोलना चाहिए. जितना हो सके उतना मौन रहना चाहिए. महात्मा गांधी प्रति सोमवार को मौन व्रत रखते थे. मौन धारण करने की बड़ी महिमा है. इसे धारण करोगे तो बहुत लाभ प्राप्त करोगे.

साथियों बात अगर हम मौन और गप्पे लड़ाने की तुलनात्मक व्याख्या की करें तो, कुछ लोग खाने-सोने तथा क्लब सोसाइटियों में गप्प लड़ाने के अभ्यस्त हो गए हैं. उनका विश्वास यह रहता है कि गपशप करने से मनोविनोद हो जाता है, किंतु यह बात सर्वथा असत्य है. व्यर्थ गप से अपनी वाणी की कुशलता का भ्रामक ज्ञान लोगों को होता है. गप्प करने से वाणी का तेज नष्ट हो जाता है. बकवादी का वेदमयी वाणी पर भी कम विश्वास होता है. गप्प से मन प्रसन्न रहेगा यह भ्रममात्र है. गप्प का परिणाम मन को खेदजनक बनाना है. यह शांतिकारक वाणी का दोष है. इसलिए परम शांति चाहनेवालों को मौनव्रत पर ध्यान देना चाहिए.

साथियों बात अगर हम मौन के महत्व की करें तो, मौन का जीवन मैं बहुत महत्व है, एक बहुत पुरानी कहावत है - एक चुप , सौ सुख!!कई बार मौन रहना किसी तनावपूर्ण स्थिति का समाधान बन जाता है, शब्दरूपी तीर एक बार जब कमान से निकल जाता है तो लौटकर नहीं आता , इसलिए जब शब्दों पर नियंत्रण न हो तो मौन रहने मैं ही भलाई होती है. मौन किसी विवादित स्थिति का शांतिपूर्ण हल है, मौन रहना एक भावनात्मक नियंत्रण के साथ साथ अभिव्यक्ति भी है. यह एक भाषा है जिसके माध्यम से अनर्गल विवाद से स्वयं को बचा सकते है. मौन को मीठी चुप्पी भी कहा गया है चूंकि वाचाल होना घातक सिद्ध हो जाता है जिह्वा से निकली अप्रिय शब्द तीर समान होते है वह व्यक्ति के साथ वातावरण को भी चोट पहुंचाता हैवी मौन रहना सेविंग अकाउंट हैवी इससे शारीरिक उर्जा को आसानी से बचाकर अन्य उपयोगी समय मे खर्च करने सेवा मानव कल्याण होगा

साथियों मौन रहना एक व्रत है, जिससे सहनशीलता का विकास होता है . मौन एक व्यायाम है बचपन मे बच्चो को मुहँ पर अंगुली रखकर चुप रहने का प्रयास करवाया जाता है . व्यवहारिक तौर पर क्रोध पर नियंत्रण करने का सही तरीका चुप रहना है क्षण भर मे क्रोध खत्म हो जायेगा. मौन रहना एक साधना है इस साधना सेवा मानसिक शांति मिलती है और सकारात्मक विचार दिमाग मे आते हैं पर यह कभी कभी परिस्थिति को उलझा भी देता है मौन कभी-कभी हानिकारक भी हो जाता है सामने वाला व्यक्ति परिस्थिति का सही मूल्यांकन नही कर पाता है अतिशयोक्ति तो सभी जगह है.

साथियो हम कम बोलें, सारगर्भित बोलें, सुमधुर और हित से भरा बोलें. मानवी शक्तियों को हरने वाली निंदा, ईर्ष्या, चुगली, झूठ, कपट इन गंदी आदतों से बचें और मौन व सारगर्भिता का सेवन करें. दीपक जलता है तो बत्ती और तेल जलता है. इसी तरह जितना अधिक बोला जाता है, अंदर की शक्ति उतनी ही नष्ट होती है.

मौन की कोई भाषा नहीं
ना ही उसकी कोई परिभाषा
मौन से कभी कोई जीता नहीं
बहुत शक्तिशाली है भाषा
मौन की गूंज को सब समझते हैं
स्पष्ट अंदाज में महसूस करते हैं

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि चुप रहना शाब्दिक बाणों से अधिक तीखा प्रहार. वाणी एक अनमोल रत्न है. हर बात को बोलने से पहले उसकी सटीकता को रेखांकित करना वर्तमान समय की मांग है. शब्द बाणों से जो दिल पर घाव होते हैं वह तीक्ष्ण हथियारों से कई गुना अधिक घातक होते हैं वाणी का उपयोग सदैव सटीक और कम करना चाहिए.

*****

तीन दोस्त

रचनाकार- कु.माही नाग, कक्षा-चौथी, शा.प्रा.शा. माहरापारा भैरमगढ़, जिला- बीजापुर

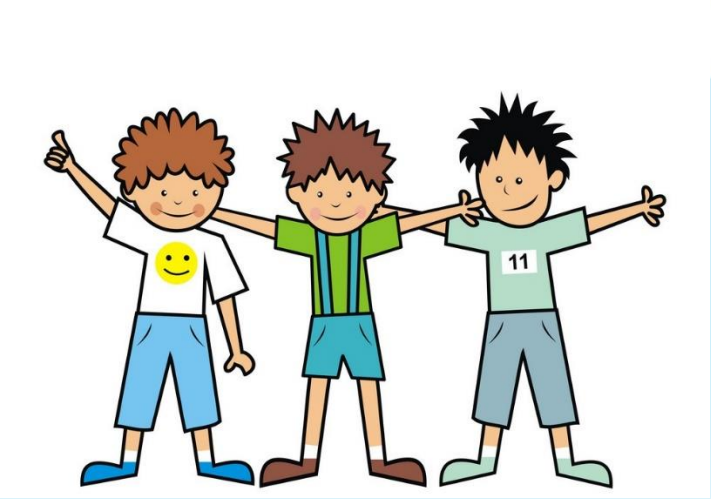

एक समय की बात है तीन दोस्त थे.एक का नाम चांद, दूसरे का नाम सूरज व तीसरे का नाम पृथ्वी था.एक दिन तीनों दोस्त घूमने जा रहे थे.रास्ते में उन्हें एक नदी मिला.नदी के किनारे एक बंदर बैठा था और वह रो रहा था.तीनों ने उसे देखकर पूछा कि बंदर भाई आप क्यों रो रहे हो? बंदर ने आंसू पोछते हुए कहा कि मेरी बेटी खो गई है, क्या आप लोग उसको ढूंढने में मेरी मदद करोगे? तब उसकी बात सुनकर तीनों दोस्तो ने कहा -हां जरूर !फिर सभी उसको ढूंढने गए.

ढूंढते-ढूंढते रात हो गई.तभी उन्हें रास्ते में एक झोपड़ी मिला.वहां पर एक छोटा सा बंदर खेल रहा था.जिसे देखकर चांद ने कहा कि वहां देखो क्या वह तुम्हारी बेटी है? तभी बंदर ने उस ओर देखा और कहा कि नहीं यह मेरी बेटी नहीं है. मेरी बेटी के नाक पर तो लाल निशान हैं.

फिर वे सभी आगे बढ़ गए चलते-चलते सुबह हो गई. तभी पृथ्वी ने कहा कि नदी के किनारे छह किले का पेड़ है कहीं वहां पर तो नहीं होगी? तब सूरज ने कहा चलो चलकर देखते हैं.सभी वहां पहुंचकर देखते हैं कि एक छोटी सी बंदर जिसके नाक पर लाल निशान था वह मजे से केले खा रही थी. तब बंदर ने खुश होकर कहा- हां यही मेरी बेटी है. उसकी बात सुनकर सभी खुश हो गये और ख़ुशी-खुशी उनकी बेटी के साथ सेल्फी लिए और वापस घर आ गए.

*****

छत्तीसगढ़ी जनऊला

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

01- रहिथे बादर के ओ पार। सूरुज चंदा के घर द्वार॥
दिखथे नीला-नीला रंग। लगथे जइसे हावय संग॥

02- लकलक-लकलक बरते जाय। लाली करिया लपट उठाय॥
येखर ताकत सबो डराय। जेला पावय राख बनाय॥

03- जिनगी खातिर अमरित मान। जीव जगत के बसथे प्रान॥
भाप, बरफ येहा बन जाय। ऊपर ले खाल्हे बोहाय॥

04- दिखय नहीं पर चलथे जोर। सरसर-सरसर करथे शोर॥
जीव जगत के सिरतों आस। येखर बल मा सबके साँस॥

05- गोल-गोल मैं घूमत जाँव। बइठ सकँव नइ एक्के ठाँव॥
दाई कहिथे मोला संसार। रखँय तभो तरपौंरी पार॥

06- धरती के ये संग सहाय। ढेला, फुतका जघा कहाय॥
दुनिया भर ला ये उपजाय। आखिर अपने संग मिलाय॥

07- बड़े बिहनिया येहा आय। संझौती बेरा मा जाय॥
येखर संगे संग अँजोर। नइ ते अँधियारी घोर॥

08- सरी जगत के करथे सैर। भुँइयाँ मा नइ राखय पैर॥
दिन मा सोवय, जागय रात। करय अँजोरी रतिहा घात॥

09- गिनत-गिनत मनखे थक जाँय। बगरय बादर कहाँ समाँय॥
रतिहाकुन मा इन टिमटाम। बोलव झटपट का हे नाम॥

10- ना भुँइया मा माढ़े भार। ना ऊपर मा रहय सवार॥
करै अँजोरी अउ अँधियार। कभू बरसजय मूसलधार॥

अगास, आगी, पानी, हवा, धरती, माटी सूरुज, चंदा, चँदैनी, बादर

*****

क्रांति गीत

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

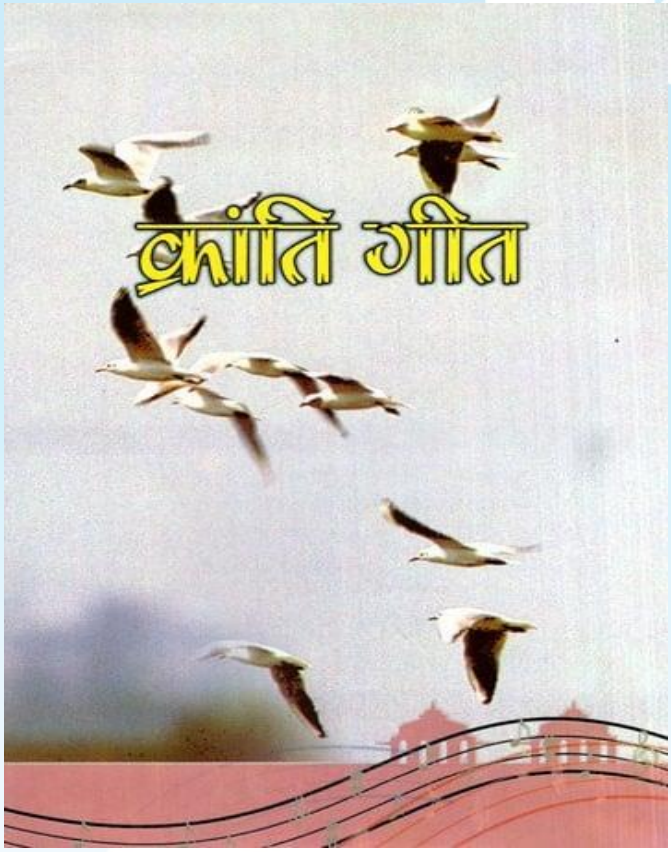

अब हमें चाहिए क्रांति.
दुःख और पीड़ा से शांति.
अब ना कोई, बेबस होगा.
अब ना कोई, अकेला रहेगा.
मिलकर सभी काम करेंगे.
जग में ऊँचा नाम करेंगे.
मिट जाएगी मन की भ्रांति.
अब हमें चाहिए क्रांति.
दुःख और पीड़ा से शांति.
बहते आँसूओं को, पोंछना है.
गरीबों को गले, लगाना है.
अब ना कोई, बेसहारा होगा.

अब ना कोई, खामोश रहेगा.
सबके चेहरे में आएगी कांति.
अब हमें चाहिए क्रांति.
दुःख और पीड़ा से शांति.

*****

भारत बुलंदियां छूकर नए आयाम बनता है

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

भारत वैज्ञानिक दृष्टिकोण के फलक को
विकसित करने नए आयाम बनाता है
सतत विकास और नए तकनीकी नवाचारों
के माध्यम के साथ उन्नति दिखाता है

भारत नवाचारों का उपयोग करके
ऐसी तकनीकी विकसित करता है
जनता के लिए सस्ती सुगम सहजता लाए
ऐसा नवाचार विज्ञान नए भारत में लाता है

उन्नत भारत अभियान में नवाचार भाता है
उन्नत ग्राम उन्नत शहर में विज्ञान लाकर
नमामि गंगे का अभियान चलाना है
नवाचार हरआदमी के जीवन में सहजता लाता है

रचनात्मक नवाचार से जुड़ा विज्ञान
आम आदमीके जीवन में सहजता लाता है
डिजिटल भारत मेक इन इंडिया
जैसी थीम जनहित में लाता है

*****

रक्षाबंधन

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

दुकानों में सजी है रंग-बिरंगी रेशमी राखी.
नग-नगिनों, चंदन, मौली और मीनाकारी.
बाजार में दिखने लगी रक्षाबंधन की रौनक.
खरीदने आ रही हैं बहनें मन मगन सम्यक.

यह बंधन भाई-बहन के पवित्र प्यार का है.
जीवन पर्यंत रक्षा करने और दुलार का है.
चेहरे पर मुस्कान लिए आँखों में चमके नूर.
सफलता, उन्नति मिलेगी, बाधाएँ होंगी दूर.

सावन पूर्णिमा के दिन मनाएँगे श्रावणी पर्व.
भाई की कलाई में सुन्दर रक्षा सूत्र का दर्प.
माथे पर गोल तिलक है स्वीकृति का सूचक.
बहन को खुश रखने भाई बनेगा महारक्षक.

देवी लक्ष्मी ने राखी बाँधने की शुभारंभ की.
गरीब स्त्री की रूप धारण करके गमन की.
पाताल लोक में राखी बाँधी राजा बलि को.
वरदान माँग वापस लाई भगवान विष्णु को.

चक्र चलाते श्रीकृष्ण को उँगली में चोट लगी.
द्रौपदी ने साड़ी का पल्लू फाड़ कर बाँध दी.
कृष्ण ने कृष्णा को रक्षा करने का वचन दिया.
चीरहरण के समय लाज बचाई वचन निभाया.

*****

दीपक

रचनाकार- राधेश्याम सिंह बैस, बेमेतरा

दीपक की आवश्यकता अनेक, इस दिव्य दिवस की प्रकाश पर.
है महत्व भारी, बनता प्रभाव धरती से आकाश.
हुआ खेद तब दीपक को, जब इन पर उठता कथन.
संजोये प्राचीन संस्कृति को, जब करते लोग इन पर मंथन.

पीड़ा कितनी बार सहकर, अस्तित्व मे जब आता है.
तैयारी होती तब उनकी, कीमत सभी जब समझ पाता है.
जननी इनकी मिट्टी है, रहती मिट्टी रूप मे.
प्रकाश फैले दूर -दूर तक, उस समय जब अंधेरा रहे भयंकर कूप मे.

भरकर बोरे मे गधे की पीठ से, देते औजारो से कूट पीट.
कर दी जाती कण -कण अलग, बैठा दी जाती मेरी शीट.
डालकर पानी उसमे, मिल जाती मिश्रण से शांति.
गुँथा उसमे मै मैंदे की तरह,न आती किसी को विपत्ति.

चाक पर रख घुमाते, दिया जाता जब रूप मेरा.
कुम्हार अपने कुशलकरों से,विद्यमान रूप तुम मुझे उकेरा.
लगा अब हो दुखो का अंत, ढककर घासपुसो मे आग.
सहकर तप्त रहा दिनों तक, शेष बचा न कुछ भी पाग.

सहकर धूल धुँआ से,वेदना सही दिन -रात.
शांत होती जब अग्नि, रूप देखकर कहता क्या बात.
जलना है तो दीपक की तरह, महकों तो हो फूल.
कायाकल्प हो पत्थरो मे, विनय करें परिवार औऱ कुल.

*****

मेरी बहना

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

बँधी वो प्रीत की डोरी, कलाई याद आती है.
रसीले स्वाद हो जिसकी,मिठाई याद आती है.

कहूँ कैसे भला उसको, कि कितनी प्रीत है उससे.
कभी भाई बहन की ये, लड़ाई याद आती है.

नहीं ख्वाहिश अगर पूरी, जरा सी रूठ जाती थी.
रखे वो ख्याल जब मेरी,दवाई याद आती है.

कभी मैं खेल में हारा,चिढ़ाती औ सताती थी.
मगर हर जीत में मेरी,बधाई याद आती है.

बिना उसके यहाँ घर में, नहीं पल भी रहा जाता.
चली क्यों दूर वह मुझसे, जुदाई याद आती है.

*****

मनाने के साथ समझने होंगे रक्षा बंधन के मायने

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, Haryana

भाई-बहन का रिश्ता दुनिया के सभी रिश्तों में सबसे ऊपर है. हो भी न क्यों, भाई-बहन दुनिया के सच्चे मित्र और एक-दूसरे के मार्गदर्शक होते है. जब बहन शादी करके ससुराल चली जाती है और भाई नौकरी के लिए घर छोड़कर किसी दूसरे शहर चला जाता है तब महसूस होता है कि भाई-बहन का ये सर्वोत्तम रिश्ता कितना अनमोल है. सरहद पर खड़ा एक सैनिक भाई अपनी बहन को कितना याद करता है और बहनों की ऐसे वक़्त क्या दशा होती है इसके लिए शब्द नहीं है. रंग-बिरंगे धागे से बंधा ये पवित्र बंधन सदियों पहले से हमारी संस्कृति से बहुत ही गहराई के साथ जुड़ा हैं. यह पर्व उस अनमोल प्रेम का, भावनाओं का बंधन है जो भाई को सिर्फ अपनी बहन की नहीं बल्कि दुनिया की हर लड़की की रक्षा करने हेतु वचनबद्ध करता है. भाई-बहन के आपसी अपनत्व, स्नेह और कर्तव्य बंधन से जुड़ा त्योहार भाई-बहन के रिश्ते में नवीन ऊर्जा और मजबूती का प्रवाह करता है. बहनें इस दिन बहुत ही उत्साह के साथ अपने भाई की कलाई में राखी बांधने के लिए आतुर रहती हैं. जहां यह त्योहार बहन के लिए भाई के प्रति स्नेह को दर्शाता है तो वहीं यह भाई को उसके कर्तव्यों का बोध कराता है.

रक्षाबंधन भाई बहन के रिश्ते का त्योहार है, रक्षा का मतलब सुरक्षा और बंधन का मतलब बाध्य है. रक्षाबंधन के दिन बहने भगवान से अपने भाईयों की तरक्की के लिए भगवान से प्रार्थना करती है. राखी सामान्यतः बहनें भाई को ही बाँधती हैं परन्तु ब्राह्मणों, गुरुओं और परिवार में छोटी लड़कियों द्वारा सम्मानित सम्बंधियों (जैसे पुत्री द्वारा पिता को) भी बाँधी जाती है. वास्तव में ये त्योहार से रक्षा के साथ जुड़ा हुआ है, जो किसी की भी रक्षा करने को प्रतिबद्ध करता है. अगर इस पवित्र दिन अपनी बहन के साथ दुनिया की हर लड़की की रक्षा का वचन लिया जाए तो सही मायनों में इस त्योहार का उद्देश्य पूर्ण हो सकेगा. इस पावन त्योहार का अपना एक अलग स्वर्णिम इतिहास है, लेकिन बदलते समय के साथ बाकी रिश्तों की तरह इसमें भी बहुत से बदलाव आए हैं. जैसे-जैसे आधुनिकता हमारे मूल्यों और रिश्तों पर हावी होती जा रही है. संस्कृति में पतन के फलस्वरूप रिश्तों में मजबूती और प्रेम की जगह दिखावे ने ले ली है. आज के बदलते समय में इस त्योहार पर भी आधुनिकता हावी होने लगी है, तब से आज तक यह परंपरा तो चली आ रही है लेकिन कहीं न कहीं हम अपने मूल्यों को खोते जा रहे हैं.

रंग-बिरंगे धागों में अब अपनत्व की भावना और प्रेम की गर्माहट कम होने लगी है. एक समय में जिस तरह के उसूल और संवेदना राखी को लेकर थी शायद अब उनमें अब रुपयों के नाम की दीमक लगने लगी है फलस्वरूप

रिश्तों में प्रेम की जगह पैसे लेने लगे हैं. ऐसे में संस्कृति और मूल्यों को बचाने के लिए आज बहुत जरूरत है दायित्वों से बंधी राखी का सम्मान करने की. क्योंकि राखी का ये अनमोल रिश्ता महज कच्चे धागों की परंपरा भर नहीं है. लेन-देन की परंपरा में प्यार का कोई मूल्य भी नहीं है. बल्कि जहां लेन-देन की परंपरा होती है वहां प्यार तो टिक ही नहीं सकता, अटूट रिश्तें कैसे बन पाएंगे. इतिहास मे कृष्ण और द्रौपदी की कहानी प्रसिद्ध है, जिसमे युद्ध के दौरान श्री कृष्ण की उंगली घायल हो गई थी, श्री कृष्ण की घायल उंगली को द्रौपदी ने अपनी साड़ी मे से एक टुकड़ा बाँध दिया था, और इस उपकार के बदले श्री कृष्ण ने द्रौपदी को किसी भी संकट मे द्रौपदी की सहायता करने का वचन दिया था. रक्षा बंधन की कथाएं बताती हैं कि पहले खतरों के बीच फंसी बहन का साया जब भी भाई को पुकारता था, तो दुनिया की हर ताकत से लड़ कर भी भाई उसे सुरक्षा देने दौड़ पड़ता था और उसकी राखी का मान रखता था.

कहते हैं, मेवाड़ की रानी कर्मावती को बहादुरशाह द्वारा मेवाड़ पर हमला करने की पूर्व सूचना मिली. रानी लड़ने में असमर्थ थी अत: उसने मुगल बादशाह हुमायूँ को राखी भेज कर रक्षा की याचना की. हुमायूँ ने मुसलमान होते हुए भी राखी की लाज रखी और मेवाड़ पहुँच कर बहादुरशाह के विरुद्ध मेवाड़ की ओर से लड़ते हुए कर्मावती व उसके राज्य की रक्षा की. जब कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का वध किया तब उनकी तर्जनी में चोट आ गई. द्रौपदी ने उस समय अपनी साड़ी फाड़कर उनकी उँगली पर पट्टी बाँध दी. यह श्रावण मास की पूर्णिमा का दिन था. कृष्ण ने इस उपकार का बदला बाद में चीरहरण के समय उनकी साड़ी को बढ़ाकर चुकाया. कहते हैं परस्पर एक दूसरे की रक्षा और सहयोग की भावना रक्षाबन्धन के पर्व में यहीं से प्रारम्भ हुई. आज एक बार फिर भातृत्व की सीमाओं को बहन फिर चुनौती दे रही है, क्योंकि उसके उम्र का हर पड़ाव असुरक्षित है, उसकी इज्जत एवं अस्मिता को बार-बार नोचा जा रहा है.

लड़कों से ज्यादा बौद्धिक प्रतिभा होते हुए भी उसे ऊंची शिक्षा से वंचित रखा जाता है, क्योंकि आखिर उसे घर ही तो संभालना है. उसे नयी सभ्यता और नयी संस्कृति से अनजान रखा जाता है, ताकि वह भारतीय आदर्शों व सिद्धांतों से बगावत न कर बैठे. इन विपरीत हालातों में उसकी योग्यता, अधिकार, चिंतन और जीवन का हर सपना कसमसाते रहते हैं. इसलिए मेरा मानना है कि राखी के इस परम पावन पर्व पर भाइयों को ईमानदारी से पुनः अपनी बहन ही नहीं बल्कि संपूर्ण नारी जगत की सुरक्षा और सम्मान करने की, कसम लेने की अहम जरूरत है. तभी ये राखी का पावन पर्व सार्थक बन पड़ेगा और भाई-बहन का प्यार धरती पर शाश्वत रह पायेगा. यह पर्व भारतीय समाज में इतनी व्यापकता और गहराई से समाया हुआ है कि इसका सामाजिक महत्त्व तो है ही, धर्म, पुराण, इतिहास, साहित्य और फ़िल्में भी इससे अछूते नहीं हैं. रक्षाबन्धन पर्व सामाजिक और पारिवारिक एकबद्धता या एकसूत्रता का सांस्कृतिक उपाय रहा है.

लेकिन अब प्रेम रस में डूबें रंग-बिरंग धागों की जगह चांदी और सोने की राखियों ने ली तो सामाजिक व्यव्हार में कर्तव्यों को समझने के बजाय रिवाज को पूरा करने कि नौबत आई. प्रेम और सद्भावना की जगह दिखावे ने ले ली. तभी तो रक्षा-बंधन के दिन सुबह उठते ही हर किसी के स्टेटस पर बस रक्षाबंधन की तस्वीरें और वीडियो की भरमार होती है, अब बहनों की जगह ई-कॉमर्स साइट ऑनलाइन आर्डर लेकर राखी दिये गये पते पर पहुँचाती है. अगर हम सोशल मीडिया पर दिखावे की जगह असल जिंदगी में इन रिश्तों को प्रेमरुपी जल से सींचा जाए तो हमेशा परिवार में मजबूती बनी रहेगी. राखी के त्योहार का मतलब केवल बहन की दूसरों से रक्षा करना ही नहीं होता है बल्कि उसके अधिकारो और सपनों की रक्षा करना भी भाई का कर्तव्य होता है, लेकिन क्या सही मायनों में बहन की रक्षा हो पाती है. आज के समय में राखी के दायित्वों की रक्षा करना बेहद आवश्यक हो गया है.

राखी के दिन केवल अपनी बहन की रक्षा का संकल्प मात्र नहीं लेना चाहिए नहीं बल्कि संपूर्ण नारी जगत के मान-सम्मान और अधिकारों की रक्षा का संकल्प लेना चाहिए ताकि सही मायनों में राखी के दायित्वों का निर्वहन किया जा सके. रक्षाबंधन पर्व पर हमें देश व धर्म की रक्षा का संकल्प भी लेना चाहिए.

*****

भाई-बहन का पावन पर्व राखी

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

किसी की बहन नहीं है, किसी का ना भाई है.
राखी बाँधेगी कौन?, सूनी हाथ की कलाई है.

बाजार से रेशमी राखी, खरीद लाई है बहना.
थाली में सजा कर बैठी, प्रेम का सुंदर गहना.

सुबह से नहा कर, नए कपड़े पहन बैठा है भाई.
बार-बार, लगातार राह देख रहा है नजरें गड़ाई.

कैसे मनाऊँ मैं राखी?, किसका करूँ इंतजार?
दुःख में आँखों से बरस रही आँसूओं की धार.

बहन सोच रही सबके होते हैं भाई, मेरा क्यों नहीं?
किसे पुकार कर आवाज दूँ?, मन की बातें कही.

भाई बैठा है गुमसुम, उदास मन, सिसकियाँ लेते.
मेरा कोई नहीं है दुनिया में जो मुझे राखी बाँधते?

ये दिव्य रक्षा सूत्र भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक है.
अपनी बहन की सुरक्षा, साथ निभाने की सीख है.

पावन है, मनभावन है, रक्षाबंधन का यह त्यौहार.
सदियों तक अमर रहेगा, भाई-बहन का यह प्यार.

*****

विक्रम लैण्डर

रचनाकार- रुद्र प्रसाद शर्मा, रायगढ़

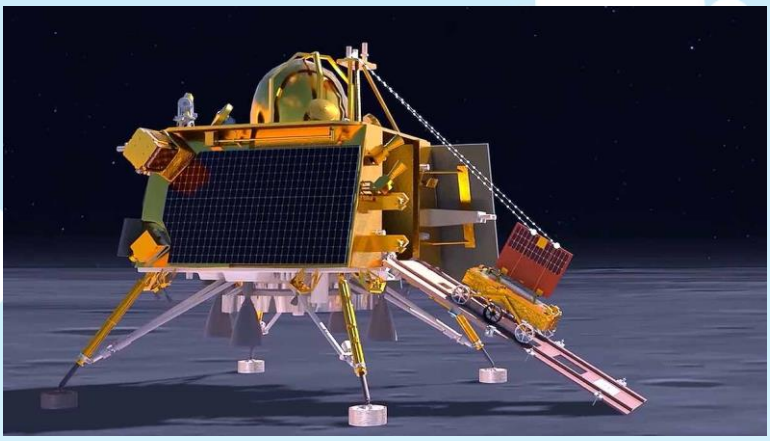

चन्दा म उतरिस विक्रम,
साराभाई ल करि के सन्मान.
दक्खिन ध्रुव म तिरंगा तानके,
माँ भारती के करिस गुणगान.

कहिस जोन ल ममा हो ममा,
कोन हर आय तुंहर नाम् ?
सुधाकर,हिमांशु, शशि, इन्दु,
सोम,निशानाथ, अंजोर के धाम.

दही, शंख, बरफ सहि उजियार,
भोला के मउर म बिराजमान्.
जनम होईस समुदर भीतर ले.
जोहार - जोहार कोटि प्रणाम्.

चन्दा ममा ल पूछिस विक्रम् ह,
कोन मेर हवय सूत के थान ?
बर रुख अउ खरहा कहाॅ हॅवयॅ ?
देखहूॅ गा ममा, कहिदेबे मोरे कान्.

ममा कहिन सुनव जी भांचा,
तुंहर प्रश्न के बिज्ञान, समाधान.
धुॅका नईंए पानी भी नईंए,
सुरूज अंजोर म मोर पहेचान.

इसरो करिस इसारा विक्रम ल,
निकरिस भीतर ले रोभर प्रज्ञान.
लेजर, कैमरा मसिन धरिके,
देखिस धातु - अधातु के खदान.

ममा घर म पानी, हवा नईंए,
कैसन बाॅहाचे ऊंखर परान?
विक्रम फिरिस पन्दरा दिन म,
अन्तरिक्ष ले बईठ के चन्द्रयान.

*****

नशा नाश का मूल है

रचनाकार- सागर कुमार शर्मा, राजिम

नशा नाश का मूल,सदा करता बरबादी.
फिर भी करते भूल,देश की है आबादी.
पाते हैं संताप, रोग से है घिर जाते.
होते जीवन मुक्त,प्राण भी देख गँवाते.

संकट में परिवार,कलह का कारण बनता.
करता दुर्व्यवहार,नशे में होकर ठनता.
मार पीट आक्रोश,नशा लाती बेहोशी.
रहे कुंद मस्तिष्क, देख फिर होता दोषी.

उजड़ रहा परिवार,नशा है रंग दिखाए.
फैल विकट संजाल,अरे अब कौन बचाए.
गुटका खैनी आज,युवा है नित्य चबाते.
पीकर मदिर शराब, खून भी ये कर जाते.

बच्चे मरते भूख, रहे जी चूल्हा ठंडा.
पत्नि संग विवाद,चले फिर लाठी डंडा.
डूबा होते कर्ज, नहीं जब लौटा पाते .
होते जब मजबूर,गले फंदा लटकाते..

अपराधों का मूल,यही कारण बन जाता.
लूट अरु बलात्कार,नशा ही सब करवाता.
होता विवेक शून्य,मनुज बस होश गँवाता.
डगमग जीवन नाव,नेक पथ बिसरा जाता.

करें नशा का त्याग,युवा अब देश बचाओ.
नूतन पीढ़ी साज,नया आदर्श बनाओ.
बनें विवेकानंद, करे गौरव सब तुम पर.
सागर का संदेश,नशे की छोड़ो डगर.

*****

विज़यी विश्व तिरंगा प्यारा - अब चांद है हमारा

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

सारी दुनिया की नजरें 23 अगस्त 2023 को संध्या 6.04 बजे भारत के चंद्रयान-3 के पर लगी हुई थीं. चाँद के दक्षिणी ध्रुव पर सफल लैंडिंग के साथ ही भारत ने इतिहास रच दिया. देशभर में चंद्रयान-3 की कामयाबी के जश्न का माहौल है. पूरे देश और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन की टीम को बीते चार साल से इस गौरवान्वित पल का इंतजार था. चाँद के दक्षिणी ध्रुप पर लैंड करने वाला भारत पहला देश बन गया है. इसके पीछे इसरो टीम की कड़ी मेहनत और प्रतिज्ञा है, जिन्होंने अपनी जिंदगी के चार साल चाँद पर तिरंगा फहराने में लगा दिए. उनकी जिंदगी के हर क्षण में मून मिशन रहा. जिस तरह भारत बहुत आत्मविश्वास के साथ 2019 में चंद्रयान-2 के असफल होने के कारणों पर ध्यान देकर, उनका अध्ययन कर, उससे सीख लेकर चंद्रयान-3 पर काम करने और उसके पूर्ण सफ़ल होने का प्रयास कर रहा था, अब यह उन्होंने करके दिखा दिया है. अब और भी आगे चाँद पर स्टेशन बनाने की तैयारी और सूरज के अध्ययन की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं हम हिंदुस्तानी. स्पेस क्षेत्र में भारत के नए-नए आयाम रचने का एक भारत अमेरिका साझा रोडमैप भी आर्टेमिस समझौते से बना है इसमें 25 देश पहले से ही हैं भारत 26 वाँ देश होगा. हालांकि आर्टेमिस में रूस और चीन शामिल नहीं है परंतु इसके बाद भी भारत को फायदा ही होने वाला है. भारत का आज स्पेस क्षेत्र में रुतबा बढ़ गया है. चाँद पर स्टेशन बनाने की तैयारी में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं हम हिंदुस्तानी. चंद्रयान-3 के साथ ही भारत चाँद के साउथ पोल पर यान उतारने वाला पहला देश बन गया है, जबकि चाँद के किसी भी हिस्से में सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला भारत दुनिया का चौथा देश है. भारत से पहले अमेरिका, सोवियत संघ (अभी रूस) और चीन ही चाँद पर सॉफ्ट लैंडिंग कर पाए हैं.

चंद्रयान-3 की सफल सॉफ्ट लैंडिंग को पीएम ने साउथ अफ्रीका से वर्चुअली देखा. सफल लैंडिंग के बाद पीएम ने इसरो और देश को बधाई दी.

उन्होंने कहा जब हम अपनी आँखों के सामने ऐसा इतिहास बनते हुए देखते हैं, तो जीवन धन्य हो जाता है. ऐसी ऐतिहासिक घटनाएँ, राष्ट्र जीवन की चिरंजीवी चेतना बन जाती हैं. ये पल अविस्मरणीय है. ये क्षण अभूतपूर्व है. ये क्षण, विकसित भारत के शंखनाद का है. ये क्षण, नए भारत के जयघोष का है. ये क्षण, मुश्किलों के महासागर को पार करने का है. ये क्षण, जीत के चंद्रपथ पर चलने का है. ये क्षण, 140 करोड़ धड़कनों के सामर्थ्य का है. ये क्षण, भारत में नई ऊर्जा, नया विश्वास, नई चेतना का है. ये क्षण, भारत के उदयीमान भाग्य के आह्वान का है. अमृतकाल की प्रथम प्रभा में सफलता की ये अमृतवर्षा हुई है. हमने धरती पर संकल्प लिया, और चाँद पर उसे साकार किया.

और हमारे वैज्ञानिक साथियों ने भी कहा कि इंडिया इज नाउ ऑन द मून आज हम अन्तरिक्ष में नए भारत की नई उड़ान के साक्षी बने हैं. हमारे वैज्ञानिकों के परिश्रम और प्रतिभा से भारत, चंद्रमा के उस दक्षिणी ध्रुव पर पहुँचा है, जहाँ आज तक दुनिया का कोई भी देश नहीं पहुँच सका है. अब आज के बाद से चाँद से जुड़े मिथक बदल जाएंगे, कथानक भी बदल जाएंगे, और नई पीढ़ी के लिए कहावतें भी बदल जाएंगी. भारत में तो हम सभी लोग धरती को माँ कहते हैं और चाँद को मामा बुलाते हैं. कभी कहा जाता था, चंदमामा बहुत दूर के हैं. अब एक दिन वो भी आएगा जब बच्चे कहा करेंगे- चंदा मामा बस एक टूर के हैं. मैं इस समय ब्रिक्स समिट में हिस्सा लेने के लिए दक्षिण अफ्रीका में हूँ. लेकिन, हर देशवासी की तरह मेरा मन चंद्रयान महा अभियान पर भी लगा हुआ था. नया इतिहास बनते ही हर भारतीय जश्न में डूब गया है, हर घर में उत्सव शुरू हो गया है. हृदय से मैं भी अपने देशवासियों के साथ, अपने परिवारजनों के साथ उल्लास से जुड़ा हुआ हूँ. मैं टीम चंद्रयान को, इसरो को और देश के सभी वैज्ञानिकों को जी जान से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ, जिन्होंने इस पल के लिए वर्षों तक इतना परिश्रम किया है. उत्साह, उमंग, आनंद और भावुकता से भरे इस अद्भुत पल के लिए मैं 140 करोड़ देशवासियों को भी कोटि-कोटि बधाइयाँ देता हूँ! चंद्रयान महाअभियान की ये उपलब्धि, भारत की उड़ान को चन्द्रमा की कक्षाओं से आगे ले जाएगी. हम हमारे सौरमण्डल की सीमाओं का सामर्थ्य परखेंगे, और मानव के लिए ब्रह्मांड की अनंत संभावनाओं को साकार करने के लिए भी जरूर काम करेंगे. हमने भविष्य के लिए कई बड़े और महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय किए हैं. जल्द ही, सूर्य के विस्तृत अध्ययन के लिए इसरो आदित्य एल-1 मिशन लाँच करने जा रहा है. इसके बाद शुक्र भी इसरो के लक्ष्यों में से एक है. गगनयान के जरिए देश अपने पहले मानव स्पेस फ्लाइट मिशन के लिए भी पूरी तैयारी के साथ जुटा है. भारत बार-बार ये साबित कर रहा है कि स्काई इस नॉट द लिमिट. साइंस और टेक्नोलॉजी, देश के उज्ज्वल भविष्य का आधार है. इसलिए आज के इस दिन को देश हमेशा हमेशा के लिए याद रखेगा. यह दिन हम सभी को एक उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करेगा. ये दिन हमें अपने संकल्पों की सिद्धि का रास्ता दिखाएगा. ये दिन, इस बात का प्रतीक है कि हार से सबक लेकर जीत कैसे हासिल की जाती है. एक बार फिर देश के सभी वैज्ञानिकों को बहुत-बहुत बधाई और भविष्य के मिशन के लिए ढेरों शुभकामनाएँ!

इसरो नासा की साझा स्पेस मिशन करने की भी योजना है. अमेरिका और भारत के बीच आर्टेमिस समझौते हुए हैं. इस समझौते के तहत भारत की स्पेस एजेंसी इसरो और अमेरिका की स्पेस एजेंसी नासा 2024 में ज्वॉइंट एस्ट्रोनॉट मिशन करेंगे. अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान, इसरो के बीच आर्टिमिस अकॉर्ड नाम का समझौता हुआ है, इस समझौते से भारत उन देशों में शामिल हो गया है, जो अंतरिक्ष के क्षेत्र में अमेरिका के निकट सहयोगी हैं और उनसे तकनीक का भी आदान-प्रदान होगा. इस समझौते से इंडिया को बहुत फायदा पहुँचेगा आर्टेमिस समझौता नियमों का एक समूह है,जिसका पालन देश स्पेस की खोज और उसका उपयोग करते समय करते हैं. ये नियम एक पुरानी संधि पर आधारित हैं जिसे बाह्य अंतरिक्ष संधि 1967 कहा जाता है, यह एक रोडमैप की तरह है जो देशों को स्पेस प्रोजेक्ट में एक साथ काम करने में मदद करता है.

*****

फलों की संख्या बताओ

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला", बालोद

एक आम और दो थे केले.
तीन नीबू इनसे मिलने चले.

इनके मेहमान बने सेब चार.
और फिर मिले पाँच अनार.

छः अमरूद का हुआ आगमन.
सात अंगूर भी आए बन ठन.

आठ संतरों को मिली खबर.
नौ चीकू को आ जाएँ लेकर.

दस पपीते फिर इन्हें ढूँढते आए.
मिलकर वे खूब ठहाके लगाए.

बच्चों ! अब जरा दिमाग लगाओ.
चलो फलों की संख्या बताओ.

*****

मेरे वो शिक्षक

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 8वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार शासकीय, अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, तारबाहर, बिलासपुर

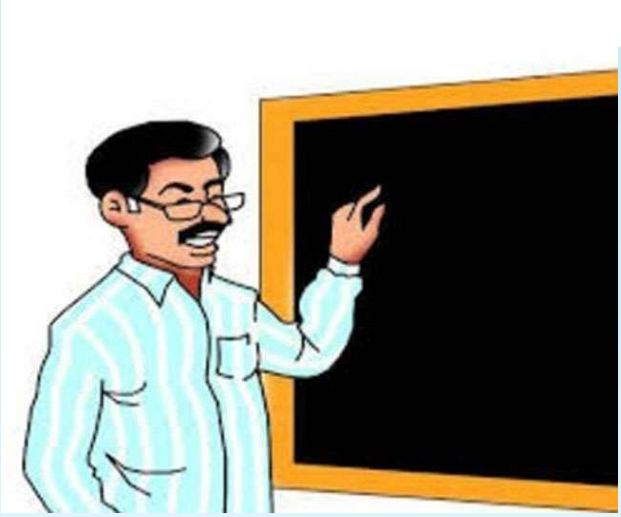

मेरे वो शिक्षक जिनकी :-

जिनकी हर डांट के पीछे,
रहता उनका प्यार ही है.
जिनकी हर फटकार के नीचे,
हमारी खुशियों की क्यारी है.

जिनकी वह कठोरता,
हमें मुश्किलों से लड़ना सिखाती है.
लेकिन जिनकी वह सरलता,
हमारे दिल में घर कर जाती है.

कभी जो हमें डांटते मारते तो,
कभी पीठ सहलाते हैं.
उन्हें अच्छा कहूं या बुरा कहूं,
यें मुझे समझ ना आते हैं.

परंतु इन सब के पीछे,
है मात्र एक ही वजह.
कि उनके छात्र तरक्की करें,
सफल रहे वे हर जगह.

हम तो छोटे हैं अभी,
कुछ भी नहीं जानते हैं.
डांट कर भी पढ़ाते तभी,
हमारे शिक्षक हमारे शुभचिंतक है.

सत्य का साथ देना तो,
हर शिक्षक सीखाता समान.
लेकिन बात ग़लत की हो तो,
उठाना सिखाते तीर -कमान.

जिन्हें देखकर करते हैं,
धरती अंबर भी सलाम.
ऐसे महान शिक्षकों को,
मेरा दिल से प्रणाम.

*****

रक्षा का पवित्र बंधन

रचनाकार- पिंकी सिंघल, दिल्ली

त्योहारों का हमारे जीवन में विशेष महत्व है क्योंकि यह हमारे जीवन में खुशनुमा उमंगे एवं तरंगें पैदा करते हैं,हमें जीने का नया ढँग सिखाते हैं और हमारी संस्कृति को जीवंत बनाते हैं. हमारे जीवन में रस लाने का जो कार्य हमारे ये उत्सव करते हैं वह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि बिना त्योहारों के जीवन एकदम नीरस हो जाता है, जीवन में एक खालीपन और बोरियत महसूस होने लगती है.

भारत को त्योहारों का देश कहा जाता है.साल के प्रत्येक महीने में कोई ना कोई त्योहार अवश्य आता है जिसे हम सभी भारतवासी पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं और अपनी संस्कृति को आगे नई पीढ़ियों तक पहुँचाते हैं. अपनी परंपराओं, रीति-रिवाजों और धार्मिक मान्यताओं को महत्व देते हुए त्योहारों को मनाना कोई हम भारतवासियों से सीखे,जो हर त्यौहार को पूरे दिल से मनाकर एक दूसरे के प्रति अपना प्रेम जताकर मानवता की मिसाल भी कायम करते हैं. यही भारतीयता है,यही भारतीय संस्कृति की असली पहचान है जहाँ हम सभी देशवासी भेदभाव भुलाकर मिलजुल कर एक दूसरे के त्यौहारों में शरीक होते हैं,बधाइयाँ देते हैं,गले मिलते हैं और सभी अवसरों को पूरी धूमधाम से मनाते हैं.

हम सभी जानते हैं कि रक्षाबंधन का पर्व प्रतिवर्ष सावन मास की पूर्णिमा तिथि को पूरे भारतवर्ष में धूमधाम और श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है. इस वर्ष भी यह पावन पर्व अगस्त महीने की 22 तारीख को पूरे भारतवर्ष में मनाया गया. भाई-बहन के पवित्र प्रेम पर आधारित यह त्योहार संबंधों में रस और मधुरता घोल देता है.

रक्षाबंधन के दिन बहनें अपने भाई अथवा मुंह बोले भाई अथवा उस इंसान के हाथों में रक्षा सूत्र बाँधती है जिसे वह दिल से अपना भाई मानती है,फिर चाहे उससे उसका रक्त संबंध हो अथवा न हो. भाई भी बहन को अपनी सामर्थ्य के अनुसार उपहार देता है और जीवन भर अपनी बहन की रक्षा करने का वचन भी देता है.

हिंदू धर्म में देवताओं को भी राखी बाँधने की पुरानी परंपरा रही है. कहा जाता है कि देवताओं को राखी बाँधने से वे सारी मनोकामनाएँ पूरी करते हैं. इन देवताओं में गणेश जी, शिव जी,विष्णु जी,भगवान श्री कृष्ण जी और हनुमान जी आदि को राखी बाँधने का प्रचलन रहा है. कहा जाता है कि भद्रा काल में राखी नहीं बाँधी जानी चाहिए क्योंकि

भद्राकाल किसी भी कार्य के लिए शुभ नहीं माना जाता. मान्यता है कि रावण की बहन ने रावण को भद्राकाल में ही राखी बाँधी थी इसलिए ही उसका सर्वनाश हो गया था.

रक्षाबंधन के त्यौहार के साथ साथ ही सावन महीने का भी अंत हो जाता है. कहीं-कहीं पर बहनें अपने भाइयों के साथ साथ अपने पिता को भी राखी बाँधती हैं. उसी प्रकार कुछ महिलाएँ अपने भाई भतीजों दोनों को ही राखी बाँधती हैं. रक्षाबंधन मनाए जाने की कई कहानियाँ प्रसिद्ध हैं. राजा बलि और माता लक्ष्मी की कहानी भी रक्षाबंधन के शुरू होने का कारण बताई जाती है.

भारतवर्ष में रक्षाबंधन का यह पर्व हजारों वर्षों से मनाया जा रहा है. महाभारत में द्रोपदी ने भी भगवान श्री कृष्ण को राखी बाँधी थी.

कहने का तात्पर्य यह है कि रक्षाबंधन का त्यौहार मनाए जाने के पीछे बहुत सी ऐतिहासिक कहानियाँ प्रचलित हैं. वजह चाहे जो भी रही हो परंतु यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि रक्षाबंधन का त्योहार पूरे भारतवर्ष में हजारों वर्षों से पूरी श्रद्धा,पवित्रता और मान सम्मान के साथ मनाया जाता रहा है और आगे भी इसी प्रकार मनाया जाता रहेगा.

वर्तमान में जब हम सभी एक भागदौड़ भरी जिंदगी व्यतीत कर रहे हैं, ऐसे में हम सभी को अपने त्योहारों को पूरा मान सम्मान देना चाहिए एवं अपनी आगे आने वाली पीढ़ियों से भी यह धरोहर संभलवानी चाहिए ताकि वह भी इन त्योहारों को उतने ही मान सम्मान,स्नेह और श्रद्धा के साथ मनाएँ जितना कि हमारे पूर्वज मनाते थे और उनके बाद हम भी आज उन त्योहारों को उसी श्रद्धाभाव से मनाते हैं .

हमें अगली पीढ़ी को यह समझाना होगा कि त्योहारों का वास्तविक अर्थ एक दूसरे के सुख दुख में भागीदार बनना एवं उनके मुसीबत के समय में उनकी सहायता करना एवं एक दूसरे के साथ मेलजोल बनाए रखना है. औपचारिकता के तौर पर त्यौहार मनाने का कोई औचित्य नहीं है. त्योहारों को पूरी श्रद्धा भाव से मनाया जाए,वस्तुत:तभी उनके असली मायने हैं.

*****

The Cat

रचनाकार- Tikeshwar Sinha "Gabdiwala"

Once there was a cat lived in the jungle. She went to a village wandering aimlessly a day. As she entered into a house opened. Then she saw the hot milk put in a clay pot on the wooden stove. The fragrance of milk hit her nose. She became very happy. After being cold she sipped the milk much. Then after that day she would get the milk somewhere else daily. Really she was so glad.

Then she thought that the food and water were got easily there to her. She gave up the idea of going back to the jungle.

From that day the cat began living in the village areas.

Dear Children ! And so the cat is living in the villages today. She likes very much the village.

*****

शिक्षक

रचनाकार- आंचल वर्मा, बेमेतरा

शिक्षक है एक ऐसा नाम,नहीं लगा सकता कोई दाम.
गांव, शहर, समाज के साथ ही, राष्ट्र निर्माण है जिसका काम.
'बच्चों के जो बाल मन में, लाते है शिक्षा का ज्ञान.
लेकर गीली मिट्टी जो गढ़ देते पूरा इसान.
क्या, कब, कैसे, कहाँ शब्द का, कर देते हैं जो पूरा निदान.
शिक्षक भी एक मानव है,नहीं है पर उसको अभिमान.
रात-दिन की मेहनत में भी, है उसका बस एक ही काम.
'बना सके बच्चे महान, आये फिर जो देश के नाम (काम)
एक लक्ष्य और एक किनारा, जीवन का बस एक ही नारा
पढ़ना-पढ़ाना और सिखाना, बच्चों को मजबूत बनाना.

*****

कुम्हड़ा

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला

मैं गोल मटोल कुम्हड़ा.
हाँ जी तैं बोल कुम्हड़ा.

छानी म करँव अराम.
सुबह ले लेके शाम.
मैं जस ढोल कुम्हड़ा.
हाँ जी तैं बोल कुम्हड़ा.

मैं निक पाचुक सब्जी.
सुवाद मोर गजब जी.
सच मैं अमोल कुम्हड़ा.
हाँ जी तैं बोल कुम्हड़ा.

मैं गोल मटोल कुम्हड़ा.
हाँ जी तैं बोल कुम्हड़ा.

*****

इसरो की टीम महान

रचनाकार- शांति लाल कश्यप, कोरबा

इसरो की टीम महान है, इसरो की टीम महान.
भारत माता की शान है, इसरो की टीम महान.

जग में कर दिया नाम रोशन, हो रहा आज गुणगान.
चन्द्रयान को भेज चांद पर, मचा दिया कोहराम.
वैज्ञानिकों की मेहनत को देखो, दुनिया करती आज सलाम.
भारत माता की जय से, गूंज रहा है हिन्दूस्तान.
इसरो की टीम महान है, इसरो की टीम महान.
भारत माता की शान है, इसरो की टीम महान.

इस धरा में कभी ना हो पाया, इसरो ने कर दिखलाया.
भारत माँ के बेटे बेटियों ने, दुनिया में सम्मान दिलाया.
बात कही है वैज्ञानिकों ने, ग्रंथों में इसका सार है.
शिव शक्ति पाइंट से देखो, चिन्हांकित हो गया स्थान है.
इसरो की टीम महान है, इसरो की टीम महान.
भारत माता की शान है, इसरो की टीम महान.

*****

सरस्वती शिशु मंदिर

रचनाकार- शांति लाल कश्यप, कोरबा

ना जाने क्यूँ ये शिशु मंदिर अपना घर सा लगता है.
बहन भैया आचार्य मईया दीदी जी परिवार सा लगता है.
ना जाने क्यूँ ये शिशु मंदिर अपना घर सा लगता है.

आते हैं जब हम मंदिर झुकाते शीश चौखट पे.
सरस्वती वन्दना प्रातः स्मरण प्रार्थना करते.
ना दूजा भाव ना द्वेष रहता मन निर्मल सा लगता है.
बहन भैया आचार्य मईया दीदी जी परिवार सा लगता है
ना जाने क्यूँ ये शिशु मंदिर अपना घर सा लगता है.

शिष्टाचार नैतिकता सदाचारी बनें सब हम.
महापुरुषों की गाथाओं से सीखते नेक बातें हम.
शिशु मंदिर की शिक्षा हमें ज्ञान सागर सा लगता है.
बहन भैया आचार्य मईया दीदी जी परिवार सा लगता है.
ना जाने क्यूँ ये शिशु मंदिर अपना घर सा लगता है.

*****

मैं संघर्ष करूँगा

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायन

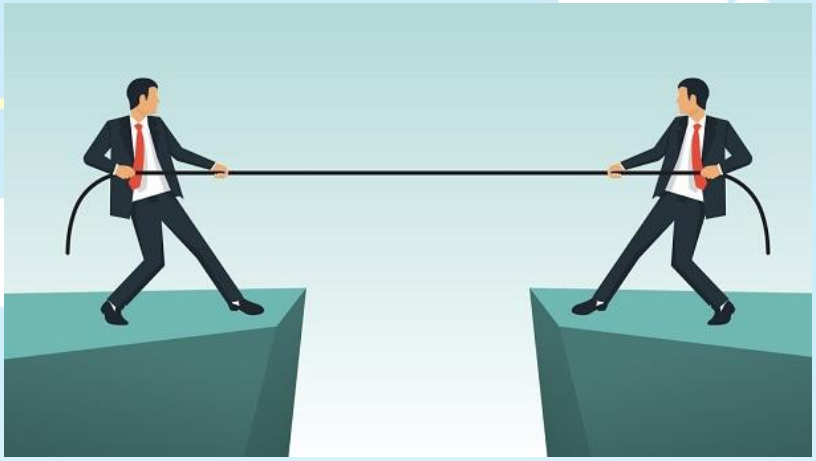

चलूंगा,दौडूंगा,पीछे मुड़कर न देखूंगा
चलता रहूँगा मैं आगे बढ़ता ही रहूँगा.

मैं सँघर्षो से न डरूंगा, न घबराउंगा
मैं सामना करूँगा ,मुकाबला करूँगा.

मेरा अपना आत्मविस्वास मेरे साथ है
मेरा अपना स्वाभिमान तो मेरे हाथ है.

मेरे मन मे दृढ़ता है, संकल्प शक्ति है
मेरी नजर में ही मेरा लक्ष्य,मंजिल है.

मैं लक्ष्य जरूर भेदूँगा, मैं अर्जुन बनूंगा
मैं चिड़िया की आँखों में बाण भेदूँगा.

मैं एकलव्य बनूंगा,मैं कोशिश करूँगा
गुरु के एक मंत्र को आधार बनाऊँगा.

ये सत्य है,तय है, और ये कहा जाता है
जो संघर्ष करता है,वही तराशा जाता है.

जो छीनी हथौड़े से मारक चोट खाता है
वही रोज मंदिरों में श्रद्धा पूजा जाता है.

*****

गुरु की अद्भुत महिमा

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

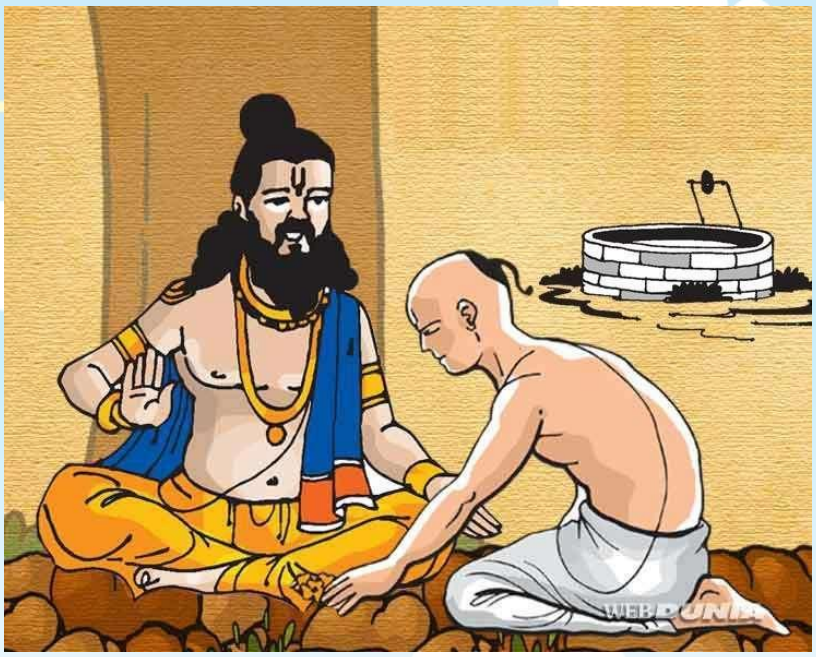

गुरु बड़ा है जग में सबसे, सुमिरन करूँ मैं नाम.
भवसागर से पर लगाए, बना देता बिगड़े काम.

गुरुवाणी अनमोल रे हंसा, ज्ञान को करो धारण.
पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति, अज्ञान हो अवदारण.

दिव्य प्रकाशमान आत्मा, भटक रही बन निर्जीव.
गुरु सत्संग जिसको मिले, बन जायेगा वो सजीव.

दुनिया माया जाल में बंधे, गुरु की बात नहीं माने.
कर रहा कुकर्म, दुराचार, स्वयं अँधा बन अभिमाने.

जब त्याग दोगे सर्वनाशी घमंड, धन-दौलत की मोह.
तब गुरुवर बचाने आयेंगे, उबारने जगत दुर्गम खोह.

धोकर सभी मन का मैल, ज्ञानी गुरु का ध्यान लगाओ.
गुरु कर्म के लिखा बदल देंगे, सत्कर्म से सुख पाओ.

गुरु मिलने आएगा एक दिन, ढूँढते तुझे तुम्हारे द्वार.
सरल, सुगम पथ बताने, मिट जाएगा मन अँधकार.

शरणागति में मोक्ष प्राप्ति, बार-बार करो गुरु के वंदन.
गुरु के पैरों की धूल को, तिलक लगाओ समझ चंदन.

*****

बस्ता लेकर आओ

रचनाकार- राजेंद्र श्रीवास्तव विदिशा

फटा-पुराना पहन पजामा,
शहद चाटता भालू .
पहुँच गया विद्यालय अपने
लेकर कच्चे आलू.

टीचर वहाँ लोमड़ी-दीदी
उनको गुस्सा आया.
फिर भी रह कर शांत उन्होंने
भालू को समझाया.

इतने गंदे-बच्चे बनकर
तुम विद्यालय आए.
लेकर आए कच्चे आलू
बस्ता साथ न लाए.

जाओ, तन की करो सफाई
पहले खूब नहाओ.
यूनीफॉर्म पहन कर जल्दी
बस्ता लेकर आओ.

*****

शिक्षक कभी रिटायर नहीं होता

रचनाकार- शांति लाल कश्यप, कोरबा

15 अगस्त का दिन था. स्वतंत्रता दिवस पर आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में एक रिटायर्ड शिक्षक आये हुए थे. ध्वाजारोहण पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ. सभी बच्चों ने बड़े उत्साह से कार्यक्रम में गीत, कविता, चुटकुला, नृत्य आदि प्रस्तुत किये. सांस्कृतिक कार्यक्रम के पश्चात् उद्बोधन में रिटायर्ड शिक्षक ने 15 अगस्त को "स्वतंत्रता दिवस" क्यों मनाते है इस बारे में विस्तार से बताया. ज्ञान की अच्छी- अच्छी बातें बतायी. शिक्षक ने अपनी शिक्षकीय जीवन की शुरुआत से लेकर रिटायर होने तक की सार बातों को बताया. ज्ञान की बातें बताते और बीच- बीच में प्रश्नों के माध्यम से बच्चों की जिज्ञासा को जानने का प्रयास करते. इस तरह कार्यक्रम का समापन हुआ.

कुछ दिन ही बीते थे. हम स्कूल में थे. रिटायर्ड शिक्षक आज हमारे स्कूल आये. हम तो उनसे पहले से ही परिचित थे. हमने शिक्षक को अपना परिचय दिया. उन्होंने कहा आज मैं आपके स्कूल के बच्चों से मिलने आया हूँ. उन्होंने 15 अगस्त को बहुत ही अच्छा कार्यक्रम प्रस्तुत किया. मैं बच्चों को कुछ ज्ञान की बातें बताना चाहता हूँ. हमने सभी बच्चों को एक स्थान पर बैठाया. हमारे स्कूल स्टाफ के शिक्षक और सभी बच्चे उनको सुनने के लिए उत्साहित हो रहे थे. फिर शिक्षक के द्वारा भारत माता की जय, सरस्वती माता की जय कहकर बच्चों को ज्ञान, विज्ञान एवं कुछ विषय से सम्बंधित अच्छी- अच्छी जानकारी बतायी. बीच- बीच में बच्चों से प्रश्न भी करते थे. जो बच्चे प्रश्नों का सही उत्तर देते उन्हें पुरस्कार स्वरूप एक टाफी दी जाती थी. बच्चे उत्साह पूर्वक शिक्षक की बातें सुन रहे थे. नैतिक शिक्षा (सदाचार) पर शिक्षक ने काफी जोर दिया. इस डिजिटल युग में हमें अपनी संस्कृति को भूलना नहीं है. शिक्षा और संस्कृति का

घनिष्ठ सम्बन्ध होता है. सभी बच्चे शिक्षक की बातों पर हम जरूर अमल करेंगे कहकर तालियाँ बजाई. शिक्षक ने मैं फिर आऊँगा कहकर अपनी वाणी को विराम दिया.

शिक्षक के रिटायर होने के बाद आज भी उसी ललक के साथ बच्चों को ज्ञान की बातें बताते हुए देखकर हम सब में नई ऊर्जा का संचार हुआ. मुझे यह कहते हुए तनिक भी संकोच नहीं होता कि "एक शिक्षक कभी रिटायर नहीं होता."

*****

पहेलियां

रचनाकार- जानवी कश्यप ,आठवीं ,स्वामी आत्मानंद तारबाहर बिलासपुर

1) लाल रंग का हूं ,
पर बाजार में सबसे महंगा हूँ.

2)हरा भी हूं लाल भी हूं,
लोग मुझे खाते हैं,
पर उनके आंखों से आंसू निकल आते हैं.

3) मेरे बिना कोई साँस नहीं ले सकता, पर लोग मुझे काँट देते हैं.

4) नारंगी रंग का हूं,
लोग मुझे रोज सलाद बनाकर खाते हैं.

5) लोग मुझे कॉपी में लिखते हैं,
मैं हरा, लाल, नीला, काला ,गुलाबी ,सब रंग का हूं..

उत्तर-(1) टमाटर (2) मिर्च (3) पेड़ (4) गाजर (5) कलम

*****

बेटी

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

बेटी मुझको अति मनभावन, मन को भाती सुता सुहावन.
घर आँगन उपवन सा महके, बेटी चिड़िया सी जब चहके.-1

लगे परी सी राजकुमारी, चंचल चपला, अति अनुचारी.
बेटी शीतल जल की धारा, जनकनंदिनी भाग्य सितारा.-2

नेक राह पर चलने वाली, प्रेम पुष्प सा पलने वाली,
सबके मन को भाती है, खुशियों की यह थाती है.-3

संकट से कब यह घबराती! विकट समस्या हल सुलझाती.
बेटी सबसे आगे रहती, कौन सका कह इसकी महती.-4

त्याग, तपस्या, मनभर ममता, सहनशीलता, साहस, समता.
मृदुभाषी मिश्री सी बोली, भावनीय उर भीतर भोली,-5

बिटिया आँगन की है तुलसी, हिय हितकारी, हर्षित हुलसी.
सति, सावित्री, सुषमा, सीता, बेटी गायत्री, गौ, गीता.-6

हैं ये तितली के पंखों सी, करतल ध्वनि, घंटा शंखों सी.
कोमल फूलों सी मुस्काती, गहन उदासी दूर भगाती.-7

बिटिया बिन यह जगत अधूरी, खुशियाँ घर की इनसे पूरी.
बनती सबकी सबल सहारा, अंतर्मन आशा उजियारा.-8

अपने हाथों सदन सजाती, नाता-रिश्ता सहज निभाती.
मन से जोड़े मन का बंधन, सीधी-सादी सुता सुगंधन.-9

बेटी सच में मोती, हीरा, हृदय भावमय राधा, मीरा.
तनया सबका माने कहना, सबसे यही कीमती गहना.-10

पिता सहेली, सविनय, सुषमा, अनुरंजित है सुता अनुपमा.
जन जीवन से रहती जुड़कर, देखे न कभी पीछे मुड़कर.-11

भाव वक्ष में समतल भरती, इच्छा सबकी पूरित करती.
सुबोधिनी, सत, सुभग, सुनीता, पुत्री परपद, परम पुनीता.-12

दयादायिनी होती दुहिता, सुलक्षणा, अति सौम्या, सुहिता.
स्नेह संपदा की अभिलाषी, मनोरमा, मुकलित मृदुभाषी.-13

बिटिया ममता की है झपकी, सुंदर सुखमय दुखहर थपकी.
पहले-पहले कभी न लड़ती, छेड़ा फिर तो थप्पड़ जड़ती.-14

कोंपल सा तनया तन नरमी, अंतर्मन पावक सी गरमी.
जग में पावन सुता किशोरी, खुशियों की यह भरी तिजोरी.-15

बेटी, बहना, बहुला, बाला, मानस मन की माणिक माला.
किसलय सी यह नूतन कलिका, सहनशील अति जैसे इलिका.-16

मातु पिता की सदा सहाई, रहती तत्पर काज भलाई.
सेवाभावी अति सुखकरनी, करुणामयी सुता दुखहरनी.-17

बिटिया से ही आशा अतिशय, रहता कभी नहीं है संशय.
अनुकरणी यह होती अनुपम, वंशागत अनुयायी उत्तम.-18

घर भर की यह राजदुलारी, चलती-फिरती यह फुलवारी.
जब-जब बेटी मुस्काती है, धरती पर रौनक छाती है.-19

बेटी बाबुल की परछाई, अनुगामी करती अगुवाई.
परंपरा की शुभ संवाहक, स्वस्थ समझ की सत संग्राहक.-20

समझ नहीं बिटिया को बोझिल, लगती अमरैया की कोकिल.
सबको अपना हिस्सा बाँटे, सहर्ष जनहित कंटक छाँटे.-21

सुता शुभाकांक्षी, शुभकामी, शोभावती, शिष्ट शुभगामी.
कुलतारण परिजन कल्याणी, वेणु मधुर सम इनकी वाणी.-22

बहे आपगा सी आनंदी, तनुजा नहीं किसी की बंदी.
आगे बढ़कर करती अगवानी, मानवता हित अति वरदानी.-23

सुहासिनी सुंदर संरचना, सबसे बढ़िया बिटिया, बहना.
पिता चहेती, चपला चंचल, अडिग कर्म पथ रहती अविचल.-24

जीवन जीती सदा सुगमता, भर-भर रखती मन में ममता.
प्रेम सुधा धन पीहर परिमल, बहती धारा परहित निश्छल.-25

बिटिया घर भर करती गुंजन, लगता आलय मनहर मधुवन.
होती सुता हमारी लज्जा, इनसे ही है जग की सज्जा.-26

पथिक प्रगति की पुत्री प्रतिपल, कदम साहसी रखती अविरल.
मंगलकरनी यह मनमोहक, बनती कभी न पथ अवरोधक.-27

पुत्री पवित्र पूजा-पाठी, दान धर्म की लालित लाठी.
परम हितैषी परिजन प्यारी, करती काज नियम अनुसारी.-28

समझो कभी न कोमल काया, होती हैं सुता महामाया.
पार स्वयं ही करती अड़चन, मन से कभी नहीं रख अनबन.-29

बिटिया समझो मानस गंगा, डाले फिर क्यों जगत अडंगा.
होती इनकी शान निराली, बेटी दूर करे बदहाली.-30

शक्ति स्वरूपा, सक्षम सबला, कहना नहीं इन्हें अब अबला.
विद्या, वैभव विधिवत वर्धन, करती तनुजा मिथ्या मर्दन.-31

कुहके कोयल सी घर कानन, मंगलकारी बिटिया आनन.
हैं शुभकारी, सगुन सुशीला, प्रेम पुलक उर, नहीं प्रमीला.-32

बेटी मुलाधार सुख सुविधा, दुहिता नहिं कोई भी दुविधा.
छोड़ो पिछड़ी सोच संकुचित,
है अनिवार्य आत्मजा समुचित.-33

बिटिया छूती हर ऊँचाई, भरकर चंचलता चतुराई.
सतत सकुच सह सुविचारी, अतिशय आदर की अधिकारी.-34

होती बिटिया मैहर बुलबुल, रहती पीहर चपला चुलबुल.
बनती सबकी सुता चहेती, होती घर परिवार सचेती.-35

जब-जब देखो बिटिया मुखड़ा, हट जाता है झट से दुखड़ा.
तनुजा तन-मन से संतोषी, करुणा दया प्रेममय कोषी.-36

सबसे आगे सुता बढ़ाओ, बिटिया को भी खूब पढ़ाओ.
दो-दो कुल की मान बढ़ाये, परिपाटी का पाठ पढ़ाये.-37

बेटी से ही चले घराना, बेटी मन का मधुर तराना.
हो आत्मीय अखिल अभिवादन, 'अमित' आत्मजा सुख आच्छादन.-38

बेटी-बेटा एक समाना, भेदभाव को तुरत मिटाना.
बहुत जरूरी इनकी शिक्षा, संस्कारपूर्ण नैतिक दीक्षा.-39

जितना ज्यादा स्नेह मिलेगा, उतना ही सौभाग्य खिलेगा.
शारद कृपा कलम को थामा, लिखा 'अमित' यह बेटीनामा.-40

*****

समुद्र

रचनाकार- पुष्पेंद्र कुमार कश्यप, सक्ती

बहुत पुरानी बात है, एक गाँव में दो भाई रहते थे. दोनों भाइयों में बहुत प्रेम था, वे सुखमय जीवन बिता रहे थे. एक बार बड़े भाई को आवश्यक कार्य से रात्रि के समय दूसरे गाँव जाना पड़ा.रास्ते में उसकी मुलाकात एक साधू से हुई. साधू ने कहा- यदि तुमने मेरे प्रश्नों के सही उत्तर (जवाब) दिए ,तो मैं तुम्हें एक जनोपयोगी पुरस्कार दूँगा. बड़े भाई ने साधू महाराज के प्रश्नों के उत्तर बड़ी सहजता एवं विनम्रता से दी। साधू ने प्रसन्न होकर उसे एक जादुई बर्तन (पात्र) दिया, जो अपने मालिक की सारी इच्छाएं पूरी करता था. बर्तन से अपनी इच्छित वस्तुएं प्राप्त करने तथा वस्तु प्राप्ति के बाद उसे रोकने के लिए साधू ने कुछ मंत्र बताए, साथ ही इस मंत्र का आवाहन किसी भी अन्य व्यक्ति के सम्मुख करने से मना किया.

जादुई बर्तन पाने के बाद बड़ा भाई बहुत सुख से रहने लगा, तथा यदा-कदा अपने छोटे भाई को भी भोज में आमंत्रित किया करता. छोटा भाई अपने बड़े भाई के रहन-सहन व ठाट-बाट को देखकर उससे ईर्ष्या करने लगा तथा इसका भेद जानने के लिए रातों में जागकर भाई की निगरानी करने लगा। एक रात उसने बड़े भाई को मंत्र बोलकर बर्तन से कुछ सामान माँगते देखा ,बर्तन ने तत्काल उन सभी वस्तुओं को उपलब्ध करा दिया. छोटे भाई की आँखें फटी की फटी रह गई, उन्होंने उस मंत्र को याद कर लिया परंतु बर्तन से सामान निकालना बंद करने के मंत्र को जाने बिना वह घर की ओर चल दिया. एक दिन मौका पाते ही छोटा भाई उस बर्तन की चोरी कर एक नाव में सवार होकर समुद्र के रास्ते अन्य देश के लिए भाग निकला.

छोटा भाई ने मंत्र बोलकर जादुई बर्तन से जो भी माँगा, उसने सब दिया, भूख लगने पर उन्होंने भोजन की मांग की. जादुई बर्तन ने लज़ीज व्यंजनों की थाली उसके सामने रख दी, बर्तन से सामान निकलना निरंतर जारी रहा. जब उसने खाना शुरू किया तो उसे भोजन में नमक फीका लगा. उसने बर्तन से नमक की मांग की, बर्तन से

नमक निकलना शुरू हुआ और निकलता ही रहा. चूँकि छोटा भाई को बंद करने का मंत्र मालूम नहीं था इसलिए बर्तन से नमक निकलता ही रहा.

नाव में नमक भर गया और नमक के भार से नाव समुद्र में डूब गया, साथ ही छोटा भाई भी समुद्र में डूबकर मर गया. लोग कहते हैं कि उस बर्तन से आज भी नमक निकल रहा है, जिसके कारण समुद्र का पानी खारा (नमकीन) है.

शिक्षा- हमें दूसरों की संपत्ति पर लालच नहीं करनी चाहिए.

*****

मेरे सपने मेरे अपने

रचनाकार- गरिमा बरेठ, कक्षा - आठवीं, स्वामी आत्मानन्द शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम शाला तारबहार बिलासपुर

सबके ही होते हैं सपने,
जो होता है उनका सपना.
होता है किसी- किसी का सपना सच,
नहीं होता है सबका सपना सच.

सपना पूरा करना है तो,
सबसे पहले हटाओ अपनी बुराइयों को.
सभी सोचते हैं बड़े होने पर,
भरेंगे ऊंची उड़ान.
पर भर न पाते उड़ान,
बुरी आदतों की वजह से.

सब है चाहतें,
मेरा सपना दिपक सा जले,
मोती सा चमके, चाँद सा सजे.
पर हो न पाता,
बहुत लोगो का सपना सच.

कुछ सपने तो अहसास है दिलाते गलतीयों की,
दुबारा ना करना ऐसी गलती.
सपने तो सपने ही होते है,
ज्यादातर पूरे नहीं होते है सपने.

सब की तरह है एक मेरा भी अपना सपना,
जिसे मुझे ही पूरा करना है.
करना है मुझे अपने माॅ - बाप और,
मेरे देश का नाम रौशन.

मैंने है ठाना अच्छे से पढ़ने का,
ताकि जीवन में कभी न पड़े मुश्किल सपने पूरे करने का.
काटों पर चलु, धुप से लड़ू,
पर सपने पूरे करने का जोश अपने मन मे भरू.

सपने तो आते ही है नींद में सभी को,
पर वो है नहीं असली सपना.
असली सपना तो वो है,
जो हमें पूरा करना होता है.

*****

संघर्ष के ऊपर मेरा विचार

रचनाकार- शिखा मसीह, 8वीं, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार सरकारी अंग्रेजी माध्यम स्कूल तारबहार बिलासपुर

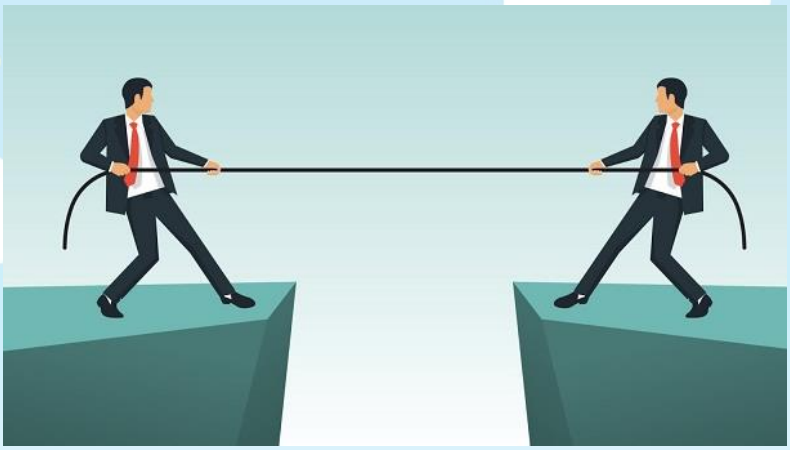

संघर्ष सभी के जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण है

हम खुश किस्मत है कि भगवान ने हमें संघर्ष जैसी शक्ति प्रदान की है
संघर्ष को हमें सही दिशा में इस्तेमाल करना चाहिए जिसे हमे जीवन में सफलता मिलती है

संघर्ष के द्वारा हम देश की भी मदद करते हैं
संघर्ष के साथ-साथ हम वक्त के साथ भी चलना सीखते हैं
संघर्ष हमें बड़ी सी बड़ी मुश्किलों का सामना करना सिखाती है

संघर्ष से हमें उच्च शिक्षा प्राप्त होती है
संघर्ष से हमें हमारे जीवन में सफलता मिलती है
संघर्ष हमें हमारे जीवन में बहुत कुछ सिखाती ह

संघर्ष हमें हमारे सपनों की मंजिल तक पहुंचता है
हमारे सपनों की मंजिल तक पहुंचने वाली कुंजी है संघर्ष

*****

मेरा विद्यालय

रचनाकार- आभा चन्द्रा, कक्षा - 7वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेज़ी माध्यम स्कूल तारबहार बिलासपुर

मेरे विद्यालय का नाम स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम शाल तारबहार है. मेरा विद्यालय बहुत बड़ा है. यहां लगभग 600 बच्चे पढ़ते हैं. यहां दो पाली लगती है एक सुबह जिसमें कक्षा नर्सरी से पांचवी तक के बच्चे जाते हैं और एक दोपहर जिसमें कक्षा छठवीं से बारवीं तक के बच्चे जाते हैं. हमारे विद्यालय में 13 कक्षाएं हैं. यहां एक संगणक कक्ष, तीन प्रयोजन कक्ष,एक पुस्तकालय कक्षा और एक खेल कक्ष है. खेल कक्षा में बहुत सारे खेलने के समान है.

जैसे- बैडमिंटन,फुटबॉल वॉलीबॉल आदि. मिडिल में तीन कक्षाएं हैं. यहां चार शिक्षिका और एक हेडमिस्ट्रेस है. हमारी प्राचार्य का नाम श्रीमती उषा चंद्रा जी है. विद्यालय में एक बड़ा सा खेल मैदान है. यहां पांच बड़े-बड़े बिजली से चलने वाले बोर्ड भी लगे हैं. मेरा विद्यालय मुझे बहुत अच्छा लगता है.

*****

शिक्षक दिवस 5 सितंबर को यह संकल्प लेना है

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

भारत को मजबूत स्थिर शांतिपूर्ण देश
के रूप में विकसित करना है
शिक्षा क्षेत्र में भारत को
विश्वगुरू बनाना है

जब देश की आजादी के 100 वर्ष पूरे होंगे
आजादी के अमृत काल तक भारतीय शिक्षा
नीति सारी दुनिया को दिशा देने वाले दिन होंगे
ये ख्वाब हमारे संकल्प सामर्थ्य से पूरे होंगे

अमृत काल में हिंदुस्तान की शिक्षा नीति की
विश्व प्रशंसा करे, यहां ज्ञान लेने आएं,
ऐसा हमारा गौरव हों,विश्व कल्याण की
भूमिका निर्वहन करने में भारत समर्थ होंगे

भारतीय युवाओं में प्रतिभा की कोई कमी नहीं
बस गंभीरता से उसे पहचानना है

शिक्षण को स्वांदात्मक बहुआयामी
आनंदमयी अनुभव बनाना है

छात्रों में मूल्यों को विकसित करने शिक्षकों
की महत्वपूर्ण भूमिका रेखांकित करनाहै छात्रों के
आचरण को सुधारने विपरीत परिस्थितियों
का सामना करने आत्मविश्वास जगाना है

*****

शिक्षक: एक भविष्य निर्माता

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

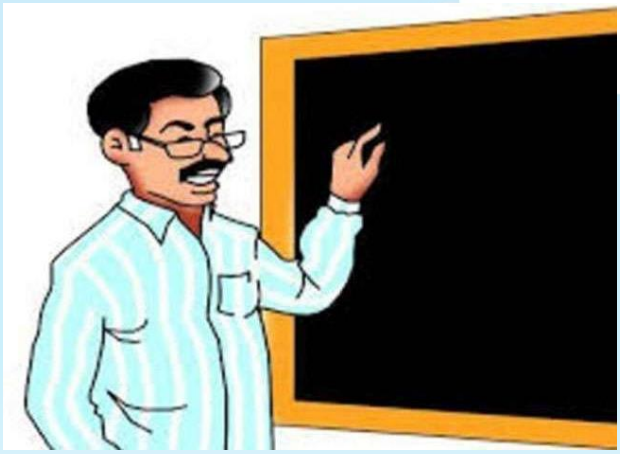

ज्ञान की पाठशाला में, जो सबको पढ़ाई करवाता है.
वो शिक्षक ही तो है, जो बगिया में फूल खिलाता है.
सादे कोरे कागज में, शब्द लिखकर चित्र बनाता है.
बच्चे कच्ची मिट्टी के समान, उन्हें आकार दे जाता है.

स्वयं चलता दुर्गम राह में, शिष्यों के लिए सुगम बनाने.
स्वयं तपता है भट्टी में, कच्चे लोहे से औजार बनाने.
सड़क के जैसे पड़ा है, विद्यार्थी आते-जाते अनजाने.
चले जा रहे रफ्तार से, मुसाफिर के मंजिल है सुहाने.

एक लक्ष्य, एक राह, मन में पैदा करता है सदा जुनून.
हौसलों को बुलंद कर, अनुभव की चक्की से पीसे घुन.
शिक्षादूत, ज्ञानदीप, शिक्षाविद् ही दूर करता है अवगुन.
जीत दिलाने अध्येता को, त्याग देता है चैन और सुकून.

कर्म औषधि जड़ी-बूटी को, अज्ञानियों को खिलाता है.
ज्ञान गंगा प्रवाहित कर, ज्ञान अमृत सबको पिलाता है.
अनुशासन और अभ्यास से, सबको सफलता दिलाता है.
विद्यार्थियों को अधिकारी, डॉक्टर, इंजीनियर बनाता है.

*****

सेठ का पेट

रचनाकार- परवीनबेबी दिवाकर, मुंगेली

एक सेठ,निकला था पेट,
चलते थे लाठी को टेक.

सेठ इतना भारी भरकम,
चल ना पाते थे, हरदम.

फिर सेठ को सूझी, एक उपाय.
क्यों न में कसरत करू.

रोज कसरत करते थे.
पेट नहीं अब बढ़ते थे.

कसरत से आई ताकत.
सेठ ने फिर दौड़ लगाई.

*****

जैसा बोओगे वैसा काटोगे

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, धमतरी

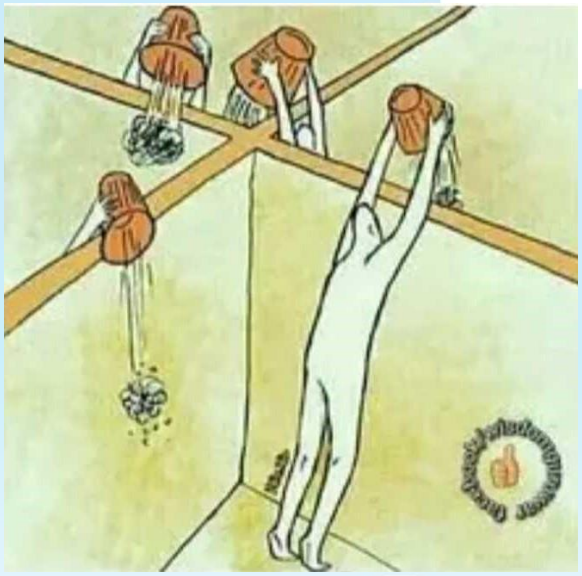

जो बोओगे वही उगेगा.
चाहे सींचो कितना उसको,
काँटों से न फूल खिलेगा.

बो के पेड़ बबूल का प्यारे,
आम का फल तो नहीं लगेगा.
किये जो कर्म खराब हैं तूने,
काँटा बनकर वही चुभेगा.

जो बाँटोगे वही मिलेगा,
आज नहीं तो कल मिलेगा.
दुगुना होकर आएगा वापिस,
फल का प्रतिफल अवश्य मिलेगा.

दुःख बाँटोगे दुखी रहोगे,
सुख बाँटोगे सुखी रहोगे.

देकर दुनियाँ को ग़म तुम प्यारे,
तुम भी तो ग़मगीन रहोगे.

गहरे पैठ के पानी से तुम,
मोती ख़ोज के लाओगे.
गर बाँटोगे दुनियाँ में खुशियाँ,
खुशियाँ अपार तुम पाओगे.

क्रोध का बीज बोकर शांति कैसे पाओगे
घृणा का बीज बोकर प्रेम कैसे पाओगे
जो दोगे वही मिलेगा
आज नहीं तो कल मिलेगा.

बुरे कर्म से डरो प्यारे
ईश्वर सब देख रहा
क्रिया का प्रतिक्रिया अवश्य होगा
आज नहीं तो कल होगा

*****

मेरे विद्यालय

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, धमतरी

मेरे विद्यालय से बेहतर विद्यालय है कहां
बच्चों के भविष्य को संवारना,
उनके सपनों को पंख देना,
ऐसे समर्पित शिक्षक है जहां,
मेरे विद्यालय से बेहतर विद्यालय है कहां.

एक के बाद एक शिक्षक का कक्षा में आना,
अपने विषय को बेहतर पढ़ाना,
ऐसे कर्तव्यवान शिक्षक है जहां,
मेरे विद्यालय से बेहतर विद्यालय है कहां.

तन को स्वस्थ और मन को पवित्र रखने योग सिखाते,
खेल खेलाकर एक बेहतर खिलाड़ी बनाते,
ऐसे योग और खेल शिक्षक है जहां,
मेरे विद्यालय से बेहतर विद्यालय है कहां.

जो बच्चे विद्यालय नहीं आते,
उनका घर-घर जाकर समझाते,
पढ़ना कितना जरूरी है,
यह बात उन्हें बतलाते,
ऐसे निष्ठावान शिक्षक है जहां,
मेरे विद्यालय से बेहतर विद्यालय है कहां.

बच्चों को आगे बढ़ने के लिए हमेशा प्रेरित करना,
उन्हें जीवन की चुनौतियों से लड़ना सीखाना,
ऐसे प्रेरणा स्रोत शिक्षक है जहां,
मेरे विद्यालय से बेहतर विद्यालय है कहां.

परीक्षा के समय घर-घर जाकर पढ़ाना,
उन्हें पढ़ने के लिए सुबह चार बजे उठाना,
ऐसे ऊर्जावान शिक्षक है जहां,
मेरे विद्यालय से बेहतर विद्यालय है कहां.

अपना पर्यावरण है कितना प्यारा शिक्षक हमें बतलाते,
पेड़ लगाना कितना जरूरी है हमें वे समझाते,
ऐसे प्रकृति प्रेमी शिक्षक है जहां,
मेरे विद्यालय से बेहतर विद्यालय है कहां.

*****

पानी का मूल्य हर मानव को समझाना है

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

पानी बचाने की ज़वाबदेही निभाना है
पानी का मूल्य हर मानव को समझाना है
पानी को अहम दुर्लभ मानकर
अपव्यय करने से बचाना है

पानी की कमी का चिंतन छा रहा है
जलवायु परिवर्तन चेता रहा है
जल बचाओ जीवन बचाओ जल बिना
मानव जीवन अधूरा बता रहा है

पानी के स्त्रोतों की सुरक्षा स्वच्छता अपनाने
के लिए जी जान से ध्यान लगाना है
पानी बचाओ जीवन बचाओ
यह फॉर्मूला मूल मंत्र के रूप में अपनाना है

पानी बचाने की ज़वाबदेही निभाना है
हर मानव को ज़ल संरक्षण संचयन अपनाकर
पानी बचाकर जनजागृति लाना है
अगली पीढ़ियों के प्रति ज़वाबदारी निभाना है

बिना पानी ज़िन्दगी का दर्द क्या होता है
पानी अपव्यय वालों तक पहुंचाना है
पानी का उपयोग अब हमें
प्रसाद की तरह करना है

*****

सबका जीवन है अनमोल

रचनाकार- चांदनी साहू, कक्षा 9वी, शा हाई स्कूल बोडरा विकासखंड मगरलोड धमतरी

सबका जीवन है अनमोल,
कितना प्यारा है जीवन का यह मोल,

कहीं भूलना मत इंसानियत,
इंसान की इंसानियत नहीं तो,
इस जीवन का क्या है मोल,
सबका जीवन है अनमोल,
कितना प्यारा है जीवन का यह मोल,

कितना प्यारा और सबसे प्यारा है
इस नन्हे से जीवन का मोल,
जीवन में हमेशा याद तुम्हें रखना
मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है
सभी की हमेशा मदद करना,
सबका जीवन है अनमोल,
कितना प्यारा है जीवन का है मोल,

इंसान की इंसानियत पर कभी शक नहीं करना,
सबका जीवन है अनमोल
कितना प्यारा है जीवन का यह मोल.

*****

एकता में बल

रचनाकार- वेद प्रकाश दिवाकर

बहुत पहले की बात है, जब चारों ओर जंगल ही जंगल थे और जंगल में शेर का एकछत्र राज था. शेर राजा होने के साथ - साथ बहुत शक्तिशाली भी था. जंगल के सभी जानवर उससे भयभीत रहते थे क्योंकि शेर जब चाहे किसी को भी मार गिराता था. वह शिकार न केवल पेट भरने के लिए करता अपितु शौकिया तौर पर भी करता था. इससे जंगल में आतंक फैला हुआ था. सभी जीव-जंतु हमेशा भयभीत रहते थे. तब जंगल के अन्य सभी जानवरों ने मिलकर विचार विमर्श किया कि यदि शेर इसी तरह से अपनी शौक के लिए शिकार करता रहा तो हम सब जल्दी ही मारे जायेंगे और हमारा जंगल शीघ्र ही नष्ट हो जायेगा. इसलिए शेर को भी अपनी उदरपूर्ति हेतु ही शिकार करना चाहिए. यह निर्णय लेकर सभी जानवरों ने शेर को यह फैसला सुना दिया. लेकिन शेर अपनी ताकत के घमंड से चूर होकर नहीं माना. इस पर सभी जानवरों ने मिलकर शेर को सबक सिखाने की युक्ति निकाली कि अब जब भी शेर शिकार करने जायेगा तो तुरंत उसकी सूचना सब को दे दी जाए और फिर ऐसा ही हुआ. जब भी शेर शिकार करने वाला होता, पूरे जंगल के जीवों को तत्काल सूचना दे दी जाती और वे सब छुप जाते या वहाँ से भाग जाते. शेर को कोई शिकार मिलता ही नहीं था, उसके भूखों मरने की नौबत आ गई. अंत में थक हार कर शेर ने जंगल के सभी जानवरों से माफ़ी मांगी और कहा कि अब के बाद मैं सिर्फ भोजन के लिए ही शिकार करूँगा. तब से लेकर आज तक शेर केवल खाने के लिए ही शिकार करने लगा. इस प्रकार जानवरों की एकता के बल पर जंगल में फिर से खुशहाली लौट आई.

*****

चीकू राम और मीकूराम

रचनाकार- सुधारानी शर्मा, मुंगेली

चीकू राम चीकू राम
कितने अच्छे चीकू राम.
रोज सुबह ये उठते हैं.
ब्रश मंजन भी करते हैं.
रोज स्कूल जाते हैं.
वहां पढ़ाई करते हैं
नहीं लड़ाई करते हैं.
साफ सुधरे रहते हैं
ताजा भोजन करते है
होमवर्क भी करते हैं.
खेलकूद में अच्छे है
स्कूल के अच्छे बच्चे हैं
जल्दी से सो जाते हैं
फिर जल्दी उठ जाते हैं
खुश होकर स्कूल आते हैं
चीकूराम, चीकूराम
कितने अच्छे चीकूराम

मीकूराम,मीकूराम
कितने गंदे मीकूराम
हर बात में आलस करते हैं
सुबह जल्दी नहीं उठते हैं.
घर में ना पढ़ाई करते हैं.
स्कूल में लड़ाई करते हैं.
घर में कार्टून देखते हैं.
कपड़े गंदे रखते हैं
फास्ट फूड ही चखते है
देर रात तक जगते हैं
तो,मीकूराम,मीकूराम
कितने गंदे मीकूराम
कौन बनेगा चीकू राम.
हम बनेंगे चीकू राम
कौन बनेगा मीकूराम
नहीं बनेंगे मीकूराम

*****

मेहनत का फल

रचनाकार- सुधारानी शर्मा, मुंगेली

अच्छे कर्मो का मैने बीज कभी बोया था
लहु पसीना बहाकर मैने उसे सींचा था.
उत्साह नेकी देखभाल की खाद उसमे थी डाली
वो छोटा सा पौधा था और मै उसका माली.
आंधी अंधड और गर्म थपेडो से मैने उसे बचाया
दिन रात को एक समझ आंखो मे ख्वाब सजाया.
धीरे धीरे वह बड़ा हुआ,उसकी छाया मे मै छोटा
नव कलरव नव किसलय मे उसने मुझे समेटा.
धीरज का फल मीठा होता ,मैने कभी सुना था
मेहनत का अपना मीठा फल मैने आज चखा था.
भूल गई मै अपनी सारी पीड़ा हताशा और अपमान
मेरे ही अपने सुकर्मो ने जग मे बढाया मान.
बात पते की कहती हूं कभी ना करना किसी का अपमान
वो सदा खड़े हो देखता अपनी लाठी तान.
पडती जब उसकी लाठी तो होता मानव मूक
सदा नेक राह अपनाओ ,ये उपाय बड़ा अचूक.
मेहनत,ईमानदारी से सद्कर्मो की नदिया सदा बहावो
शांति, सुकून से अपनी मेहनत का मीठा मीठा फल खाओ.
कभी सुनहरा मिले जो अवसर सदकमो के बीज ही बोना
मनुज तन अनमोल मिला है व्यर्थ इसे ना खोना.

*****

जिंदगी में उतार-चढ़ाव एक खेल है

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

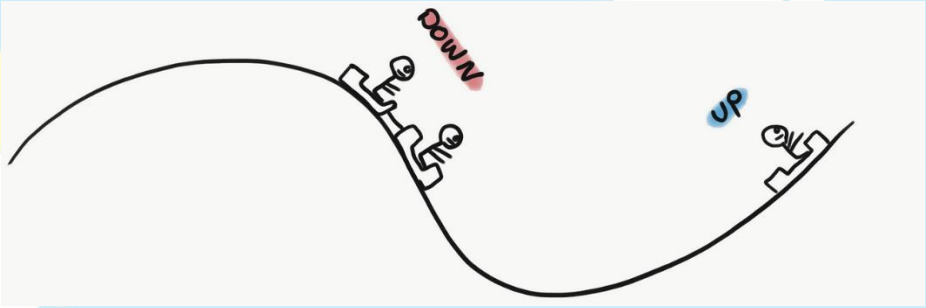

जिंदगी सुखों और दुखों का
बहुत ही ख़ूबसूरत मेल है
जिंदगी में उतार-चढ़ाव
बस एक ख़ूबसूरत खेल है

दुख भी शरमा जाएगें
यह कैसा माहौल है
जियो अगर दुखों को खुशी से
जिंदगी में यह सबसे यह अनमोल है

कभी ढेरों खुशियां आती है
कभी गम आते बेमिसाल है
घबरा जाए तो चुनौतियां से
वह भी क्या इंसान है

जीना सिखा दे बुरे वक्त में
वही असल इम्तिहान है
इम्तिहानो से भरी जिंदगी यही
खूबसूरत मिसाल है

सिर्फ सुख या सिर्फ दुख ही

जीवन में यह सरासर बेमेल है
जिंदगी में उतार-चढ़ाव होते रहें
बस यही तो खूबसूरत खेल है

जिस प्रकार दो पहियों से
पटरी पर दौड़ती रेल है
बस उतार-चढ़ाव जिंदगी के
खूबसूरत खेल है

*****

अंतरिक्ष - यात्रा

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

आओ! हम योजना बनाएँ
अंतरिक्ष - यात्रा पर जाएँ

चंदामामा के घर ठहरें
धमाचौकड़ी वहीं मचाएँ

नए - नए रहस्य जानेंगे
मस्ती से छुट्टियाँ बिताएँ

सौरऊर्जायान क्षितिज पर
बड़े मजे से खूब उड़ाएँ

शून्य गुरुत्वाकर्षण में हम
नवोन्मेष करके दिखलाएँ

वहाँ न कूड़ा - कचरा फेंकें
मोहक वातावरण सजाएँ

मिट्टी, पानी, खनिज धातुएँ
कई शीशियों में भर लाएँ

वहाँ से देखेंगे धरती को
हरियाली पर बलि - बलि जाएँ

मंगल ग्रह अगला पड़ाव है
अपनी बस्ती नई बसाएँ

गगनयान 'इसरो' भेजेगा
यात्रियों में नाम लिखाएँ

*****

बूझो तो जानें

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

1. जीवन वृक्ष या श्रीफल कह लो
इसकी गाथा बहुत पुरानी
इसके तने से घर बन जाते
फल दे दूध, तेल और पानी

2. मांस का सेवन नहीं जो करता
उसको देता है प्रोटीन
तेल, दूध, टोफू भी बनता
आधा सोया, आधा बीन

3. मछली, जिसका रंग सुनहरा
देख ले पराबैंगनी तरंग
आँखें खोलकर सो सकती है
कीड़े खाकर भरे उमंग

4. सफेद रंग का द्रव होता है
इसमें वसा, प्रोटीन कैसीन
पी लो या घी, दही बना लो
देता है बल - बुद्धि नवीन

5. केरोटीन - प्रोटीन से बनी
सिर के ऊपर उगे फसल
काटो तो हो दर्द नहीं
काला, सफेद में जाए बदल

1 नारियल 2 सोयाबीन 3 गोल्डफिश 4 दूध 5 बाल

*****

नटखट कन्हैया

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

ठुमक–ठुमक आए कन्हैया,
देखो नटखट है नंदलाल,
छम–छम छम घुँघरू बाजे,
पैरों में सुंदर साजे,
गोकुल की गलियों में घूमे,
घुँघरालू है उसके बाल.

रोम–रोम जब हर्षित होवे,
गूँजे आँगन किलकारी,
मनमोहक ये दृश्य सलोना,
छुप कर देखे गोपियाँ सारी,
नजर उतारे मातु यशोदा,
अचरज हो कर करे सवाल.

मधुर–मधुर मुरली की धुन,
सुन गैय्या रंभाये,
बाल रूप की छवि निराली,
आँखों में छप जाये,
मदमस्त मगन हो मेरे कान्हा,
बैठे कदंब की डाल.

करे उपाय लाख कंस,
भय सर में मंडराये,
बकासुर कृष्णा के आगे,
अपना प्राण गँवाये,
जन –जन हृदय वास मुरारी,
रखे सभी का ख्याल.

*****

मेरा देश

रचनाकार- पलक, कक्षा 7, उच्च प्राथमिक विद्यालय सबदलपुर, सहारनपुर

मेरा देश भारत देश.
सुंदर और सलोना देश.

सोने सी मिट्टी वाला,
चांदी से पानी वाला,
मेरा देश भारत देश.
सुंदर और सलोना देश.

शिक्षा और विज्ञान से नाता,
नई नई खोजे हैं लाता,
चंदा को छूता है हर दिन,
संकल्प इसका मंगलयान,
इससे बढ़ती मेरी शान,
बसती इसमें मेरी जान,
मेरा देश भारत देश.
सुंदर और सलोना देश.

साफ़ स्वच्छ है परिवेश,
देता सबको योग संदेश,
मिलकर रहना सिखलाता,
पूरी दुनिया से है नाता,
चलता सबके आगे आगे,
सबको ही तो प्यारा लागे,
सब देशों में न्यारा देश.
मेरा देश भारत देश.

*****

पहेलियाँ

रचनाकार- शगुन बर्मन, कक्षा 7, उच्च प्राथमिक विद्यालय सबदलपुर, सहारनपुर

1. पंख है लेकिन चिड़िया नहीं,
चलता है लेकिन बढ़ता नहीं,
गर्मी भागना इसका काम,
झट बतलाओ क्या है नाम.

2. एक लाठी की सुनो कहानी,
इसमें छुपा है मीठा पानी.

3. लाल पूंछ हरी बिलाई,
इसका बनता हलवा भाई.

4. पैरों में जंजीर लगी है,
फिर भी दौड़ लगाये,
पगडंडी पर चले झूम के,
गांव शहर पहुंचाए.

5. टिक टिक टिक चलती जाऊं,
सबको ही में समय बताऊं,
काम समय से जो कर पाए,
वो ही मेरा नाम बताएं.

6. आंखें दो हों चाहे चार,
मेरे बिना कोट बेकार,
घुसा आंख में मेरे धागा,
दर्जी के घर से फिर मैं भागा.

उत्तर - 1. पंखा 2. गन्ना 3. गाजर 4. साइकिल 5. घड़ी 6. बटन

*****

पेड़

रचनाकार- कुमारी टीकेश्वरी वर्मा, कक्षा 8 वीं , शा पूर्व माध्यमिक शाला तर्रा , विकासखंड धरसीवां

प्यारा मेरा पेड़ है,
धूप लगे तो छाया दे.
भूख लगे तो फल देता,
प्यारा मेरा पेड़ है.

झूला झूले इसपे चढ़के,
कभी नहीं सताता है.
फल इसके मीठे-मीठे,
सुंदर सुंदर फूल है.

पत्ते देखो बड़े निराले,
प्यारा मेरा पेड़ है.

*****

चंदा मामा

रचनाकार- शशिकांत कौशिक, बिलासपुर

चंदा मामा दूर से, देखे हमको घूर के.
आओ कभी हमारे घर, बैठे हो मगरूर से.

कभी बढ़ते कभी घटते हो,
फिर भी तुम अकड़ते हो.
एक दिन पूरा दिखते हो,
एक दिन किससे छिपते हो.
या भागे से फिरते हो, अपने किसी कुसूर से.
आओ कभी हमारे घर, बैठे हो मगरूर से.

बात भले मेरी तू न मान,
भेज दिया हमने चंद्रयान.
दक्षिण ध्रुव पर रोवर उतरा,
बढ़ गया भारत का अभिमान.
अब तो नीचे उतर आओ, आसमान सा गुरूर से.
आओ कभी हमारे घर, बैठे हो मगरूर से.

*****

जय हरछठ मैया की

रचनाकार- श्रीमती निहारिका झा, खैरागढ़

बछर में एक घांव आथे तिहार ऐ.
लइका मन के रच्छा के एही तिहार हे.
बलदाऊ भैया के जनम तिहार हे,
कांशी फूल से सरगी बनाथन
गौरी शिवा के पूजा ल करथन
छः ठिक कहानी नियम से कहिथन.
संयम नियम अब्बड़ परब के,
गैया के घी,दूध झन लेना भूल के,
भैंसी के दही संग पसहर के भात,
लाई, महुआ अऊ छः जातअनाज,
छः जात भाजी के चड़थे परसाद,
लइका के चेन्थी में पोता ल मारबो
जिनगानी लइका के हमन बढाबो.
राजी खुसी से तिहार मनाबो,
हरछठ्ठी मैया ल हमन मनाबो.

*****

चन्द्रयान -3

रचनाकार- श्रीमती सालिनी कश्यप, बलौदाबाजार

बचपन में सुना था चन्दा है मामा,
आज इसे सही मान रहा जमाना.
जब धरती माँ ने चन्दा मामा को राखी पहनाया,
ऐसे लग रहा मामा ने खुद इस रिश्ते को निभाया.
अब तीज का त्यौहार है आ रहा,
जिसमें उपहार स्वरूप विक्रम तस्वीरें है ला रहा.
हो गया दुनिया में भारत का नाम,
इसके लिये सभी वैज्ञानिकों को सलाम.
इसरो की मेहनत है रंग लाई,
आज पूरे देशवासियों की आंखें है भर आई.
खुशी इतनी है जिसका नही कोई ठिकाना,
भारत की ताकत को पूरी दुनिया ने है माना.
सभी देशों ने झंडा में चाँद बनाया,

भारत ने तो चाँद पे ही झंडा लहराया.
आज पूरे भारत के लिए है गर्व का दिन,
इतिहास ऐसे ही बनता है एक दिन.
आज भारत ने भी दुनिया में इतिहास बनाया,
जब चन्द्रयान-3 ने भारत का झंडा चाँद पर लहराया.

*****

विज़न 2047 नए भारत को साकार रूप देना हैं

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी, महाराष्ट्र

प्रौद्योगिकी पर जोर देकर
विकास को बढ़ाना हैं
विज़न 2047 नए भारत को
साकार रूप देना हैं

साथ मिलकर महत्वपूर्ण
भूमिका निभाना हैं
संकल्प लेकर सुशासन को
आखिरी छोर तक ले जाना हैं

भ्रष्टाचार को रोककर सुशासन को
आखरी छोर तक ले जाना हैं
सरकारों को ऐसी नीतियां बनाना हैं
भारत को सोने की चिड़िया बनानां हैं

आधुनिक प्रौद्योगिकी युग में भी
अपनी जड़ों से जुड़कर रहना है

प्रौद्योगिकी का उपयोग
कुशलतापूर्वक करना है

भारत को परिवर्तनकारी
पथ पर ले जाना हैं
सबको परिवर्तन का सक्रिय
धारक बनाना हैं

न्यूनतम सरकार अधिकतम
शासन प्रणाली लाना हैं
सुशासन को आखिरी
छोर तक ले जाना हैं

भारतीय लोक प्रशासन को
ऐसी नीतियां बनाना हैं
वितरण प्रणाली में भेदभाव
क्षमता अंतराल को दूर करना हैं

लोगों के जीवन की गुणवत्ता
कौशलता विकास में सुधार करके
सुखी आरामदायक बेहतर
ख़ूबसूरत जीवन बनाना हैं

सुविधाओं समस्यायों समाधानों
की खाई पाटना हैं
आम जनता की सुविधाओं को
अधनुतिक तकनीकी से बढ़ाना हैं

*****

साझा क़दम बढ़ाना है

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"खपरी"दुर्ग

साझा कदम बढ़ाना है.
चंदा में तो पहुंच गये हम.
अन्य ग्रहों में जाना है.
लंबे रेस का हमारा अभियान हो,
जन जन का उत्तम योगदान हो,
दुआ जुटाएंगे ईश्वर से,
और हर मंजिल को पाना है.
साझा क़दम बढ़ाना है

हर प्रयासों का गुणगान करें हम.
हर श्रम का भरपूर मान करें हम.
हौसला कमजोर न होवे,
हम सबको सतत बढ़ाना है.
साझा कदम बढ़ाना है.

*****

सूरज आया

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

बड़े सवेरे सूरज आया,
खिले फूल मौसम हरषाया.
चलीं हवाएं महकी महकी,

कोयलिया ने गीत सुनाया.
धूप तेज थी दोपहरी में,
सभी चले बरगद की छाया.
शाम सुहानी आई जैसे,
सौम्य हुई सूरज की काया.

*****

सपने सारे

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

सच होंगे सपने सारे,
गर तू हिम्मत ना हारे.
अपने श्रम के दीपक से,
ला जीवन में उजियारे.

जीवन पथ पर चल के तू,
तोड़ेगा नभ के तारे.

उसे सफलता मिलती है,
जो छोड़े आलस सारे.
जीवन के हर सपने को,
सच करना श्रम से प्यारे.

*****

तितली अलबेली

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

फूल-फूल संग जम के खेली,
फिर बोली तितली अलबेली.

कितने प्यारे ये गुलाब हैं,
कितने प्यारे फूल चमेली.

तरह-तरह के फूल खिलाते,
ये बगिया है अबुझ पहेली.

रंग सुहाने ले जाउंगी,
बन जाउंगी छैल छबीली.

मुझे देख सब बोल उठेंगे,
तितली मेरी सगी सहेली.

*****

सीखो पढ़ना लिखना

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

सीखो पढ़ना लिखना लाली,
जीवन में लाओ खुशहाली.

सबको शिक्षा से जोड़ो जी,
अनपढ़पन को समझो गाली.

अगर नहीं पढ़ना सीखोगे,
सभी कहेंगे तुम्हे मवाली.

पढ़ने से किस्मत की रेखा,
देगी कुर्सी अफसर वाली.

मोटर कोठी देगी शिक्षा,
तेरी होगी शान निराली.

*****

पेड़ की महिमा

रचनाकार- संतोष कर्ष, कोरबा

पेड़ लगाएं पेड़ लगाएं
आओ साथियों पेड़ लगाएं
धरती को खुशहाल बनाएं
पेड़ ना हो तो हम ना होंगे
हमारे वंशज सजा भुगतेंगे
चिड़िया ना होगी
फल भी ना होंगे
हाथी, बाघ, शेर ना होंगे
बंदर मोड़ दिखाई ना देंगे
गर दुनिया में पेड ना होंगे
कारखाने लगाकर क्या कर लोगे
पेड़ लगाकर जीवन लोगे
पेड़ ना हो तो छांव न होगी
पैर जलेंगे, वर्षा न होगी
बंजर धरती, पर्यावरण असंतुलित होगी
पेड़ न लगाओ तो क्या पाओगे
जीवन भर तुम पछतावोगे

चलो मिलकर हम पेड़ लगाएं
इस धरती को स्वर्ग बनाएं
पेड़ लगाएं, पेड़ लगाएं
जीवन को खुशहाल बनाएं

*****

झन काटव रुख-राई ल

रचनाकार- संतोष कर्ष, कोरबा

चल संगी रुख-राई लगाबो.
भुइयाँ के उमर ल बढ़ाबो.

चारो कति ले रुख नँदागे.
रेंगत रेंगत गोड़ पिरागे.
छईयाँ खोजव मिलत नइये,
खोजत खोजत गला सुखाये,
रद्दा बनगे पेड़ कटागे,
चल संगी रुख-राई लगाबो.
भुइयां के उमर बढ़ाबो.

बेंदरा मन घलो सिरागे,
टाँगी ले के मानुष आगे,
हाथी बपरा रद्दा भुलागे,
नरवा तलवा सबो सुखागे,
रुख कटागे मशीन आगे,
पानी घलो बदरा संग भागे,
तभे त कइथव संगी हो,
चल संगी रुख-राई लगाबो.
भुइयां के उमर बढ़ाबो.

*****

हम जनता सबके मालिक हैं

रचनाकार- किशन सनमुुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

सरकार कानून सब साथ देंगे
बस हमें कदम बढ़ाना है
हम जनता सबके मालिक हैं
यह करके दिखाना है

इसांनियत को जाहिर कर
स्वार्थ को मिटाना है
बस यह बातें दिल में धर
एक नया भारत बनाना है

एकता अखंडता भाईचारा
यह जरूर होगा पर
इसकी पहली सीढ़ी
अपराध को हृदय से मिटाना है

कलयुग से अब सतयुग हो

ऐसी युग बनाना है
हम सब एक हो ऐसा ठाने
तो ऐसा युग जरूर आना है-3

पूरी तरह अपराध मुक्त भारत बने
ऐसी चाह बनाना है
भारत फिर सोने की चिड़िया हो
ऐसा भारत बनाना है

सबसे पहले खुद को
इस सोच में ढलाना हैं
फिर दूसरों को प्रेरित कर
जिम्मेदारी उठाना है

ठान ले अगर मन में
फिर सब कुछ वैसा ही होना है
हर नागरिक को परिवार समझ
दुख दर्द में हाथ बटाना है

इस सोच में सफल हों
यह जवाबदारी उठाना है
मन में संकल्प कर
इस दिशा में कदम बढ़ाना है

पूरी तरह अपराध मुक्त भारत बने
ऐसी चाहना है
भारत फिर सोने की चिड़िया हो
ऐसी भावना है

*****

छत्तीसगढ़ के प्रमुख फसल धान

रचनाकार- श्रीमती युगेश्वरी साहू, सारंगढ़

हमर छत्तीसगढ़ के प्रमुख फसल धान हावय
खून पसीना बहाके उपजावत ओला किसान हावय.
धान के फसल हर हरिहर हरिहर लहलहाथे
इखरे खातिर मोर छत्तीसगढ़ हर धान के कटोरा कहलाथे.
धान के खेती हर अबबढ़ सुख देथे
किसान के मन ल मोहित कर लेथे.
आज के जमाना म खेती होथे ट्रेक्टर अऊ थ्रेसर से
विज्ञान के चमत्कार से मुक्त हावय तनाव प्रेशर से.
मोर छत्तीसगढ़ के माटी हर उगलत हावय सोन सही धान
जब घर म आथे धान गदगद हो जाते लईका सियान.
धान के निकले चाउर के कतका करों बखान
चीला,सोहारी,खुर्मी, आइरसा बनथे ऐखर पकवान.
आनी बानी के हावय धान ओमा ल निकले सादा पिसान
धन्य हे धान के उपजोइया मोर छत्तीसगढिया किसान.

*****

प्रभु श्रीकृष्ण

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली

स्वर्ग से उतर आए भगवान विष्णु,
माँ देवकी के गर्भ से लेने अवतार.
युगपुरुष कृष्ण बनकर जन्म लिया,
अत्याचारी कंस का करने संहार.

बालपन में राक्षसों का वध किया,
वृंदावन में सखा संग गाय चराये.
बजाकर मनमोहक सुरीली बाँसुरी,
गोपियों को अपने संग में नचाये.

चौंसठ कलाओं के सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता,
द्वापरयुग के आदर्श देव दार्शनिक.
निष्काम कर्मयोगी और स्थितप्रज्ञ,
महान् विश्व गुरु प्रभु द्वारकाधीश.

विराट रूप तीन लोक, चौदह भुवन,
कुरुक्षेत्र में अर्जुन को किया प्रेरित.
त्रिकर्म, जीवन, सुख-दुःख के चक्र,
गीता ज्ञान के गंगा करके प्रवाहित.

यादव वंश के शिरोमणि, कुलभूषण,
युगों-युगों तक भारत में यदुवंशी राज.
आपको जन्मदिन की बधाई हो कान्हा,
हम पर कृपा बना कर देना आशीर्वाद.

*****

जाग,हुआ है नया सबेरा

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"खपरी"दुर्ग

सूरज की सोने सी किरणें,
स्वागत कर रहे हैं, तेरा.
चल जाग,हुआ है नया सबेरा.
चल जाग,हुआ है नया सबेरा.
चहल-पहल है हर गलियों में.
मुस्कान जगी है हर कलियों में.
खुशबू लेकर,चल रही हवाएं,
खग-वृन्द,भौरें गाना गाये.
झूम रहे हैं तृण, पेड़ लताएँ,
नदी जलाशय भी लहरायें.
नभ को नाप रही है चिड़िया,
छोड़कर अपना अपना डेरा.
चल जाग,हुआ है नया सबेरा.

*****

परिश्रम का फल

रचनाकार- सृष्टि प्रजापति, कक्षा-आठवी, स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर छ:ग

एक समय की बात है. दो मित्र हुआ करते थे. उसमे से एक बहुत आलसी था. न ही वह पढाई करना चाहता था और न ही किसी भी कार्य को करने मे रुचि दिखाता. बस सदा खाने, खेलने, और सोने में उसका ध्यान रहता. दूसरा बड़ा परिश्रमी था वह पढाई में भी अव्वल था. और बडा जिज्ञासु था.

एक दिन दोनों मित्र बैठकर चर्चा कर रहे थे. तभी उस आलसी मित्र ने कहा - एक ही तो जिंदगी है, आराम से हँसते-खेलते, मौज-मस्ती करते बिताएँगे. अभी से क्यो इतना परिश्रम करना. फिर आगे चलकर हमें ही तो अपने परिवार को सँभालना है.

उसकी बात सुनकर दुसरा मित्र समझाते हुए बोला- पता है! एक ही ज़िन्दगी है. यह समय अमूल्य है. इस जीवन का हमें सही उपयोग करना चाहिए ताकि जब हम इस दुनिया में न हों तब हमारा नाम और हमारे द्वारा किये गये काम से हमारी याद हो. इसलिए क्यों न हम एक लक्ष्य निर्धारित कर ले जो हमारे परिवार,समाज और देश सभी के लिए सही हो. फिर हमें उस लक्ष्य को पूरा करने के लिए परिश्रम करना होगा. और जब उस परिश्रम के फल से हमें हमारा लक्ष्य मिल जायेगा उस दिन हमारी एक पहचान होगी. हमारे पास वो सब कुछ होगा जिसकी पहले हम सिर्फ कल्पना किया करते थे.

जिस प्रकार एक-एक ईंट जोडकर परिश्रम से एक महल बनता है. ठीक इसी

प्रकार परिश्रम के छोटे-छोटे कदम से हम अपने लक्ष्य के पास आकर उसे पा लेते हैं.

*****

घर भी है एक भगवान

रचनाकार- सलीम कुर्रे, कक्षा 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

खुद तो धूप में रहता है.
लेकिन हमको छाया देता है.
गर्मी हो या सर्दी हो,
हमें अंधियारे से बचाता है.
एक जगह खड़ा रहता है,
फिर भी हमें सुरक्षित रखता है.
खुद तो भीगता है पानी में,
लेकिन हम सब को भीगने नहीं देता.
घर भी है एक भगवान,
क्या लेते हैं? क्या देते हैं?पता नहीं चलता.

*****

भोजन

रचनाकार- गौरव पाटनवार, कक्षा -3 री, केन्द्रीय विद्यालय, गोपालपुर कोरबा

सभी संतुलित भोजन खाएं
कुपोषण से मुक्ति पाएं.

चावल, गेहूं, आलू खूब खाएं
कार्बोहाइड्रेट से ऊर्जा पाएं.

मक्खन घी, तेल से सब्जी बनाएं
वसा से शरीर तंदुरुस्त हो जाएं.

प्रोटीन से वृद्धि विकास बढ़ाएं
भोजन में दाल सोयाबीन खाएं.

रोज भोजन में विटामिन अपनाएं
फल के साथ हरी सब्जी खाएं.

रोज तीन लीटर पानी पी जाएं
भोजन में सलाद रोज खाएं.

सभी संतुलित भोजन खाएं
कुपोषण से मुक्ति पाएं.

*****

भारतीय संस्कारों को जीवन में अपनाते रहें

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

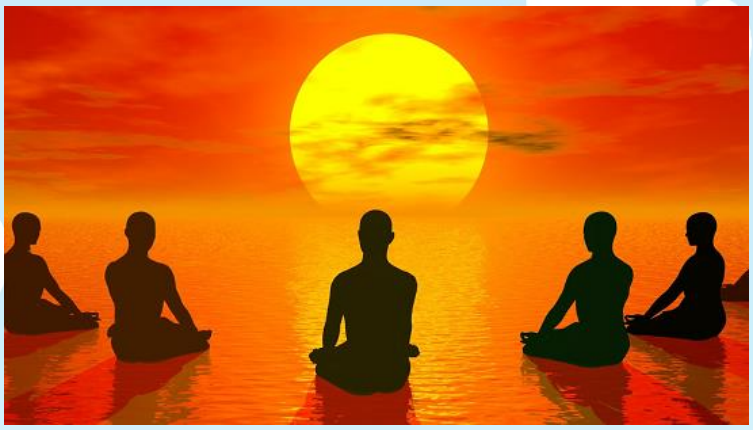

भारतीय संस्कारों को जीवन में अपनाते रहें
सभी जीवो का कल्याण का कार्य करते रहें
किसी के दुखों का कारण न बने
सभी की भलाई निस्वार्थ करते रहें

यह भाव हर मानवीय जीव में रहे
दुनिया में सभी सुखी रहें
जीवन भर सभी के मन शांत रहें
दूसरों की परेशानी में मदद करें

कभी किसी को दुख का भागी ना बनना पड़े
यह कामना हर मानवीय जीवन में रहे
जीवन में किसी जीव को न करें परेशान
ना करने का मंत्र ज्ञान मस्तिष्क में रहे

सभी जीवन में सुखी रहें
दुनिया में कोई दुखी ना रहे
सभी जीवन भर रोग मुक्त रहे
मंगलमय के हर पल के सभी साक्षी रहे

सभी श्लोकों को पढ़कर जीवन में आनंद करें
महापुरुषों के ग्रंथों को पढ़कर
सही रास्ते पर चलकर
सभी में यह सोच भरें
किसी की बुराई और परेशान ना करें

*****

मेरी हस्तलेखा

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 8वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार शासकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय तारबहार बिलासपुर

ओ मेरी हस्तलेखा,
पता नहीं कब सुधरेगी!
कोशिश चाहे कितनी कर लूँ
न जाने कब अच्छी बनेगी!

पहले तो यह मैं समझती थी,
कि नहीं होता इसका महत्व.
लेकिन मुझे क्या पता था,
यही तो है असली आकर्षक तत्व.

इसी गलतफहमी में,
नहीं दिया इस पर ध्यान.
और फिर धीरे-धीरे,
घटता गया इसका स्थान.

जैसे तितलियां रंग बिरंगी,
करती हमें आकर्षित.
वैसे ही हस्तलेखा परीक्षा में,
करती हमें प्रकाशित.

परीक्षक जब देखते हैं,
हस्तलेखा बढ़िया.
जांच कर समझते उत्तरों को,
अंत में अंक देते बढ़िया-बढ़िया.

खराब हस्तलेखा देखकर,
हो जाता उनका मन खराब.
अगर उत्तर सही भी हो,
तो भी देते अंक खराब.

इसलिए तो है ये एक तरह से,
अच्छे अंक की चाबी.
अगर यह तुम्हारी अच्छी है तो,
पक्की है कामयाबी.

वैसे तुम्हारी हस्तलेखा कैसी है?

*****

हाथी

रचनाकार- श्रीमती युगेश्वरी साहू, बिलाईगढ़

देखो देखो हाथी आया;
लम्बी-लम्बी सूंड हिलाया.
मोटी-मोटी टाँगे इसकी
छोटी-छोटी आंखे इसकी
गन्ने पत्ती खाता है,
नदी में जाकर नहाता है.
सूंड में पानी भरकर लाता
दर्जी मामा पर फुर्राता
झूमते-झुमते आता है
सबको नाच दिखता है

*****

मछली

रचनाकार- श्रीमती युगेश्वरी साहू, बिलाईगढ़

जल की रानी मछली रानी
लहराती है पानी-पानी
चपटी-चपटी,मोटी-मोटी
पतली-पतली,छोटी-छोटी
चित्ती धारी मछली रानी
सुंदर-सुंदर,प्यारी-प्यारी
भोली-भोली, न्यारी-न्यारी
नहीं रहती है बिन पानी
पंख सुनहरे नित चमकाती
जल की रानी मछली रानी
लहराती है पानी-पानी.

*****

आओ मिट्टी और पर्यावरण की रक्षा करें

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

आज विश्व का हर देश पर्यावरण संबंधी समस्याओं का सामना कर रहा है जिसका समाधान खोजने के लिए विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सभी देश एकत्रित होकर पर्यावरण की सुरक्षा के मुद्दों पर अनेक उपायों की चर्चा कर उनके क्रियान्वयन में लगे हुए हैं जिसमें पेरिस समझौता सहित अनेक ऐसे समझौते शामिल हैं. अभी 9-10 सितंबर 2023 को जी-20 देशों के नेताओं के शिखर सम्मेलन में भी जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर ध्यान आकर्षित होगा जो मानवीय जीवन को बिगड़ते पर्यावरण के खतरों से बचाने के लिए मील का पत्थर साबित होगा.

भारत न केवल हर अन्तर्राष्ट्रीय मंच से पर्यावरण की सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान और सहयोग प्रदान कर रहा है बल्कि घरेलू स्तर पर भी अनेक लक्ष्यों को भी अपने निश्चित समय से पूर्व पूर्ण करने की ओर अग्रसर है. राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण की सुरक्षा के लिए अनेक सामाजिक, सहकारी, सरकारी, निजी संस्थाएँ कार्य कर रही है परंतु अगर वास्तव में हमें पर्यावरण को सुरक्षित करना है तो हर नागरिक को पर्यावरण सुरक्षा संबंधी इस यज्ञ में अपने सहयोग रूपी आहुति देनी होगी और अभियान चलाकर, मिट्टी और पर्यावरण की रक्षा का, नारा देना होगा! मानव को प्रकृति का साथी बनना होगा तथा अनुकूल मानवीय सभ्यता पर्यावरण संबंधित समस्याओं को दूर कर खुशहाल समृद्ध टिकाऊ भविष्य का निर्माण करने की सोच रखनी होगी.

पीआईबी के अनुसार केंद्रीय रक्षा मंत्री ने एक कार्यक्रम में संबोधन में, विज्ञान के क्षेत्र में नई प्रौद्योगिकियों को खोजने तथा ऐसे नवोन्मेषण करने की अपील की जो पर्यावरण के अनूकूल मूल्यों को बनाये रखेंगे. उन्होंने कहा, हमें प्रकृति का साथी बन जाना चाहिए तथा जीवों के साथ साथ प्रकृति के निर्जीव तत्वों के प्रति भी श्रद्धा और सम्मान की भावना रखनी चाहिए. मुझे पूरा विश्वास है कि धीरे धीरे मानव सभ्यता हमारे समय की पर्यावरण संबंधित समस्याओं को दूर करेगी तथा हम सभी के लिए एक खुशहाल, समृद्ध, न्यायसंगत तथा टिकाऊ भविष्य का निर्माण करेगी.

उन्होंने पर्यावरण के क्षरण पर चिंता जताई और कहा कि पृथ्वी के इकोसिस्टम का निर्माण इस तरह से हुआ है कि किसी एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में प्रभाव केवल उसी क्षेत्र तक सीमित नहीं रहता बल्कि यह पूरे विश्व को प्रभावित करता है. उदाहरण के लिए हमारे सामने कार्बन उत्सर्जन का मामला है. भले ही यह एक देश में हो रहा हो, निश्चित रूप से यह अन्य सभी देशों को प्रभावित कर रहा है. यही कारण है कि वैश्विक पर्यावरण सुरक्षा के संबंध में, सभी शिखर सम्मेलन, सम्मेलन, संधियाँ तथा समझौते, चाहे वह रियो समिट हो या डेजर्टिफिकेशन से मुकाबला करने के लिए संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन, जलवायु परिवर्तन कन्वेंशन, क्योटो प्रोटोकॉल या पेरिस सम्मेलन, वे सभी समान रूप से एक सुर में कार्य करने के लिए विश्व के सभी देशों का मार्गदर्शन करते हैं. एक जिम्मेदार राष्ट्र के रूप में, भारत ने अपनी परंपरा और संस्कृति से निर्देशित होकर निरंतर मृदा संरक्षण क लिए कार्य किया है. केवल मिट्टी पर ध्यान केंद्रित करने के जरिये मृदा संरक्षण नहीं किया जा सकता. हमने इससे जुड़े सभी घटकों जैसे वनीकरण, वन्य जीवन, आर्द्र भूमि आदि को संरक्षित करने और बढ़ाने का कार्य किया है. केवल सामूहिक प्रयासों से ही सामूहिक समस्याओं का निदान संभव होगा. इसलिए, यह आवश्यक है कि हम सभी मिट्टी और पर्यावरण की रक्षा करने का प्रयास करें और एक साथ मिल कर एक बेहतर विश्व की ओर बढ़ें.

उन्होंने मिट्टी बचाओ अभियान को उम्मीद की किरण बताया क्योंकि इससे यह विश्वास पैदा होता है कि इस अभियान के माध्यम से विश्व भर के लोग आने वाले समय में मृदा के स्वास्थ्य को बनाये रखने में योगदान देंगे. उन्होंने कहा कि यह अभियान न केवल मिट्टी की रक्षा करने बल्कि मानव सभ्यता एवं संस्कृति को संरक्षित करने का भी एक प्रयास है.

उन्होंने पर्यावरणीय समस्याओं को दूर करने के लिए प्रेरित करने के अतिरिक्त लोगों को योग के माध्यम से अधिक प्रसन्नचित्त तथा अधिक सार्थक जीवन जीवन जीना सिखाने के लिए किए जा रहे कार्यों के लिए उनकी सराहना की. उन्होंने कहा, वसुधैव कुटुम्बकम का संदेश देकर भारत ने अपनी सीमा के भीतर रहने वाले लोगों को ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व के लोगों को अपना परिवार माना है. श्री सद्गुरु ने अपने काम से निश्चित रूप से एक नया पर्यावरण आंदोलन पैदा करने के लिए वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को जीवंत बनाया है. उन्होंने कहा, वह मिट्टी बचाओ जैसे अभियानों तथा अध्यात्मिकता के माध्यम से दिव्य संदेश दे रहे हैं.

*****

शत शत बार नमन

रचनाकार- भूपसिंह भारती, हरियाणा

दो अक्टूबर को खूब खिले,
उपवन में दो अनुपम सुमन.

जिनकी महक से महका है,
भारत माँ का पावन आँगन.

बापू गाँधी लाल बहादुर,
भारत के दो अनमोल रतन.

अंग्रेजों से लड़ी लड़ाई,
किए खूब थे आंदोलन.

सत्य अहिंसा के बल पर,
आजाद कराया निज वतन.

जय जवान जय किसान का,
नारा गुंजाया था बीच गगन.

अपने सतकर्मों से दोनों,
देश में लाये चैन अमन.

देश धर्म और संस्कृति पर,
तन मन धन कर गए अर्पण.

नत मस्तक हो करे 'भारती',
इनको शत शत बार नमन !!!

*****

पत्तियाँ

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे, कोरबा

पत्तियाँ तरह-तरह के होती हैं पत्तियाँ
रंग-बिरंगे सुंदर मनमोहक़होती हैं पत्तियाँ
कई रूप रंग आकार के होती है पत्तियाँ
छोटे- बड़े ,लंबे -चौड़े ,गोल- अंडाकार होती है पत्तियाँ
नुकीले, कटीले और धारदार होती हैं पत्तियाँ
एकांतर और जालीनुमा होती हैं पत्तियाँ
नरम -खुरदुरे, चिकनी और गद्देदार होती है पत्तियाँ
खट्टे* मीठे ,कड़वे और नमकीन होती है पत्तियाँ
औषधियां और अनेक सब्ज़ियां बनती है पत्तियाँ
तरह-तरह घर और छतरी बनती है पत्तियाँ
अनेकों जीव -जंतु के बसेरा बनती है पत्तियाँ
प्रकृति की मनमोहक छटा है ये पत्तियाँ
तरह-तरह के होती है पत्तियाँ

*****

बादल फटते क्यूँ हैं

रचनाकार- सावित्री शर्मा" सवि ", उत्तराखंड

रजत के पापा टी वी पर तन्मय होकर समाचार सुन रहे थे कि उन्होंने रजत की मम्मी को आवाज़ दी,

" मीनू जल्दी से मेरा फ़ोन लाना,उत्तरकाशी के पास धरासू में बादल फटने की खबर आई है.घर पर फ़ोन कर लेते है,सब ठीक तो है "

रजत की मम्मी ने जल्दी से फ़ोन लाकर दिया,

वही पास में छे सात साल का रजत कलर बुक में कलर कर रहा था.उसका ध्यान अपने पापा की बात पर गया.उसने बाल सुलभ जिज्ञासा से पूँछा,

"पापा बादल फटना क्या होता है ?"

" बेटा तुमने बहुत अच्छा सवाल किया है.आओ यहाँ आकर मेरे पास बैठो.मैं तुमको विस्तार से बताता हूँ "

रजत पास आकर पापा के पास वाली कुर्सी पर बैठ गया.

"लीजिए मैं आ गया, अब बताइए पापा"

पापा ने रजत को समझाना शुरू किया.

“ बेटा बादल फटना एक तकनीकी शब्द है.जिसका प्रयोग मौसम वैज्ञानिक करते हैं.इसका मतलब है अचानक से एक जगह बहुत सारी बारिश होना.IMD के अनुसार अगर एक जगह पर एक घंटे में 100 MM बारिश होती है तो इस प्रक्रिया को बादल फटना कहते हैं.ये ठीक उसी तरह होता है जैसे पानी का ग़ुब्बारा फूट जाए तो अचानक से सारा पानी एक जगह गिर जाएगा.इस घटना को क्लाउड बर्स्ट कहते हैं.

“ पर पापा ये फटते क्यूँ है बादल?”

“अच्छा लग रहा है तुम सवाल पूँछ रहे हो,सवाल करने से नई जानकारी मिलती है,कोई भी प्रश्न मन में आए पूछना अवश्य चाहिए,तो सुनो,अभी मैंने बताया की बादल फटना किसे कहते हैं.अब ये होता क्यूँ है ?ये भी समझो.जब एक जगह बहुत ज़्यादा नमी वाले बादल एक ही जगह इकट्ठा हो जाते हैं तो वहाँ मौजूद पानी की बूँदें आपस में मिलती है इसके भार से बहुत तेज़ बारिश शुरू हो जाती है ज़्यादातर ये घटनाएँ पहाड़ों पर घटती हैं.इसका कारण है कि पानी से भरे बादलहवा के साथ उड़ते हैं ऐसे में कई बार वो पहाड़ों के बीच फँस जाते हैं और ये बादल पानी में परिवर्तित हो जाते हैं तथा एक ही जगह बरसने लगते हैं.इस कारण तेज बारिश शुरू हो जातीं है.बादल फटना बारिश का चरम रूप है.इस घटना में बारिश के साथ कभी कभी गरज के साथ ओले भी पड़ते हैं.

सामान्यतया बादल फटने के कारण सिर्फ़ कुछ मिनट तक मूसलाधार बारिश होती है.

“ पापा इसे कितना अजीब लगता होगा ना इतनी बारिश का एक साथ होना “

“ हाँ बेटा,ऐसी बारिश से कभी कभी बाढ़ की सी स्थिति उत्पन्न हो जाती है.ये प्रक्रिया पृथ्वी से अमूमन पंद्रह किलोमीटर की ऊँचाई पर घटती है “

“ पापा ये मैदानी इलाक़ों में बादल ज़्यादा फटते हैं या पहाड़ी इलाक़ों में ज़्यादा होती है ?”

“बेटा, पहाड़ी इलाक़ों में में ज़्यादा असर होता है क्यूँ की बादल काफ़ी मात्रा में पानी आसमान में लेकर चलते हैं.जब उनके रास्ते में कोई बड़ी बाधा आती है तब उनसे टकराकर ये अचानक फट जाते हैं “

आज पापा से नई जानकारी लेकर रजत बहुत ख़ुश था.सोच रहा था कल स्कूल जाकर अपने दोस्तों को बताएगा.

*****

तोता

रचनाकार- काव्या दिवाकर, कक्षा - चौथी' ब '

मेरा तोता प्यारा है
जग में सबसे न्यारा है
मीठा - मीठा गाता हैं
मेरा मन बहलाता है
लाल - लाल मिर्च वो खाता है
फिर पेड़ में जा बैठता है
मीठा - मीठा गाता हैं
मेरा तोता प्यारा है
जग में सबसे न्यारा हैं.

*****

पेड़ भी है दानी

रचनाकार- सलीम कुर्रे, कक्षा 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

इन पेड़ों को देखो. इन पेड़ों को देखो.
कितना सुंदर फूल खिला है.
आओ-आओ यहाँ देखो,
कितना सुंदर फूल खिला है.
गाओ यहाँ. नाचो यहाँ.
झूम-झूम के गाओ यहाँ.
पेड़ों में भी है जान.
इन पेड़ों में भी है ज़ान.
इनके माध्यम से जीते हैं यहाँ,
इनसे ही एक उम्मीद है हमारी.
इनसे ही मिलती है शुद्ध हवा,
ये पेड़ भी है एक दानी.
क्या लेते हैं? क्या देते हैं?
इनसे ही पूरी होती है जरूरतें सारी,
इनसे ही मिलती है जरूरत की सारी समानें.
ये पेड़ भी एक दानी है.

*****

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- डॉ0 कमलेन्द्र कुमार, उत्तर प्रदेश

तीन अक्षर का मेरा नाम,
जल ही जल तुम पाओ.
सागर मुझको समझ न लेना,
जल्दी से बतलाओ.

जिस दिश जाएं सूरज दादा,
उस दिशि मैं हो जाती हूँ .
राम ,श्याम और मनोहर,
बोलो क्या कहलाती हूँ?

फूलों पर मडराता हूँ,
मधु पराग ले जाता हूँ.
सोचों समझो ध्यान लगाओ,
बोलो क्या कहलाता हूँ?

अंत हटे तो "आका"हूँ मैं
प्रथम हटे तो "काश"
मध्य हटे तो "आश" बनूँ मैं
बोलो राम प्रकाश.

अंत हटे तो "पपी" बनूँ मैं,
प्रथम हटे तो पीता.
रंग है मेरा पीला पीला,
बोलो राम सुनीता.

*****

छतीसगढ़ के पोरा पुरखा के परब

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारयण

घर-अंगना के आघु तीर म ,गउ-माता लक्ष्मी बिराजे हे,
घर के संगी हमर सहारा,बाहन-बईला संग म बिराजे हे.

ए कविता ल चरितार्थ करत पोरा के परब, हमर रीति,रिवाज,परमपरा ल आऊग राखे हावे जेहर हमर छत्तीसगढ़ राज के लिए विशेष महत्व रखते.सम्मक भारत देश म हमर छतीसगढ़ राज अईसन हावे की इहाँ सम्मक छतीसगढ़ म खेती-किसानी के कारज होथे,अउ इहाँ के वासी मन धान के खेती ल करथें, तभे तो हमर राज ल कृषि प्रधान माने गए हावे.अउ जब खेती किसानी के काम शुरू करथे ओकर पहिली किसान भाई मन अपन नांगर के पूजा अर्चना करथें.संग म अपन संगी सहारा बरोबर अपन बाहन-बईला के भी पूजा ल सुग्घर बिधि-बिधान से करथें.अउ इही कारण हमर राज म अलग संस्कृति,अउ परमपरा ह झलकथे.

परब के शुरवात:-

वईसे तो हमर छत्तीसगढ़ म हमर किसान भई मन हरेली ले परब के शुरवात कर देथें.अउ अपन पारम्परिक पुरखा के रद्दा म चलके अपन धरम ल निरवाह करथें. ठीक हरेली परब के बाद म हमर छत्तीसगढ़ के दूसर परब पोरा हर आथे जेला हमर राज म "पोरा" के नाम से जाने जाथे.पोरा परब ल भादो मास के अमावस्या तिथि के दिन मनाय जाथे.पोरा मनाय के पाछु सुंदर कारण हावे ,कारण ए हरे की बरसाती फसल धान के निंदाई-कोड़ाई अउ बियासी के कारज अब खतम हो गए हे,धान के फसल ह सुग्घर लहलहावत बाढ़ गय हावे,जेला देख के किसान भाई मन अड़बड़ प्रसन्न हो जाथे,ए सब सुग्घर

फसल ल देख के किसान भाई मन अपन बाहन-बईला के पूजा-अरचना करथें.अउ ओला धन्यवाद देथें.

गाँव-गंवई म उल्लास के वातावरण:-

पोरा परब के अगोरा हमर गाँव-गंवई ल साल भर ले रहिथे,जब ए हर आथे,त पूरा गाँव म उजास छा जाथे.हमर किसान भई मन अपन बईला ल नउहा के सुग्घर सिंगार करथें ओकर पूजा करथें अउ फिर ओ बईला मन ल गुरहा चीला ल ख़वाथें अउ फिर उही ल प्रसाद के रूप म खाथें. गाँव के नान्हे-नान्हे बाबू पिला मन माटी के, कठवा के, बईला ल खेलउना बना के चलाथें,संग म नान्हे-नान्हे नोनी मन भी माटी के चूलहा चउकी के खिलऊना बना के खेलथें .अईसनहा खिलउना ल खेल के ए माने जाथे की बाबू पिला हर खेती-किसानी अउ नोनी पिला हर चूलहा-चउकी के रिवाज, पुरखा के पुस्तैनी कारज ल ग्रहण करत हावे,ओला समझत हावे.

किसम -किसम के रोटी-पीठा के प्रचलन:-

छत्तीसगढ़ के ए परब म किसम- किसम के रोटी बनाय जाथे जेमा गुरहा चीला, ठेठरी,खुरमी,चौसेला,अईरसा अउ दुदभात प्रमुख माने जाथे.ओकर बाद ए सब के बईला ल भोग लगा के ओला खवाय जाथे अउ फिर ओला घर म बाँट दिए जाथे. गाँव के नोनी मन अपन घर के बाहिर जे करा सहाड़ा देवता बिराजे रथे ओ करा जाथे पोरा पटके के नेंग ल करथें.ओ जगह म अपन खिलउना ल पटक- पटक के फोरथें अउ सहाड़ा देवता के प्रति अपन श्रद्धा ल प्रकट करथें. गाँव म बड़े-बड़े बाबू पिला मन भी कबड्डी,खो-खो,दउड़ आदि खेलथें अउ पोरा उत्सव मनाथें.

पोरा के दिन किसानी काम के मनाही अउ मान्यता:-

पोरा तिहार के पहिली रात गरभ पूजा करे जाथे,अईसे मान्यता हावे की इही दिन अन्नकुमारी हर गरभ धारण करथे,अर्थात धान म दूध ह भराथे.जेखर कारण ओ दिन खेती के काम हर बंद रहिथे.

इही प्रकार दूसर मान्यता ए भी हावे की पोरा के दिन आधा रात म जब पूरा गाँव व हर सुत जाथे तब गाँव के बईगा सियान मन गाँव व देवता मन के पूजा-पाठ करथें अउ प्रसन्न करके गिरहा-बाधा दूर करके सुख शान्ति के आशीर्वाद मांगथें.अउ ओकर बाद सब पूजा-आँचा के समान ल गाँव के सिवाना में बिदा कर आथें . ए प्रकार से कहे जा सकत हे की ए तिहार मन हमर संस्कृति अउ परमरा के धरोहर आए,जेला हमन ल बचाए के सोंचना चाहिए.

माटी हे हमर खेती-बारी ,माटी हमर जेवनहारी
माटी हे अन्नकुमारी, इही म पुरखा के चिन्हारी.

*****

प्यारे बप्पा

रचनाकार- उर्मी साहू, कक्षा - 6, विध्यालय - स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार शासकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय तारबहर बिलासपुर

गणपति बप्पा आते हैं,
हर साल खुशियाँ दे जाते है.
पसंद है उनको मोदक, लड्डू,
जो उनको सदा ही भाते है.

मिलकर साथ मूषक के,
मित्रता की मिशाल दे जाते है.

सीख दिलाई चंद्रमा को,
और कुबेर को भी पाठ पढ़ाया,
जिनको धन की गर्मी थी.

समझ न पाए एक दांत को,
एक कटोरी भात की कमी थी.

भाद्रपद की चतुर्थी में,
सबके घर पर आते है.
कुछ दिन सबके साथ ही रहकर,
फिर वापस हो जाते हैं.

ज्ञान के हो देवता आप,
मेरी यही कामना आपसे.
सदा दिखाना मुझको राह,
आशीर्वाद भी देना मुझको,
कभी न छोड़ना मेरा साथ.

*****

पर्यावरण की सुरक्षा

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

हर नागरिक को पर्यावरण सुरक्षा संबंधी पांच कठोर संकल्प लेने की ज़रूरत

हम लंबे समय से पृथ्वी के पारिस्थितिक तंत्र का उपभोग, शोषण और विनाश कर रहे हैं, अब तीव्रता से इसकी सुरक्षा करने को रेखांकित करना ज़रूरी - एडवोकेट किशन भावनानी गोंदिया

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर वर्तमान कुछ दशकों से पर्यावरण संबंधी त्रासदी का सामना हर देश कर रहा है इसलिए पर्यावरण सुरक्षा को गंभीरता से रेखांकित करना हर देश के हर नागरिक के लिए तात्कालिक जरूरी है हो गया है. अब समय आ गया है कि वैश्विक स्तरपर हर नागरिक को पर्यावरण की सुरक्षा अपने निजी, व्यक्तिगत कार्य मानते हुए कम से कम 5 संकल्प लेने की ज़रूरत है क्योंकि हम लंबे समय से पृथ्वी के प्राकृतिक तंत्र का उपभोग शोषण और विनाश कर रहे हैं!अब उक्त संकल्प लेकर तीव्रता से इसकी सुरक्षा करनी होगी जिसको गंभीरता से रेखांकित करने की ज़रूरत है ताकि हम आने वाली अनेक पीढ़ियों के लिए सुरक्षित पर्यावरण व्यवस्था को छोड़कर जाएं ताकि हम उनकी आलोचना, घृणा और नफ़रत के पात्र होने से अपने आप को बचा कर खुद वर्तमान जीवन सुरक्षित होकर जीएं.

साथियों बात अगर हम हमारे जीवन में पर्यावरण के महत्व की करें तो ये पृथ्वी इंसान को दी हुई ईश्वर की सबसे बड़ी देन है, लेकिन इंसान का स्वभाव ही ऐसा है कि उसे चीजों की कदर तभी होती है जब वो उसे खो देता है. इंसान की गलतियों का खामियाजा पृथ्वी को भुगतना पड़ता है. इंसान का जीवन धरती के वातावरण के कारण अस्तित्व में है. हमारे सांस लेने के लिए हवा से लेकर खाने पीने तक की हर जरूरी चीजें वातावरण उपलब्ध कराता है और धरती पर जीने के लिए अनुकूल माहौल देता है. यह सब

प्रकृति की देन है. प्रकृति और पर्यावरण से ही ब्रह्मांड सुचारू रूप से चल पाता है. प्रकृति तो हमें जीने के लिए बहुत कुछ देती है लेकिन इसके बदले में इंसानों ने प्रकृति का सिर्फ दोहन किया और पर्यावरण को प्रदूषित किया. जिससे प्रकृति को तो नुकसान हो ही रहा है, साथ ही जनजीवन का अस्तित्व भी खतरे में है. ऐसे में हर इंसान का कर्तव्य है कि वह पर्यावरण को सुरक्षित रखने का प्रयास करें. ग्लोबल वार्मिंग, मरीन पॉल्यूशन के बढ़ते खतरे और बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करें, ताकि पर्यावरण की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके.

साथियों बात अगर हम पर्यावरण में कृषि के महत्व की करें तो, कृषि पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकती है, उदाहरण के लिए, फसलों और मिट्टी के भीतर ग्रीनहाउस प्रभाव का उपयोग करके, या कुछ कृषि पद्धतियों को अपनाने के माध्यम से सूखे और बाढ़ के जोखिम को कम करके, जैसे कि रीसाइक्लिंग द्वारा कार्बन बढ़ाना, कृषि अपशिष्ट को पुनर्चक्रित करके कम करना और बांध के माध्यम से अपवाह जल का संरक्षण करना, सूक्ष्म जलग्रहण क्षेत्र में बांधों की जांच, वनरोपण और कुओं का पुनर्भरण कृषि न केवल सामाजिक और आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, बल्कि इसका एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय प्रभाव भी है. जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, जैव विविधता की हानि, मृत क्षेत्र, आनुवंशिक इंजीनियरिंग, सिंचाई की समस्याएं, प्रदूषण, मिट्टी का क्षरण, असंतुलित कीटनाशक और कवकनाशी समस्या, और अपशिष्ट सभी उदाहरण हैं कि कृषि पर्यावरण के क्षरण में कैसे योगदान करती है.

साथियों बात अगर हम मानवीय जीवन को बचाने, सुरक्षित करने कम से कम पांच कठोर संकल्पों की करें तो,(1) संकल्प लें कि पॉलीथिन या प्लास्टिक के इस्तेमाल पर पूरी तरह से रोक लगाने का प्रयास करेंगे. प्रकृति के सबसे बड़े दुश्मन पॉलीथिन और प्लास्टिक ही हैं. ऐसे में खुद तो हम इनका इस्तेमाल नहीं करेंगे, साथ ही किसी अन्य को पॉलीथिन या प्लास्टिक का इस्तेमाल करते देखेंगे तो उसे भी पर्यावरण के प्रति जागरूक करेंगे. (2) प्रकृति पेड़ पौधों पर निर्भर है. लेकिन आजकल अंधाधुंध पेड़ पौधों की कटाई हो रही है. पेड़ पौधों की कटाई से ऑक्सीजन की कमी होने के साथ ही मौसम चक्र भी बिगड़ रहा है. इस कारण कई भीषण प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ सकता है. ऐसे में संकल्प लें कि पेड़ पौधों की कटाई बंद करके अधिक से अधिक पौधारोपण करेंगे, ताकि प्रकृति को अब तक हुए नुकसान का भरपाई हो सके. (3) घर से निकलने वाले कचरे को सही स्थान पर पहुंचाएंगे. हर दिन हमारे घर से बहुत सारा कचरा निकलता है. जिसको लोग इधर-उधर फेंक देते हैं. इसके कचरा या तो जानवरों के पेट में जाता या फिर नदियों में बह जाता है. इस कारण हमारी नदियां भी प्रदूषित होती हैं. कचरे को इधर उधर न फेंकें बल्कि उसे कूड़ेदान में ही डालें. सूखे और गीले कचरे को अलग अलग करके उसे फेंके, ताकि उसका सही तरीके से इस्तेमाल हो सके. (4) वातावरण को शुद्ध और सुरक्षित रखने में पेड़ पौधे, धरती, मिट्टी, जीव-जंतु, जल आदि की अहम भूमिका है, इसलिए इस मौके पर इस सभी का आभार व्यक्त करते हुए प्रार्थना करें कि पर्यावरण का संतुलन हमेशा बना रहें और संकल्प लें कि पर्यावरण को संतुलित और सुरक्षित रखने के लिए जो कुछ भी करना पड़े, हम करेंगे. (5) किसी व्यक्ति का जीवन सांस लेने से चलता है और सांस लेने के लिए शुद्ध हवा की जरूरत होती है. इसलिए विश्व पर्यावरण दिवस पर संकल्प लीजिए कि सांस लेने के लिए स्वच्छ हवा हो, इसके लिए हम पेट्रोल-डीजल के बदले ई वाहन का उपयोग करेंगे. ज्यादा से ज्यादा पब्लिक ट्रांसपोर्ट का इस्तेमाल करेंगे.

साथियों बात अगर हम संयुक्त राष्ट्र यूएनईपी रिपोर्ट 2022 के पर्यावरण संबंधी खतरे के 3 बड़े कारणों की करें तो, रिपोर्ट में तीन बड़े कारणों का उल्लेख किया गया है, जो पर्यावरण के लिए खतरा बन गए हैं.अपनी इस फ्रंटियर्स रिपोर्ट में यूएनईपी ने कहा है कि एक ओर जहां जंगलों में आग लगने की घटनाएं लगातार बढ़ रही है. वहीं, ध्वनि प्रदूषण की वजह से स्वास्थ्य संबंधी खतरे बढ़ रहे हैं. साथ ही, प्राकृतिक प्रणालियों के जीवन-चक्र के समय में व्यवधान भी हो रहा है,जिसके चलते उनकी बहुत सारी चीजें बदल रही हैं, जिसे फीनोलॉजिकल मिसमैच भी कहा जाता है. यूएनईपी के कार्यकारी निदेशक ने कहा कि फ्रंटियर्स रिपोर्ट में तीन पर्यावरणीय मुद्दों पर बात की गई है और इनके निराकरण के लिए समाधान बताए गए हैं. इसमें शहरों में ध्वनि प्रदूषण, जंगल की आग और फीनोलॉजिकल बदलाव शामिल हैं.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि आओ पर्यावरण की सुरक्षा करें.हर नागरिक को पर्यावरण सुरक्षा संबंधी पांच कठोर संकल्प लेने की ज़रूरत है. हम लंबे समय से पृथ्वी के पारिस्थितिक तंत्र का उपभोग, शोषण और विनाश कर रहे हैं अब तीव्रता से इसकी सुरक्षा करने को रेखांकित करना जरूरी है.

*****

अण्डावन का दशहरा

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा " गब्दीवाला ", बालोद

क्वाँर का महीना था और दोपहर का समय. सुनहरी धूप खिली हुई थी. सर्द-गर्म मिश्रित हवा फूलों की खुशबू को पूरे अण्डावन में बिखेर रही थी. पत्तियों की सरसराहट व पक्षियों के कलरव के बीच आज एक विशाल शीशम वृक्ष के नीचे जानवरों की मासिक सभा आयोजित थी. इस वर्ष दशहरा का पर्व मनाने की तैयारी सभा का प्रमुख विषय था. जानवरों ने मन में ठान लिया था कि इस बार दशहरा का त्यौहार बड़े धूमधाम से मनाया जाय. अब रामलीला मंचन के लिए पात्रों का चयन करना था. सोनू सियार सभी जानवरों को उनकी योग्यतानुसार भूमिका सौपने लगा. किसी को राम की, किसी को सीता की, किसी को हनुमान की तो किसी को रावण की. इस तरह पात्र चयन की प्रक्रिया भी पूरी हुई.

सभा में उपस्थित एक बूढ़ा हाथी गज्जू को अपनी मन की बात नहीं रह गया. असंतोष व्यक्त करते हुए बोला -' भाइयों, हम हर साल दशहरा मनाते हैं. रामजन्म, रामवनवास, सीताहरण, लंकादहन और रावणवध जैसे दृश्य का अभिनय करते हैं; परन्तु यह सब करने से क्या फायदा ? इस वन का रावण तो जीवित है जिसका वध करना बहुत जरूरी है. इसी में हम सबकी भलाई है.' गज्जू हाथी की बात सभी को ध्यानाकर्षित करने लगी. सारे जानवर समझ गये कि गज्जू जी वनराज शेरसिंह की बात कर रहे हैं. शेरसिंह का स्मरण होते ही सबकी सिट्टी-पिट्टी गुम होने लगी. सभा में सन्नाटा पसर गया.

वनराज शेरसिंह की दुष्टता से सारा जंगल भयभीत था. उसके हृदय में दया, करूणा व क्षमा जैसे गुणों का कोई स्थान नहीं था. वह रोज कई जानवरों को अकारण मौत की घाट उतार देता था. कभी-कभी वह इतना निर्मम हो जाता था कि शावकों को अधमरा कर उन्हें तड़पते हुए छोड़ देता था. उसकी निर्दयता तब सीमा पार कर जाती जब वह शावकों को छोड़कर उनकी माँओं की इहलीला समाप्त कर देता था. इतने अत्याचार के बावजूद आज सभी जानवर दशहरा का पर्व मनाने की तैयारी में जुटे हुए थे.

सभा में खामोशी छाई देख गज्जू हाथी ने अपनी बात दुहरायी- ' क्यों भाईयों, मेरी बातों पर गौर नहीं किया गया. मैंने कुछ गलत कहा...?'

' नहीं... नहीं... गज्जू भैया आपने बिल्कुल सही बात कही है; परंतु हम उस दुष्ट को मारें तो मारें कैसे ?' पिंटू ऊँट गर्दन हिलाते हुए अपनी जगह से उठा.

' उन्हें मारा जा सकता है.' गज्जू हाथी ने पिंटू ऊँट की पीठ पर अपनी सूँड़ फेरते हुए उसे बिठाया- ' उसे हम में से कोई अकेला नहीं मार सकता, मैं यह भी जानता हूँ अच्छी तरह.'

' फिर...?' चिकी चीता ने झट से पूछ बैठा.

चिकी की उत्सुकता पर मुस्कुराते हुए गज्जू हाथी बोला- ' बताता हूँ चिकी बेटा. ध्यान से सुनो. माथे पर जोर देते हुए गज्जू अपनी बात रखने लगा - ' साथियों, लंका के राजा पापी व अधर्मी रावण को श्रीरामचंद्र जी ने अकेले ही नहीं मारा था. श्रीरामचंद्र जी की जीत केवल उनकी ही जीत नहीं थी. उन्होंने भी पशु, पक्षी व अन्य वन्य प्राणियों की सहायता ली थी. वे एक होकर ही रावण पर विजयश्री प्राप्त की थी.'

' आप कहना क्या चाहते हैं दादाजी? ' टोनी बंदर ने अपनी आतुरता जाहिर की.

' यही कि हम सब एक होकर ही शेरसिंह को मारें.' गज्जू हाथी बोला.

' हाँ...हाँ...परंतु कैसे..?' सभी जानवरों ने पुनः गज्जू हाथी के समक्ष प्रश्नवाचक बात रखी - ' गज्जू जी, कुछ तो तरकीब बताइए. आप तो बस यूँ ही.... हम इसके लिए कुछ भी करने के लिए तैयार हैं. '

इस बार गज्जू हाथी को अपने साथियों में एकजुटता दिखी. उसने शेरसिंह को मारने की तरकीब बता दी. सारे जानवर खुश हो गये. शेरसिंह का काम तमाम करने के लिए सबने कमर कस ली. दशहरा की रात की प्रतिक्षा होने लगी.

दशहरा की रात आई. रामलीला मंचन हेतु कार्यक्रम आयोजित हुआ. एक सुसज्जित मंच बनाया गया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महोदय शेरसिंह को पूर्व नियोजित ढंग से मंच की ओर ले जाया गया. सभी जानवर एकत्रित थे. चिकी चीता व मनु खरगोश अतिथि महोदय की अगुवाई कर रहे थे. शिखा हिरणी स्वागतगीत के प्रस्तुतिकरण में व्यस्त थी. घंमड में मद शेरसिंह अपनी इस उपलब्धि पर फुला नहीं समा रहा था. तालियों की गूँज और वाद्यस्वर सुन शेरसिंह मुस्कराते हुए अपनी आँसदी पर विराजित हो ही रहा था कि अचानक वह गिर गया. उठने की कोशिश करने लगा. उठ नहीं पाया. गिरता ही गया. आँसदी धँसती ही गयी. शेरसिंह दलदल में फँसता गया. उसे जानवरों की योजना समझ आ गयी. क्षमायाचना की दृष्टि से वह जानवरों से सहायता मांगने लगा; पर किसी ने उसकी कोई सहायता नहीं की. देखते ही देखते वनराज शेरसिंह दलदल में समा गया.

इस तरह आज सचमुच अण्डावन का रावण मारा गया. सारे जानवर रामराज्य की कल्पना से झूम उठे. इस बार अण्डावन का दशहरा मनाना सार्थक रहा.

*****

मातृभाषा

रचनाकार- सुचित्रा सामंत सिंह, बस्तर

हिन्द देश के निवासी,
हिंदी हमारी मातृभाषा.
हमारे हृदय के अंतस्थल में,
रची बसी ये भाषा.

नदियों में पवित्र गंगा,
भाषाओं में श्रेष्ठ हिंदी.
स्वर व्यंजन के समावेश से,
रचती,मधुर सुर ताल हिंदी.

हर अक्षर की भिन्न पहचान,
रस घोलती कानों में हिंदी.
अलंकार,रस,छंद समाहित,
अपनेपन की अहसास है हिंदी.

दर्पण सी स्पष्ट है हिंदी,
लेखन उच्चारण समान.

क्लिष्ट नही सरल सुगम है हिंदी,
हर भारतीय की है पहचान.

एक सूत्र में जोड़े रखे,
यह हमारी पावन भाषा है.
भारतीय संस्कृति,संस्कारों की,
प्रतिबिंब हमारी हिन्दी है.

सरल सहज सुगम लचीली,
मातृभूमि की अनमोल धरोहर.
एकता के सूत्र में पिरोए हमें,
हमारी पहचान हिन्दी भाषा है.

*****

हलषष्ठी

रचनाकार- श्रीमती नंदिनी राजपूत*, *कोरबा

भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष की षष्ठी तिथि को,जब हलषष्ठी पर्व आता है.
श्री कृष्ण के भाई बलराम जी का,जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया जाता है.

हलषष्ठी को ललई छठ, हरछठ कई नामों से जाना जाता है.
पूरे भारतवर्ष में इसे हर्षोल्लास से मनाया जाता है.

माँ अपने पुत्र के दीर्घायु के लिए यह व्रत रखती है.
अन्न- जल का त्याग करके, पूरे मन से पूजा करती हैं.

छः चुकिया में छः अन्न का भोग चढ़ाया जाता है.
पूजा के उपरांत बच्चे के पीठ पर पोता लगाया जाता है.

हल से उगा अनाज, इसमें रहता है वर्जित.
भैंस का दूध- दही, होता है देव समर्पित.

महिलाएँ साज- श्रृंगार करके सच्चे मन से प्रार्थना करती हैं.
हलषष्ठी माँ खुश होकर संतान सुख से झोली भरती हैं.

हलषष्ठी का पर्व है, बहुत पवित्र और पावन.
इसके पूजा-अर्चना से होता है, खुशियों का आगमन.

*****

डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन

रचनाकार- श्रीमती नंदिनी राजपूत*, *कोरबा

5 सितंबर शिक्षक दिवस,जब यह पावन दिन आता है.
राधाकृष्णन का जन्म दिवस, धूमधाम से मनाया जाता है.

तमिलनाडु के तिरुतनी में, जब हुआ था इनका जन्म.
5सितंबर 1888 को मिला था,भारत को एक अनमोल स्वर्ण.

स्वतंत्र भारत के जब पहले उपराष्ट्रपति व दूसरे राष्ट्रपति बने.
भारतीय संस्कृति के संवाहक,शिक्षाविद,महान दार्शनिक के रूप में कार्य किए.

उनकी प्रथम पुस्तक *द फिलॉसफी ऑफ रविंद्रनाथ टैगोर ने ऐसा मन को भाया.
वर्ष 1954 में उन्हें, भारत रत्न से सम्मानित कराया.

1962 में जब भारत चीन युद्ध में सैनिकों का कदम डगमगाया.
उनके ओजस्वी भाषणों ने, सैनिकों का मनोबल बढ़ाया.

उन्होंने अपना अधिकतम जीवन, एक शिक्षक के रूप में बिताय.
इसलिए अपने जन्म दिवस को, शिक्षक सम्मान के रूप में समर्पित कराए.

एक लंबी बीमारी ने,उन्हें ऐसा तोड़ा.
17अप्रैल 1975 को उन्होंने हमारा साथ छोड़ा.

उस अनमोल हीरे को,हम कभी नहीं भूल पाएँगे.
उनकी याद में हम, शिक्षक दिवस प्रतिवर्ष मनाएँगे.

*****

काँस फूल

रचनाकार- रुद्र प्रसाद शर्मा, रायगढ़

काँस के फूल फुटिस भादों म,
बरसा ह सियान बनिके मोटावत हवय.

खेत के खातू, चिखला, कादों म,
हरियर धान के गभोट ह पोठावत हवय.

डगर के पानी ह सुखाय लागिस,
जस, लोभिहा म संतोष उड़ावत हवय.

स्वाती के एके थिपा ल पी के,
कुर्री चिरई के सुसी ह जुड़ावत हवय.

सफा होगिस तरिया के पानी,
पैरा के गोर्रा ह, खुखड़ी ल फोरत हवय.

दसरहा घाम म जीउ जनाय,
जम्मो देह ल पसीना म बोरत हवय.

मघा के बरसे माता के परसे,
बादर येदे घुड़घुड़ावत हवय.

गंगरेल के गेट ढिला गे,
कतको गाँव घर ल बुड़ावत हवय.

नरवा तीर म काँस फूलय सरसर,
पोरा बइला ल लइका ह सजावत हवय.

बरसा हाँसय भादों म मुचमुच,
पाका चुंदी के काँस फूल लजावत हवय.

*****

भारत देश महान, मेरी आन बान शान

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

चांद पर पहुंचे अब सूरज की मिलेगी कमान
जी20 सफ़ल हुआ पूरे हुए अरमान
देश विकास में लगा देंगे जी जान

सफ़ल भारत हर नागरिक के अरमान

भारत देश महान, मेरी आन बान शान
धर्मनिरपेक्षता हैं, भारत की पहचान
हर धर्म त्यौहार संस्कृति का, भारत में सम्मान
अनेकता में एकता, हैं भारत विश्व में बलवान

भारत देश है,बुद्धिजीवियों की खान
कोरोना वैक्सीन बना कर,दी नई पहचान
कोरोनावारियर्स बनकर उभरे भारत की शान
अब फिर बनेगा,भारत सोने की खान

आत्मनिर्भर भारत, बनेगा हर क्षेत्र की जान
हर नागरिक को डालना होगा, इस सोच में जान
सोच में ही छुपा है, कुछ कर गुजरने का ज़ान
भारत देश महान, मेरी आन बान शान

*****

अपना पराया

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

अभी तक खेत से माँ-बाबूजी दोनों नहीं आये हैं. कम से कम माँ को तो आ ही जाना चाहिए था. पता नहीं, इतनी बारिश में वे दोनों कहाँ होंगे. घर से बार-बार निकल कर सुमन राधे और गौरी की राह ताक रही थी.

शाम का समय था. घड़ी की सुइयाँ पाँच बजने का इशारा कर रही थी. चूँकि बारिश का मौसम था; सो घटाटोप अंधेरा छाने लगा था. तरह-तरह के कीट-पतंगे व झींगुर की आवाज सुमन के कानों को छू रही थी. सुमन बहुत डरी हुई थी आज. कई तरह की शंकाएँ सुमन को घेरती जा रही थी- "पहले तो कभी ऐसा नहीं हुआ था; पता नहीं आज अचानक क्या हो गया. वे दोनों खेत से जल्दी आ जाया करते थे."

सुमन के दिलो-दिमाग में बड़ा विचलन था. उसका किसी कार्य में मन ही नहीं लग रहा था. देखते ही देखते गरजना शुरू हो गया. बिजली भी चमकने लगी. तभी उसे कुछ दिन पहले गाँव में हुई एक घटना याद आने लगी. वह सहम गयी. खेतों में काम कर रही महिलाओं के ऊपर गाज जो गिर गयी थी. सब ने दम तोड़ दिया था. बार-बार वह दृश्य आँखों के सामने झूल रहा था रहा था. अब तो सुमन की मन ही

मन बात हो रही थी कि माँ–बाबू जी दोनों से मैंने कहा था कि जल्दी आना. फिर भी वे मेरी बातें नहीं सुनते.

जैसे ही सुमन घर अंदर आयी, बिजली चली गयी. जैसे–तैसे उसने मोमबत्ती जलाया. घर में रोशनी हुई. मन थोड़ा शांत लगा. सुमन घबराने लगी थी- "हे प्रभु ! मेरे माँ–बाबू जी जल्दी घर आ जाए. मुझे बहुत घबराहट हो रही है. कहीं... कुछ...!"

थोड़ी देर बाद सुमन को राधे की आवाज सुनाई दी- "सुमन ....! अरी ओ सुमन बिटिया ! जरा मोमबत्ती बाहर लाना तो; बहुत अँधेरा है." सुमन के जान में जान आई. "जी बाबू जी...." कहते हुए बाहर निकली. सुमन की आँखें माँ को ढूँढ रही थी- "बाबू जी, माँ कहाँ है ? आप लोगों ने इतनी देर क्यों लगा दी आने में ? देखो न, बस बारिश होने ही वाली है; जल्दी आना चाहिए था ना. क्या कर रहे थे आप लोग अभी तक ?"

सुमन का तो आज सवाल पे सवाल हो रहा था. तभी पीछे से माँ की परछाई नजर आयी. सुमन मुँह बनाते हुए बोली- "आप दोनों को तो मेरी बिल्कुल चिंता ही नहीं है." तभी अचानक अपनी माँ गौरी को देखते ही सुमन की आँखें फटी की फटी रह गयी. उनकी गोद में एक छोटा सा घायल बछड़ा था.

सुमन चुपचाप घर के अंदर चली गयी. सुमन का गुस्सा और भी तेज हो गया था. बोलने लगी कि इतनी रात हो गयी; और आप लोग इस बछड़े को लाये. इसकी क्या जरूरत थी. मैं यहाँ परेशान हूँ. तरह–तरह के मन में ख्याल आ रहे हैं और आप लोग, बस !"

राधे और गौरी ने सुमन को शांत करते हुए पूरी घटना की जानकारी दी- "यह बछड़ा कुछ देर पहले ही जन्म लिया था और इसकी माँ उसे छोड़ कर कहीं चली गयी थी. बछड़ा हम्मा...हम्मा... कर रहा था. इसकी मदद करने वाला कोई नहीं दिखा. तेज बारिश भी हो रही थी. बेचारा भीग रहा था. हमें लगा कि बछड़ा बेसहारा है. आधी रात को भला कहाँ जायेगा ? यदि कभी कोई तुम्हें मदद माँगे तो क्या तुम छोड़ कर आ जाओगी सुमन ? मदद नहीं करोगी ? अरे ये तो बेचारा बोल नहीं सकता , तो क्या हम इनकी भाषा भी ना समझें. हमें सब की मदद करनी चाहिए सुमन." गौरी बोलती ही रही- "सुमन, तुम ही बताओ. अभी थोड़ी देर पहले तुम हम दोनों के बगैर कैसे तड़प रही थी ? जबकि तुम्हें तो पता ही है कि हम आयेंगे ही; फिर भी?" अपने माँ और बाबू जी की बातें सुन सुमन ने अपनी ओर देखते उस मासूम बछड़े को गले से लगा लिया. राधे और गौरी सुमन व बछड़े दोनों को सहला रहे थे

*****

मेरी हिंदी मेरा अभिमान है

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", धमतरी

मेरी हिंदी मेरा अभिमान है
मेरी हिंदी मेरी पहचान है.

हिंदी ही मेरी जान-जहान है
हिंदी ही मेरी राष्ट्र में महान है.

सबकी अलग अपनी जुबान है
पर मेरी हिंदी मेरे लिए शान है.

हिंदी से ही मेरा उपकृत ज्ञान है
हिंदी से स्वर-व्यंजन का भान है.

हिंदी से ही हिंदी साहित्यकाश है
इसी में बना हिंदी का इतिहास है.

आदि,भक्ति ही,इसी से विकास है
और रीतिक आधुनिक भी खास हैं.

दैदीप्यमान कवि सूर्य सा सूरदास हैं
शशि जैसे चमके युग तुलसीदास हैं.

यह हिंदी हमारे देश की सरताज है
हिंदी भाषा की ये होती आवाज है.

*****

गणपति स्वामी

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", धमतरी

गणपति स्वामी तोर महिमा हे भारी
पूजा तोर पहिली होवे रूप हे न्यारी
लम्बा तोर सुंड हे मुसवा के सवारी
सुपा असन कान तोर पेट हवे भारी

बुद्धि के स्वामी तंय वेद के रचईया
अज्ञानी ल ज्ञान के वर तंय देवईया
सुख के वरदानी दुख पीरा हरईया
अंधा के आँखी म जोत के जलईया

रिद्धि अउ सिद्धि के तहीं हर स्वामी
देव दानुज दानव तोर बने अनुगामी
धन-धन्य लक्ष्मी के तहीं ह वरदानी
सुख समृद्धि दाता ज्ञान के तंय दानी

*****

सच्ची जीत

रचनाकार- सुधारानी शर्मा, मुंगेली

शेरसिंह अपने स्वभाव के अनुसार अहंकारी और झगड़ालू स्वभाव का था, दयाराम अपने स्वभाव के अनुसार दयालु था ,गांव वालों ने दयाराम को शेरसिंह के बारे में बताया तो दयाराम ने भी कह ही दिया यदि शेरसिंह मुझसे झगड़ा किया तो मैं उसे मार डालूंगा,

शेरसिंह को यह बात पता चली, तो वह झगड़ालू स्वभाव के कारण गुस्से से तमतमा गया और दयाराम के घर के सामने आकर चिल्लाकर, दयाराम को भला बुरा कहने लगा,दयाराम ने जब शेरसिंह की बात ,उसका चिल्लाना सुना तो वह घर से बाहर निकला, और शेरसिंह को समझाया कि वह ऐसा ना करें, परंतु शेरसिंह नहीं माना और अपने अहंकार के कारण अपशब्द कहने लगा,

दयाराम ने उसे कहा तुम अपशब्द कहकर, भला बुरा कह कर अपने आप को बहादुर समझते हो, अगर सचमुच बहादुर हो तो ,तो मुझसे आकर लड़ाई करो, कुश्ती करो, किसी भी खेल कूद में तुम मेरे साथ मुकाबला करो,

अहंकारी शेर सिंह को अपनी शारीरिक क्षमता पर बहुत घमंड था उसने दयाराम को कहा चलो मैं तुम्हें कुश्ती करने का की चुनौती देता हूं कल दोपहर में आकर तुम मेरे साथ कुश्ती करो.

दयाराम ने उसकी बात मान ली दूसरे दिन दोपहर गांव के सारे लोग इकट्ठा हो गए दयाराम और शेर सिंह की कुश्ती देखने के लिए.

अहंकारी शेरसिंह सोच रहा था कि वह बहुत ही जल्दी दयाराम को हरा देगा पर यह क्या??

दयाराम तो अपने नाम के विपरीत कुश्ती का उस्ताद निकला, उसने दो-तीन दांव में ही शेर सिंह को चित् कर दिया. शेरसिंह का अहंकार पूरी तरह से गायब हो चुका था. वह पूरे गांव वालों के सामने शर्मिंदा

महसूस कर रहा था. तब दयाराम ने उसे उठाकर गले लगाया और समझाया कि अहंकार से कभी कोई नहीं जीत सकता, किसी भी क्षेत्र में. किसी को जीतने के लिए स्नेह ,प्यार अच्छा व्यवहार सद व्यवहार नैतिक शिष्टाचार ही काफी होता है. तुम्हारे पास सब कुछ है लेकिन तुमने अहंकार को ही बढ़ावा दिया इसी से तुम्हारी हार हुई अगर तुम सचमुच जीतना चाहते हो तो, लोगों के हृदय को जीतो लोगों के मन को जीतो, तभी तुम्हारी सच्ची जीत होगी

*****

आओ हिन्दी अपनाए

रचनाकार- सोनल सिंह "सोनू", दुर्ग

माँ भारती के माथे की बिन्दी,
ऐसी भाषा हमारी हिन्दी.
सरस, सरल और प्राचीन,
प्रमुख भाषाओं में नामचीन.

संस्कृति संस्कारों को देती मान,
हिन्दी भाषा हमारा अभिमान.
परिपूर्णता की परिभाषा है,
उज्जवल भविष्य की आशा है.

हिन्दी सचमुच खास है,
विदेशियों को भी इसका एहसास है.
हिन्दी को मिली नई पहचान है,
नमस्ते भारत कहना हमारी शान है.

इससे झलकता है अपनापन,
सहज बनाती है ये जीवन.
काम काज में इसे अपनाए,
हिन्दी का हम मान बढ़ाए.

*****

हिंदी से है हिंदुस्तान

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली

सरल, सरस भाषा है हिंदी, हिंदी से है मेरी पहचान.
हिंदी हमारी आन-बान-शान, हिंदी से है हिंदुस्तान.

देववाणी संस्कृत की उत्तराधिकारिणी भाषा है हिंदी.
स्वरों और व्यंजनों की वैज्ञानिकता अनुस्वार में बिंदी.

हिंदी मातृभाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा.
देश की उन्नति और आशा, जन-जन की अभिलाषा.

हिंदी सबरस की गंगा बहाती, शोभा बढ़ाता अलंकार.
सर्व गुणों की अधिष्ठात्री, शब्द शक्तियों का भण्डार.

सिद्धों और नाथों का ज्ञान अमृत, संतों की अमर वाणी.
सगुण और निर्गुण की भक्ति, प्रेम की धारा बही सुहानी.

हिंदी में तुलसी के राजा राम है, सूर के कृष्ण लीलाधारी.
राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी है, वीरांगना झाँसी वाली रानी.

कोहिनूर हीरा जैसी कविता, मानव जीवन की कहानी.
अभिनेता करता है नाटक, अभिनेत्री सौंदर्य अतुलनीय.

आओ हम सभी मिलकर, हिंदी भाषा का सम्मान करें.
गर्व से सिर को ऊँचा कर, हिंदी दिवस पर राष्ट्रगान करें.

*****

गणेशोत्सव पर्व

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण

हमारे धर्म ग्रंथ वेद,पुराण,गीता,भागवत, रामायण में भगवान श्री गणेश की विशेष स्तुति,अराधना का उल्लेख मिलता है.इसमें श्री गणेश की महिमा का उल्लेख करते हुए उनके अनेकानेक रूप,गुण,महिमा को

वंदनीय बताया गया. भगवान श्री गणेश को सभी देवगणों में सबसे पहले पूज्य और पूजनीय माना गया है.इसीलिए सबसे पहले इनकी पूजा अर्चना की जाती है.

श्री गणेश जी बुद्धि के देवता और विघ्न–विनाशक माने जाते हैं. प्रत्येक शुभ कार्य शुरू करने से पहले इनकी पूजा–अर्चना की जाती है.ताकि वह शुभ कार्य बिना किसी विघ्न–बाधा के संपन्न हो जाए.

भगवान श्री गणेश मात्र विघ्न–बाधाओं को दूर नहीं करते वरन मानव जीवन से दुख दर्द पीड़ा भय से मुक्ति भी दिलाते हैं.और जीवन में सुख–शांति और समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं.

हमारे देश में गणेश पूजा की एक अलग परंपरा रही है.जो सदियों से चली आ रही है.और इसी का पालन करते हुए हमारे हिंदू धर्म के लोग गणेश चतुर्थी के दिन भगवान श्री गणेश का ससम्मान स्थापना करते हैं.और अगले दस दिनों तक बड़ी आस्था-विश्वास के साथ इनकी पूजा–अर्चना करते हैं.

आजादी के पूर्व हमारे देश में गणेश की पूजा–अर्चना और स्थापना एक नए कलेवर में, नई परम्परा के रूप मे शुरू हुई.और यह परंपरा महाराष्ट्र मुंबई में शुरू हुई.यहाँ पर गणेश पूजा का एक विशेष महत्व होता है.पूरे भारत से अलग हट के यहां पर गणेशोत्सव का पर्व धूमधाम के साथ मनाया जाता है.इसका एक विशेष कारण भी है,और वह कारण यह है की यहाँ पर सारे जाति धर्म संप्रदाय के लोग अपनी जाति धर्म को भूल कर सिर्फ और सिर्फ गणेश भगवान की पूजा भक्ति अराधना में डूब जाते

हैं.हिंदू,मुस्लिम,सिख,ईसाई,बौद्ध, पारसी,सभी एक होकर इस गणेशोत्सव में शामिल होते हैं.एक तरह से यहाँ राष्ट्रीय, सांस्कृतिक एकता,सद्भावना,भाईचारा,की झलक देखने को मिलती है.

और ऐसे सांस्कृतिक गणेशोत्सव की शुरुवात यदि किसी ने शुरू किया तो वे थे,लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी. जिन्होंने गणेश की पूजा को गणेशोत्सव का रूप देते हुए एक नई परम्परा की शुरुवात की.श्री तिलक जी ने गणेशोत्सव के माध्यम से भारतीय समाज में राष्ट्रीय एकता,सद्भावना,मानवीय मूल्य,स्वतंत्रता के प्रति चेतना जागृत किया.और फिर आदर्शों के प्रति निष्ठा,का ऐसा बीज बोया की वह एक मिसाल के रूप में स्थापित हो गई.

श्री तिलक जी ने देश की स्वतंत्रता के लिए हमारे देश की जनता को सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जनजागृति से जोड़ने का काम किया.

गणेशोत्सव का पर्व मात्र एक उत्सव नही है, यह अपने अधिकारों,कर्तव्यों के प्रति सजग रहने का संदेश देता है.भगवान गणेश को इन सबका प्रतिनिधि देव माना जाता है.

और जब भी हम इनकी आराधना पूजा करते हैं तब–तब हम उनके संदेशों का पालन करने का प्रयास करतें है.

भगवान श्री गणेश अपनी सजगता, सक्रियता और कर्तव्य निष्ठा के ही कारण एक द्वारपाल से एक गणाधिदेव,देवों के देव,सबसे पहले पूजे जाने वाले देव गणेश बने.

इन्ही सभी बातों का ध्यान रखते हुए हमारे महान स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक जी ने हमारे देश की जनता में गणेशोत्सव के माध्यम से देशप्रेम और राष्ट्रीयता की भावना को जागृत किया.और उन्होंने लोकतंत्र के अधिकार और कर्तव्य की बात को बड़ी आसानी से कह दी.जो हमारे देश के लिए एक मिशाल बन गई.इस प्रकार से श्री तिलक जी धर्म आस्था के साथ–साथ राष्ट्र के प्रति हमारे कर्तव्यों,अधिकारों का बोध भी कराया.जो आज भी हमारे भारत वर्ष के गाँव नगर शहर में सांस्कृतिक,और राष्ट्रीय एकता की धूम, गणेशोत्सव में दिख ही जाती है.

*****

आगे पोरा के तिहार

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

छत्तीसगढ़ मा आगे संगी, पोरा के तिहार.
भादो अमावस के मनाबो, जम्मों उछाह.

चना पिसान के गोलवा, लंभरी ठेठरी बनथे.
चाऊंर, गहूं के संग गुरहा खुरमी ला सानथे.

किसान मन हा अपन बइला ला सम्भराहीं.
हार अउ जीत के बइला दउंड़ ला कराहीं.

लइका मन कूदत-नाचत, गली मा आगिन.
गेंड़ी ला तरिया-नंदिया मा ओमन सरा दिन.

माटी के बइला मा लगाके चक्का दउंड़ावत हें.
दीया, चुकलिया, जांता म व्यंजन मढ़हावत हें.

नोनी-बाबू, ठेठरी-खुरमी ला कड़दउंहन चाबे.
डोकरी-डोकरा मन कुट-पीस के फांका दाबे.

रद्दा देखथें माई लोगिन, बाबू भाई कब आही.
बारह महीना के परब मा बेटी लेवा के लाहीं.

*****

हे विघ्न विनाशक

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी

हे विघ्न विनाशक !भवानी नंदन
तुम्हें कोटि कोटि सादर वंदन.
हे रम्ब!तुम जीवन के हो अवलम्ब,
शुभ कार्यों का करते हो तुम प्रारंभ.
मात पिता की किये परिक्रमा,
तुम प्रथम पूज्य कहलाते हो.
जो भक्त करे स्तवन तुम्हारा,
तुम विघ्नों से पार लगाते हो.
अद्भुत सृजन के प्रणेता तुम्ही हो,
वेद पुराणों के सर्जनहार तुम्ही हो.
संकट की घड़ी से तुम ही उबारते हो,
जीवन नैया तुम ही पार लगाते हो.

*****

हिंदी का श्रृंगार

रचनाकार- श्रीमती सुनीता लहरे, बालोद

बिंदी से सजी, हमारी हिंदी.
बिंदी से सजी, हमारी हिंदी.
व्याकरण तुम्हारा सुंदर श्रृंगार,
चिन्हों के है उत्तम प्रकार.
अनंत शब्दकोश के विशाल भंडार.
मधुर मिठास से घुली, हमारी हिंदी
बिंदी से सजी, हमारी हिंदी.

संधि संग तत्भव तत्सम,
रचना साहित्य संग मुहावरे.
कोमल कठोर वीभत्स,
तरह - तरह शब्दपुंज तुम्हारे,
देते हैं सबको निरंतर ज्ञान.
यही है हमारी, हिंदी भाषा की
पहचान.
नलिन सी मनमोहक, हमारी हिंदी
बिंदी से सजी, हमारी हिंदी.

कभी आपस में बहस करे,
छंद और समास.
कहते ही आत्मविभोर होता,
रस ज्ञान का अहसास.
संस्कृत की बेटी, हमारी हिंदी.
देश की आत्मा, हमारी हिंदी.
बिंदी से सजी, हमारी हिंदी.

उपसर्ग, प्रत्यय से कहना.
उपसर्ग,प्रत्यय से कहना.
विशेषता बताए हिंदी की.
विलोम वचन तुम मत देना.
पद,काल बताए हिंदी की.
रचनाकार की भावना,
हमारी हिंदी.
बिंदी से सजी, हमारी हिंदी.
बिंदी से सजी,हमारी हिंदी.

*****

शहीदों की कुर्बानी

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

देश की रक्षा करते तुम,
गहरी नींद में सो गए
पूरा भारत परिवार तुमको याद किया,
तुम शहीद हो गए

शहीदों की कुर्बानी से
आंखें सभकी भर आई
वो कल भी थे आज भी हैं
अस्तित्व में चमक छाई

नमन: उनकी शहादत को,
शरीर देख आंखें भर आई
ज़जबा मां का जब बोली,
भारत की रक्षा में सौ बेटे लुटाई

भारत मां के लाल तूने,
फ़र्ज़ अपना अदा किया
जान हथेली पर लेकर,
एक झटके से दुश्मन को ढेर किया

देश की रक्षा में तुम्हारा बलिदान,
देश कभी ना भूल पाएगा
हर देशवासी याद रखेगा तुमको,
वंदे मातरम गाएगा

अब हर परिवार से एक बच्चा,
सेना में जाएगा
देश की रक्षा में,
जी जान से लड़ जाएगा

देश सुरक्षित है तुम्हारी,
खातिर अब सभको समझ आएगा
साथियों में उर्जा भर गए,
दुश्मन अब भारत से थार्रराएगा

तुम जैसे बहादुरों का नाम सुन,
दुश्मन सीमा से भाग जाएगा
हर सीमा पर हमेशा,
भारत का झंडा लहराएगा.

*****

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- डॉ0 कमलेन्द्र कुमार, जालौन

1. तीन भुजाएं ऐसी आईं,
जुड़ कर बच्चों क्या कहलाईं?
आकृति रेखागणित की मानो,
जल्दी से इसको पहचानों.

2. तीन खम्ब जब मिले समान,
बने बीच में कोण समान.
इस आकृति का नाम बताओ,
बोलो बच्चों बुद्धि लगाओ.

3. दो भुजा दो कोण समान,
झट बतलाओ उसका नाम.
गणित आकृति उसको मानो,
रानी राधा तुम पहचानो.

4. तीन भुजायें जब जुड़ जाएं,
बोलो आकृति क्या कहलाए ?
न तो भुजा समान न कोण समान,
बोलो राधा रामू राम.

उत्तर 1- त्रिभुज, 2-समबाहु त्रिभुज, 3- समद्विबाहु त्रिभुज, 4-विषमवाहु त्रिभुज

*****

गणित पर पाँच दोहे

रचनाकार- पोखन लाल जायसवाल, बलौदाबाजार

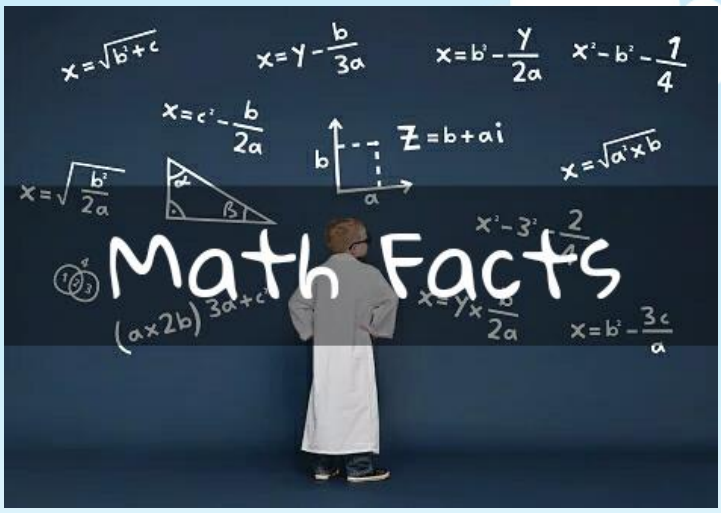

गणित सरल लगता तभी, रहे अंक जब ज्ञान.
अंक दहाई दसगुना, बढ़ता पा वरदान.

अंक सैकड़ा धारकर, बढ़े सैकड़ों दाम.
अंकों से जुड़कर चलो, करें हजारों काम.

जोड़-घटाना है सरल, मन में हो विश्वास.
किन्तु खूब लगते कठिन, करते प्रथम प्रयास.

गुणा-भाग आता उसे, जिसे पहाड़ा-ज्ञान.
करते नित अभ्यास जो, बनते वो विद्वान.

गणित कठिन उतना नहीं, जितना माने लोग.
दूर भागते बेवजह, बना फोबिया रोग.

*****

तीजा पोरा के तिहार

रचनाकार- हिमकल्याणी सिन्हा, बेमेतरा

हमर संस्कृति हमर पहिचान, वइसे तो बारो महिना कोनो न कोनो तिहार ल मनावत रइथन जेखर से जिनगी म नवा उत्साह भरथे अइसने एक ठन तिहार भादो के महिना म तीजा पोरा मनाथन ये तिहार ह खेती किसानी ले जुड़े तिहार ये, खेती किसानी म बइला अउ पशू मन के महत्तम ल देखत हुए ओखर प्रति आभार परगट करे के परम्परा आय, हमर छत्तीसगढ़ के गाँव म ये परब म बइला मन ल विशेष रूप म सजा के पूजा करे जाथे, पोरा तिहार ह किसान भाई मन बर विशेष महत्तम रखथे.

पोरा तिहार के बाद आथे तीजा जम्मो बेटी मन अपन भाई के बाट जोहत रइथे, भाई मन बहिनी मन ल सम्मान के साथ मइके लेके आथे सबो सुहागिन बहिनी मन तीजा के निर्जला उपास रखथे अउ सोला सिंगार करके भगवान भोलेनाथ अउ माता पार्वती के पूजा करथे ये उपास ल करे से सुहागिन मन ल सदा सौभाग्यवती रेहे के बरदान मिलथे, उपास म बहिनी मन अपन पति के लम्बी उमर के कामना करथे तिहार म विशेष रूप से ठेठरी, खुरमी, कटवा, गुजिया, मुठिया, चीला रोटी... बनाये जाथे, हमर छत्तीसगढ़ म ये तिहार ल मिलजुल के हसी खुशी उल्लास के साथ मनाथन.

*****

प्यारे गणपति

आया मेरा प्यारा गणपति
मूषक में हो सवार रे,
गोल गाल तेरे गाल है
गोल गोल सा पेट,
भुख लगे तो खाएगा
लाई हूं तेरे लिए
मोदक भेंट.
रूपा के जैसे कान तेरे
मेरी आवाज सुन पाएगा,
सुन ले मेरी आवाज गणपति
मेरे घर तू आएगा.
पिता है तेरे भोले शंकर
माता तेरी पार्वती,
मैं तो उनसे कह दूंगी
आना है तुझे मेरे घर
ओ मेरे प्यारे गणपति.

*****

चंद्रयान -3

रचनाकार- आशा उमेश पांडेय, सरगुजा

चंदा मामा के घर जाऊंगा,
मैं भतीजा यान.
सफल लक्ष्य में होऊंगा,
नाम मेरा है चंद्रयान.

चंदा मामा के घर से,
लाउंगा सौगात कई.
जल, जीवन ,खनिज संपदा,
खोज लाउंगा चीज नई.

मां धरा को लाकर दूंगा,
राखी का प्यारा उपहार.
लाकर दूंगा अपने भारत को,
चांद पर जीवन के आसार.

*****

जिन्दगी

रचनाकार- प्रियांशिका महंत, कक्षा– 8, स्कूल – सेजेस तारबहार

दो पल कि जिन्दगी है।आज बचपन कल जवानी परसो बुढापा फिर खत्म कहानी. जिन्दगी करवट लेती है।हम डोलते रहते है। कभी गिरते कभी संभलते है तजुरबा ले ना ले उम्र मे जरुर आगे बढते रहते है हर कोई मुझे जिन्दगी जीने का तरीका बताता है उन्हे कैसे समझाऊं की कुछ ख्वाब अधुरे है वरना जीना मुझे भी आता है घायल तो यहां हर एक परिंदा है पर जो फिर उड़ सका बस वही जिंदा है जिन्दगी को कांटने का नाम जिन्दगी नही जीने का नाम ज़िन्दगी है और जो जिन्दगी को जीता है वहीं जिन्दगी को पहचानता है जिन्दगी मे तो ऊतार चढ़ाव आते रहते है पर हमे हिम्मत नही हारनी चाहिए क्योकि ईश्वर ने ये जिन्दगी हमे एक ही बार दी है जीने के लिए हमे इसे व्यरथ नही जाने देना चाहिए चलो हंस कर जिए चलो खुलकर जिए फिर न आने वाली यह रात सुहानी यह दिन सुहाना कल जो बीत गया सो बीत गया क्यों करते हो आने वाले कल की चिंता आज और अभी जीओ दूसरा पल हो ना हो आओ ज़िन्दगी को गाते चले कुछ बातें मन की करते चले रीढ़ को मनाते चले आओ जीवन की कहानी प्यार से लिखते चले कुछ बोल मीठे बोलते चले कुछ रिश्ते न ए बनाते चले.

*****

कबूतरों द्वारा शिक्षा

रचनाकार- श्रीमती मेनका साहू, दुर्ग

जैसे कोई धातु जब तक पिघलाकर पानी न हो जाए, तब तक उसे कोई सांचा स्वीकार नहीं करता,... इसी प्रकार जब तक के अंदर शिष्य के अंदर वह सच्ची लगन व सच्ची सीखने की लालसा न हो तब तक वह शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकता. इस कहानी का यही सर है .

एक बार का जिक्र की एक बादशाह का लड़का पढ़ाई से जी चुराता था उसको कबूतर रखने का बहुत शौक था एक दिन वहां एक महात्मा आ गए. बादशाह ने कहा, महात्मा जी मेरा लड़का पढ़ाई से जी चुराता है. और कबूतर का शौक रखता है. इसको हिदायत करो कि यह कुछ पर लिख जाए. महात्मा ने बच्चों को बुलाकर पूछा तेरे पास कितने कबूतर है?

लड़के ने कहा, " जी 20"

महात्मा ने कहां की,, " नहीं 100 200 रख लो,. दोनों इनकी उड़ान देखेंगे." लड़के ने कहा, " जी बहुत अच्छा,,,." जब कबूतर आ गए तो महात्मा ने कहा, " यह तो बहुत सारे हो गए हैं, इन के नाम रखना चाहिए " फिर उनके परों पर लिखा, सा रे गा मा प निशा अ....., इत्यादि. इसी तरह पढ़ना लिखना सिखा दिया.

"बच्चों को जबरदस्ती किसी काम या पढ़ाई मे लगानी की जगह उनके मन की वृत्ति को अच्छी तरह समझ कर उसके अनुसार ही शिक्षा का प्रबंध करना चाहिए".

*****

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 नि		■	2 स		3 कें			■	■
	■	■		■		■	■	4 बो	5
6	7 म			8	■	9 भी	10		
■		■	■	11 च				■	
12 झो		13	■		■		■	14 का	
	■		■	15 र		■	16		■
■	17 ब		18		■	19 अ			20
21 स		■		■	■		■	■	
22		■		■	23 स			24	■
25		■	26 य			■	■	27	

बाएँ से दाएँ

1. शुद्ध 2. समय पूर्व, जल्दी 4. ठूंस 6. खोजने योग्य 9. डॉ. अम्बेडकर का प्रथम नाम 11. वधु पक्ष से बारात जाना 12. झरना 14. शरीर 15. रहेगा/ रहेगी 17. बाहरी 19. अतिरिक्त 21. सगा 22. केला 23. सीधा खड़ा लम्बा 25. लाया 26. एक नदी का नाम 27. पेंड़, वृक्ष

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

1 ब	र	म	2 सी	■	3 स	के	4 ल	■	5 ब
र	■	■	6 ध	स	क	■	न्द	■	नि
7 सा	8 ध	■	वा	■	9 ल	न्द	फं	धि	हा
10 ती	र	■	■	11 आं	क	■	द	■	र
■	12 सा	13 कु	र	■	र्मी	■	■	14 अ	■
■	■	ध	■	15 भाँ	■	16 क	री	ल	■
17 ना	ग	र	■	18 चा	19 त	र	■	20 म	21 ल
न	■	सि	■	■	त्पो	■	22 गो	ल	ई
23 कु	सि	या	24 र	■	25 र	26 व	ई	■	ह
27	■	■	28				■	29	

ऊपर से नीचे

1. अल्प 2. हराने योग्य 3. कोमल 4. डुबो, अन्न इत्यादि रखने का वस्तु 5. जाने वाला/वाली 7. मुर्गी इत्यादि का शिकारी जानवर 8. शर्मिला 10.प्रेम 12. रस, रसा, तरी 13. गाड़ेगा/गाड़ेगी 14. क्यों, किसलिये 17. फैलाया 18. किसी के घर/जगह से नहीं जाना 19. इंतजार करो 20. चिरौंजी वाला गुठली 21. बटोरो 23. हाथ या पैर मे जमा होना/ बिना धुला 24. वजन